

एस्ट्रोसेज पत्रिका



शनि का
स्वास्थ्य कनेक्शन



ग्रहों के फेर में
बैंक की नौकरी



मंगल का धनु
में गोचर



महाशिवरात्रि
का महत्व



बजरंगबली की
10 चमत्कारी बातें



करियर संवारने
वाली अनूठी रिपोर्ट

फरवरी, 2020 (वर्ष-1, अंक 5) बीता

- मासिक राशिफल • ध्रुव सॉफ्टवेयर • विवाह रेखा का महत्व • औषधि स्नान • फुलेरा दूज • वैलेंटाइन डे

एस्ट्रोसेज पत्रिका

फरवरी, 2020

वर्ष : 1 अंक : 5

प्रधान सम्पादक
पुनीत पाण्डे

सहायक सम्पादक - मृगांक शर्मा

सलाहकार सम्पादक - पीयूष पाण्डे

डिजाइनर - शान्तनु निगम
कोमल सक्सेना

संयोजक - विजय पाठक
रवि ठाकुर
लीशा चौहान

मार्केटिंग प्रमुख - हरीश नेगी
विशाल भारद्वाज

सम्पादक से पत्राचार हेतु पता:

सम्पादक, एस्ट्रोसेज पत्रिका

A -139, सैक्टर 63, नोएडा - 201307.(India)

Phone : +91 9560670006

Mail : info@astrosage.com

Website : www.astrosage.com

संपादकीय



मित्रों,

एस्ट्रोसेज ई-पत्रिका को बहुत सारा प्यार देने के लिए आपका आभार। ज्योतिष के क्षेत्र में एस्ट्रोसेज पत्रिका एक नया प्रयोग था और मुझे खुशी है कि हमारा यह प्रयोग सफल साबित होता दिख रहा है। ई पत्रिका का हर अंक पिछले अंक से अधिक डाउनलोड हो रहा है। पाठकों की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। कई पाठक अंग्रेजी में भी ई पत्रिका चाह रहे हैं। फिलहाल, हमारा ध्यान एस्ट्रोसेज पत्रिका के हिन्दी संस्करण को सफलता की नयी ऊँचाइयों पर ले जाने का है। इस कोशिश में आपका साथ आवश्यक है।

फरवरी अंक आपके हाथ में है। इस अंक में हमने इमरान खान की कुंडली का विश्लेषण किया है। महाशिवरात्रि पर विशेष सामग्री है। वैलेंटाइन्स डे पर युवाओं के लिए खास राशिफल है। इसके अलावा तमाम ज्योतिषीय आलेख हैं, जो ज्योतिष में रुचि रखने वाले पाठकों को निश्चित रूप से पसंद आएंगे।

हमे आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा। **हमारा ई-मेल पता है-**

magazine@ojassoft.com

आपका

पुनीत पाण्डे

(प्रधान सम्पादक)

ज्योतिषियों के काम की सबसे बड़ी बात



ध्रुव एस्ट्रो सॉफ्टवेयर

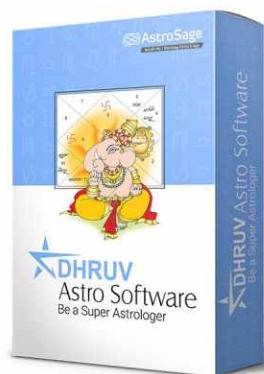
₹999/-

प्रति माह*

अभी सब्सक्राइब करें

इसमें आपको मिलेगा

- (1) 200 से अधिक पृष्ठों की विस्तृत रंगीन कुंडली
- (2) कुंडली के हर पृष्ठ पर आपका नाम और संपर्क पता
- (3) क्लाउड और डिवाइस पर सहेजें असीमित कुंडलियाँ
- (4) व्यक्तिगत नोट्स और टिप्पणियाँ लिखें



अभी ऑर्डर करें और पायें सभी झंझटों से मुक्ति !

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. इमरान के 'बुरे दिन'	01	20. अंक ज्योतिष से जानें लकी मोबाइल नंबर	56
2. क्या केजरीवाल फिर जीतेंगे दिल्ली का दिल	04	21. सपनों का अर्थ, स्वप्न विचार और स्वप्न फल	60
3. प्रेम और रोमांस रिपोर्ट	08	22. जानें शिव तांडव स्तोत्रम् के महत्व और उसके अर्थ के बारे में	64
4. मंगल का धनु राशि में गोचर	11		
5. कभी श्री राम के ससुराल घूम आइए	15	23. शनि का स्वस्थ्य कनेक्शन	69
6. विवाह रेखा का महत्व	17	23. ग्रहों के आइने में बैंक नौकरी	71
7. बजरंग बली की 10 चमत्कारी बातें	19	23. ज्योतिष सीखें भाग-५	77
8. फरवरी 2020 मासिक राशिफल	25		
9. तरक्की और समृद्धि के लिए वास्तु उपाय	28		
10. फुलेरा दूज का महत्व	30		
11. विभिन्न रोगों के ज्योतिषीय कारण और निवारण	32		
12. औषधीय स्नान से पाएँ ग्रहों का आशीर्वाद	34		
13. खतरनाक है चांडाल योग	37		
14. बड़े काम का ध्रुव एस्ट्रो सॉफ्टवेयर	38		
15. वैलेंटाइन्स डे को स्पेशल कैसे बनाएं	41		
16. फरवरी में किस चाल चलेगा शेयर बाजार	46		
17. फंसा हुआ धन प्राप्त करने के उपाय	47		
18. एक रिपोर्ट बच्चों का करियर संवार सकती है	50		
19. भोले की भक्ति का दिन महाशिवरात्रि	53		

2020 में क्या कहते हैं इमरान खान के सितारे



**पुनीत
पाण्डे**



पाकिस्तान की राजनीतिक पार्टी तहरीक-ए-इंसाफ को स्थापित करने वाले इमरान खान पाकिस्तान ही नहीं बल्कि दुनिया भर में एक जाना-माना नाम हैं। उन्होंने पाकिस्तान को क्रिकेट विश्व-कप जितवाकर एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया। 1992 में पाकिस्तान टीम ने जब विश्वकप जीता तब कोई भी पाकिस्तान को उस दौड़ में नहीं मानता था। यह इमरान खान का नेतृत्व ही है जिसने पाकिस्तान की सामान्य-सी टीम को बड़ी-बड़ी टीमों को परास्त करने का हैसला दिया और विश्व कप में जीत दिलाई।

पाकिस्तान क्रिकेट को ऊँचाईयों पर पहुँचाकर 1996 में इमरान खान ने तहरीक-ए-इंसाफ नाम की पार्टी का गठन किया। उनकी स्वयं की प्रसिद्धी के बावजूद शुरुवात में उन्हें कुछ खास सफलता नहीं मिली, लेकिन धीरे धीरे जनता में बढ़ती स्वीकार्यता की वजह से इमरान प्रधानमंत्री पद तक पहुँच गए। लेकिन आज कल इमरान चारों तरफ चुनौतियों से घिरे हुए हैं और यह देखना होगा कि आने वाला समय उनके लिए कैसा है। उससे पहले

आइये एक नज़र डालते हैं इमरान खान की कुण्डली पर -

जन्म कुण्डली



नवमांश कुण्डली



लग्न: 11-22-30

सूर्य: 10-59-51 चंद्र: 18-42-03

मंगल: 10-43-22

बुध: 22-48-09

गुरु: 21-57-08 शुक्र: 19-25-49

शनि: 01-22-49

राहु: 24-16-30

केतु: 24-16-30 अयग्नांश: रमन

अयग्न: 21-45-13

दशा भोग्य: राहु १ व ९ माह १ दिन

नक्षत्र-पद : शतभिषा - 4

कुण्डली पर नज़र डालने पर कई योग परिलक्षित होते हैं। साहस का कारक मंगल लग्नेश और ऊर्जा का कारक सूर्य लग्न में है जो इमरान खान को साहसी और ऊर्जावान व्यक्तित्व देते हैं। लग्नेश मंगल का उच्च होना और उपाच्य भाव में स्थित होना कुण्डली को बहुत ही शक्ति प्रदान करता है। मंगल और तृतीय भाव का खेल में सफलता के लिए विशेष महत्व है। उच्च के मंगल का राहु के साथ तृतीय भाव में होना एक महान खिलाड़ी की कुण्डली दिखाता है। साथ ही तृतीयेश या चतुर्थेश शनि का उच्च एवं वर्गोत्तम होना शक्तिशाली राजयोग का निर्माण करता है। बारहवें भाव में शनि शत्रुओं पर विजय दिलाता है। मंगल ने जहाँ उन्हें खिलाड़ी बनाया, वहाँ शनि ने उन्हें एक विजेता बनाया। मंगल ने जहाँ उन्हें खुद को हमेशा

प्रेरित रखने की सीख दी, वहीं शनि ने टीम को प्रेरित करना सिखाया।

सूर्य ग्रह मण्डल का राजा है और उसकी लग्न पर स्थिति ने ही उन्हें कप्तान बनाया और देश का प्रधान मंत्री भी। लग्नेश मंगल होने के कारण उन्होंने टीम को ऐसी लीडरशिप दी जो शायद ही पाकिस्तानी क्रिकेट के इतिहास में कोई दे पाया हो। इसमें कोई शक नहीं की इमरान पाकिस्तान क्रिकेट के सबसे सफल कप्तान हैं। मंगल सूर्य की इतनी शक्तिशाली स्थिति की वजह से ही वे पाकिस्तान की बिखरी हुई टीम को न सिर्फ एकजुट कर सके, परन्तु उन्हें विश्वविजेता बना सके।



सूर्य सरकार का भी कारक है। सूर्य का लग्न में होना उन्हें सरकार के करीब भी लाता है। कभी कभी यह स्थिति उन्हें थोड़ा घमण्ड भी देती है जो कि राजनीतिक सफलता के लिए अच्छा नहीं है। अन्यथा यह स्थिति बहुत ही उत्तम है। उनका चंद्र भी नवमेश होकर चतुर्थ में स्थित होकर पाराशरीय राजयोग का निर्माण कर रहा है। सूर्य और लग्न की उत्तम स्थिति उनके राजनीतिक जीवन की ओर संकेत देते हैं।

जैसा कि किसी भी कुण्डली में होता है, हर कुण्डली में कुछ न कुछ परेशानियां होती ही हैं। हर इंसान को ग्रहों के अच्छे और बुरे दोनों प्रभावों को जीना ही पड़ता है। उदाहरण के तौर पर विवाह का कारक शुक्र कुण्डली में विवाह के भाव का स्वामी भी है। ऐसा शुक्र न सिर्फ नीच नवांश का है बल्कि पाप ग्रहों के मध्य है यानि कि पापकर्तरी दोष से ग्रस्त है। साथ ही शुक्र पर शनि की दृष्टि भी है। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं की इमरान खान को अपने वैवाहिक जीवन में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा। शुक्र विदेश के बारहवें घर का स्वामी भी है और बारहवें घर में बैठे शनि से देखा जा रहा है। इसलिए इमरान का विवाह विजातीय और दूसरे देश की महिला से हुआ। शुक्र के कमज़ोर होने की वजह से दुर्भाग्यवश यह विवाह ज्यादा सफल न हो सका।

खैर, 2020 का समय पाकिस्तान की राजनीति और इमरान खान दोनों के लिए ही बहुत महत्वपूर्ण है। अपनी वर्तमान सरकार में पाकिस्तान ने अपने सबसे बुरे समय को देखा है। ज़रा देखेते हैं कि राजनीति के दृष्टिकोण से इमरान का समय कैसा चल रहा है।

1997 में इमरान की पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली। उस समय चर दशा के हिसाब से मेष राशि की दशा चल रही थी। मेष राशि छठवें भाव में पड़ी है और वहाँ गुरु स्थित है। गुरु शनि ओर मंगल दो पाप ग्रहों से दृष्ट होने की वजह से बहुत कमज़ोर है। कोई आश्चर्य नहीं की उनकी पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली। उस समय तुला की अन्तर्दशा भी चल रही थी जो कि बारहवें भाव में स्थित है।

2002 में दूसरे चुनाव में उन्हें काफी उम्मीदें थीं। लेकिन उस समय मीन राशि की दशा चल रही थी। मीन राशि में

ग्रह नहीं होने के कारण कमजोर है और साथ ही मीन राशि का स्वामी भी बहुत कमजोर है। 2002 में उनकी पार्टी ने सिर्फ एक सीट जीती वह भी उनकी स्वयं की।

2013 के चुनाव के वक्त उनकी कुंभ की दशा चल रही होगी। कुंभ राशि चतुर्थ भाव में स्थित है और चंद्र भी उस राशि में है। कुंभ का स्वामी शनि न सिर्फ उच्च है बल्कि वर्गोत्तम भी है। 2013 के चुनाव में इमरान की पार्टी देश की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनी।

2018 में उनकी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, उस वक्त उनकी धनु की चरदशा चल रही थी। धनु में एक शुभ ग्रह शुक्र स्थित है और दुसरे शुभ ग्रह गुरु से देखा जा रहा है। गुरु धनु का स्वामी होने की वजह से धनु की दशा कभी शक्तिशाली बन गयी। शुभ ग्रहों का प्रभाव उनको प्रधानमंत्री पद तक ले गया। इतनी शक्तिशाली कुण्डली इमरान खान और तहरीक-ए-इंसाफ़ की जीत की और साफ़ साफ़ इशारा कर रही थी। वर्गोत्तम शनि की वजह से उन्हें जनता का व्यापक समर्थन मिला। उच्च के मंगल की वजह से उनको पाकिस्तानी सेना का भी पूरा सहयोग प्राप्त हुए।

अब प्रश्न यह है कि आने वाला समय उनके लिए कैसा है। 2019 में उन्होंने आतंरिक और विदेश दोनों पक्षों में काफी परेशानी झेली है। पाकिस्तान के अर्थव्यवस्था इमरान के शासनकाल में सबसे निचले स्तर पर है, तो पाकिस्तान को FATF ने आतंकी देशों की ग्रे-लिस्ट में डाल रखा है। 2020 में इमरान वृषभ, मेष और मीन दशा में चलेंगे। वृषभ राशिचक्र की दूसरी राशि है जो की आर्थिक स्थिति भी बताती है। वृषभ का स्वामी अपने से अष्टम में स्थित है और पाप कर्तरी बना रहा है। इस दृष्टिकोण से इमरान और

पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था को कोई राहत फ़िलहाल मिलती नहीं दिखती। वृषभ राशि सप्तम में होने से भारत उन्हें किसी बड़ी परेशानी में फ़िर से डाल सकता है। वृषभ राशि सप्तम में होने से उनको पारिवारिक तौर पर भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यक्तिगत जीवन से जुड़े कुछ गड़े मुर्दे बाहर आ सकते हैं।



उसके बाद 2020 में अप्रैल से जुलाई के मध्य मेष की अन्तर्दशा चलेगी। मेष की दशा की हम ऊपर भी चर्चा कर चुके हैं। मेष इमरान के छठवें भाव में है जो की शत्रु का भाव मन गया है। छठवां भाव ज्योतिष में ऋण का भी मनाया गया है जो यह बताता है कि पड़ोसी देशों से सम्बन्ध के कारण इमरान को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसे सरल शब्दों में कहें तो भारत उनकी परेशानी बढ़ाएगी। अंतराष्ट्रीय मंचों पर इमरान को भारत के हाथों करारी मात देखनी पड़ सकती है। भीतरी शत्रु भी उन पर हावी रहेंगे। राहु युक्त मंगल की दृष्टि सेना से संघर्ष की और भी इशारा करता है। सेना का आशीर्वाद उनपर हटने से, यह वक्त उनके लिए सबसे कठिन समय रहेगा। उनको जबान पर नियंत्रण खोने से भी कुछ विशेष मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। कुल मिलाकर साल का पहला हिस्सा इमरान के लिए न सिर्फ परेशानी भरा रहने वाला है बल्कि उनके राजनीतिक समझ के अच्छी खासी परीक्षा लेने वाला है।

क्या केजरीवाल फिर जीतेंगे दिल्ली का दिल



एस्ट्रोगुरु
मृगांक



दिल्ली विधानसभा चुनावों का शंखनाद हो चुका है और यहाँ सभी पार्टियाँ ताल ठोक कर मैदान में खड़ी हैं और अपने अपने दावे को मजबूत बता रही हैं। ऐसे में दिल्ली के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल ने जनता को साधने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है। उन्होंने अपने गारंटी कार्ड के द्वारा अपनी तरफ से पूर्ण प्रयास किया है कि सारी जनता उनके पक्ष में वोट दे और वे दोबारा दिल्ली की राज गद्दी पर बैठें। इसी सन्दर्भ में हमने ज्योतिष के नज़रिए से यह जानने का प्रयास किया कि अरविंद केजरीवाल क्या दिल्ली का दिल दोबारा जीत पाने में कामयाब होंगे या स्थितियां कुछ अलग भी हो सकती हैं। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं:

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2020

देश की राजधानी दिल्ली में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है और 8 फरवरी को जनता अपने पसंद के उम्मीदवार को वोट देकर मजबूत बनाएगी तथा 11 फरवरी को जनादेश सबके सामने आएगा। ऐसे में यह

जानना काफी दिलचस्प रहेगा कि क्या दिल्ली के वर्तमान मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल दोबारा दिल्ली के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठेंगे या फिर कोई उलटफेर होने की संभावना है। कैसा रहेगा आम आदमी पार्टी का विधानसभा चुनाव में प्रदर्शन और क्या बीजेपी या कांग्रेस उन्हें पटखनी दे पाएगी या दूसरे और तीसरे नंबर से ही उन्हें संतोष करना पड़ेगा।

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2020 में सीटों का गणित

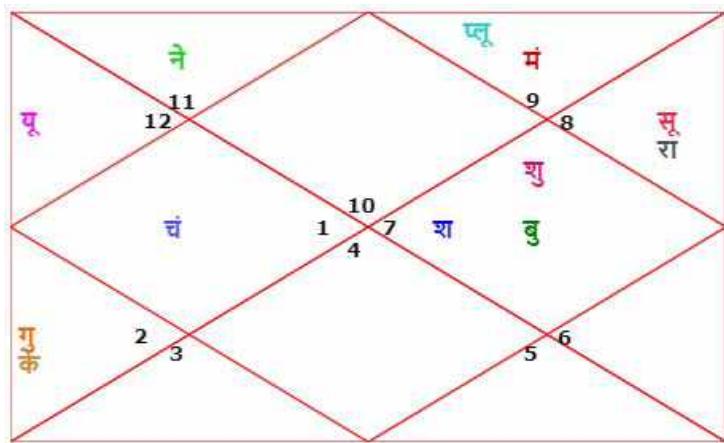
आपको बता दें कि दिल्ली विधानसभा में कुल 70 सीट हैं, जिन पर चुनाव होना है और बहुमत के लिए किसी भी पार्टी को कम से कम 36 सीटें जीत कर लाना आवश्यक है। यदि पिछले चुनावों की स्थिति का अवलोकन करें तो 70 में से 67 सीटों पर जीत दर्ज कर आम आदमी पार्टी अप्रत्याशित रूप से सत्ता में आई और उसे 54.3% वोट मिले। वहीं बीजेपी 3 सीटों और 32.3% वोटों के साथ दूसरे नंबर पर रही। जबकि पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत शीला दीक्षित के तीन बार जीतने का रिकॉर्ड बनाने के बाद भी कांग्रेस का उन चुनावों में खाता भी नहीं खुला और उसे कुल 9.7% वोटों से संतोष करना पड़ा। ऐसे में दिल्ली की सत्ता के किंग मेकर अरविंद केजरीवाल ही रहे, जिन्होंने पूरे पाँच वर्ष सरकार चलाने में कामयाबी हासिल की। आइए अब जानते हैं कि क्या हो सकता है 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में और कैसा रहेगा आम आदमी पार्टी और केजरीवाल का प्रदर्शन।

दिल्ली का किंग कौन?

इस संबंध में हमने कुछ विशेष कुंडलियों का अध्ययन किया है, जिन्हें आपके समक्ष रख रहे हैं। अरविंद केजरीवाल जी की कुंडली के अध्ययन से पूर्व उनके नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी की कुंडली पर एक नजर डालते हैं:-

आम आदमी पार्टी की कुंडली

आम आदमी पार्टी यानि कि “आप” की कुंडली मकर लग्न और मेष राशि की है। लग्न का स्वामी शनि अपनी उच्च राशि तुला में दशम भाव में शुक्र के साथ और बुध के साथ युति करते हुए प्रबल राजयोग का निर्माण कर रहा है। इस प्रकार इस कुंडली में शक्तिशाली पाराशारी राज योग बन रहा है।



आम आदमी पार्टी (26-11-2012, 11:0:0, दिल्ली)

आम आदमी पार्टी इस समय शुक्र की महादशा और राहु की अंतर्दशा के प्रभाव में है। शुक्र इन के लिए योग कारक की भूमिका निभाते हुए दशम भाव में शनि और बुध के साथ स्थित होकर राहु के नक्षत्र में विद्यमान है, जो कि एकादश भाव में सूर्य के साथ स्थित है और देव गुरु बृहस्पति की दृष्टि भी उस पर है।

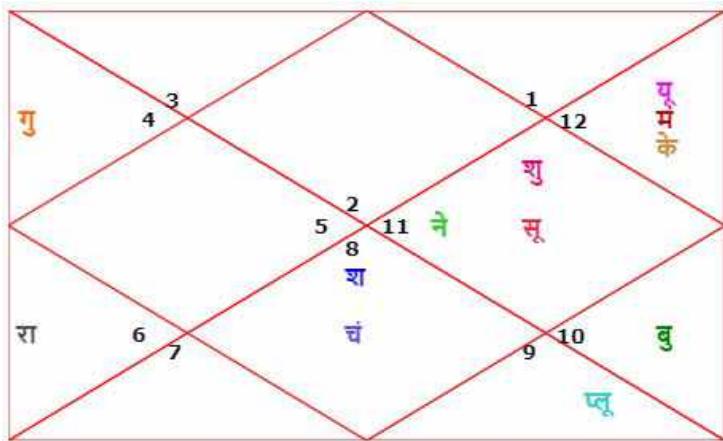
राहु बृहस्पति के नक्षत्र में वृश्चिक राशि में है और बृहस्पति से दृष्टि भी है। शुक्र की महादशा में ही आम आदमी पार्टी ने महिलाओं को लेकर विशेष घोषणाओं के द्वारा महिला मतदाताओं को रिझाने का प्रयास किया, जिसमें मुफ्त सफर भी शामिल है।

शुक्र में राहु का यह समय आम आदमी पार्टी के लिए दिल्ली विधानसभा चुनाव में अनुकूल समय बना रहा है और जिस समय में ये चुनाव होंगे और उनका नतीजा आएगा, केतु की प्रत्यंतर दशा चल रही होगी जो कि देव गुरु बृहस्पति के साथ शुक्र की राशि में विराजमान है और सूर्य से दृष्टि है तथा सूर्य के नक्षत्र में भी है।

ऐसे में कहा जा सकता है कि यह चुनाव आम आदमी पार्टी के लिए काफी कारगर और फ़ायदेमंद साबित हो सकते हैं। उनकी स्थिति मजबूत होने की पूरी संभावना बन रही है लेकिन इस कुंडली में गुरु और सूर्य दोनों ही राहु और केतु से पीड़ित हैं। इस वजह से पार्टी की कुछ बातें और कुछ क्रियाकलाप समाज विरोधी भी सिद्ध हो सकते हैं, जिसके लिए उन्हें खामियाजा भुगतना पड़ सकता है, इसलिए इन्हे इस दिशा में विशेष रूप से सावधान रहने की आवश्यकता होगी। कुछ अपने भी ऐन मौके पर साथ छोड़ सकते हैं।

अरविंद केजरीवाल के शपथ ग्रहण की कुंडली

साल 2015 में आम आदमी पार्टी ने दिल्ली विधानसभा चुनावों में अप्रत्याशित जीत दर्ज करते हुए 70 में से 67 सीटों पर कब्ज़ा किया था और अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री बने थे। ऐसे में उन्होंने 14 फरवरी 2015 को शपथ ग्रहण की। इस शपथ ग्रहण की कुंडली नीचे दी गई है:



शपथ ग्रहण कुंडली (14-2-2015, 12:15:0, नई दिल्ली)

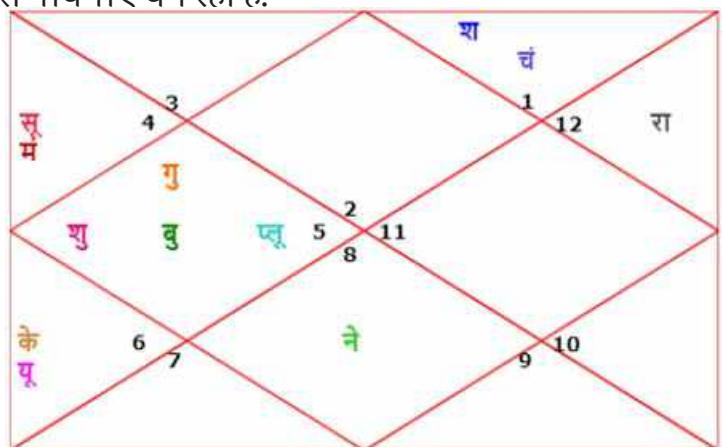
यह कुंडली वृषभ लग्न की है और लग्न का स्वामी शुक्र दशम भाव में दिगबली सूर्य के साथ मजबूत स्थिति में बैठा है। वहीं सप्तम भाव में दिगबली शनि चंद्रमा जोकि तृतीयेश है, के साथ बैठकर मजबूती दे रहा है। हालाँकि शनि और चंद्र की युति भी है। आम आदमी पार्टी की सरकार ने मंगल और केतु के ग्यारहवें भाव में स्थित होने के कारण कई विषम परिस्थितियों का भी सामना किया, जिनमें कई बार उसे भारी दबाव का सामना भी करना पड़ा, लेकिन फिर भी स्थिर लग्न के कारण और लग्नेश तथा सूर्य और शनि के प्रबल योग के कारण तथा देव गुरु बृहस्पति की कृपा से पार्टी को सरकार बनाए रखने में सफलता मिली।

दिगबली शनि ने जहां सरकार को आम आदमियों से जोड़ कर रखा, वहीं दशम स्थान के सूर्य और शुक्र के प्रभाव से महिलाओं को लेकर विशेष योजनाएं बनाई गईं और अस्पतालों पर भी विशेष ध्यान दिया गया। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि पंचम भाव का स्वामी बुध नवम भाव में है, जिस पर नवमेश शनि के साथ साथ देव गुरु बृहस्पति की दृष्टि भी पड़ रही है। इस वजह से शिक्षा और अस्पताल, ये दो मुख्य क्षेत्र ऐसे हैं जहां सरकार ने विशेष रूप से काम

किया है। वहीं शनि की विशेष कृपा दृष्टि के चलते सरकार ने आम आदमियों को अपना बनाने के कई मौके भुनाए हैं। नीच राशि का चंद्रमा शनि से पीड़ित होने और मंगल से दृष्ट होने के कारण जल संबंधित कामों के लिए सरकार को धेरा भी गया है।

अरविन्द के जरीवाल की कुंडली

आइए अब बात करते हैं दिल्ली के वर्तमान मुख्यमंत्री अरविंद के जरीवाल जी की और उनकी कुंडली से जानते हैं कि उनके लिए दिल्ली विधानसभा चुनाव में क्या संभावनाएं बन रही हैं:



अरविन्द के जरीवाल
(16-8-1968; 00:30; सिवानी)

दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के श्री अरविंद के जरीवाल की जन्म कुंडली वृषभ लग्न की है और लग्न का स्वामी शुक्र चतुर्थ स्थान में बृहस्पति और बुध के साथ विराजमान है।

वर्तमान में देव गुरु बृहस्पति की महादशा और शुक्र की अंतर्दशा इन पर अपना प्रभाव दिखा रही है। यहीं वजह है कि शिक्षा और स्वास्थ्य तथा महिलाओं पर तथा

दिल्ली का किंग कौन?

विद्यार्थियों के लिए इन्होंने आकर्षक योजनाएं बनाई हैं। जिस समय अवधि में दिल्ली में चुनाव होंगे और उनका नतीजा आएगा, उस दौरान शनि की प्रत्यंतर दशा अपना प्रभाव दिखा रही होगी। इनकी कुंडली में शनि नवम और दशम का स्वामी होकर प्रबल योगकारक बन रहा है और द्वादश स्थान में चंद्रमा के साथ बैठा है तथा उस पर देव गुरु बृहस्पति की नवम दृष्टि भी है, जिसकी वजह से उसका नीचत्व काफी हृदतक कम हो गया है।

शुक्र अपने ही नक्षत्र में होने से महिलाओं को दी गई विशेष सुविधाओं का लाभ इन विधानसभा चुनावों में इन्हें मिल सकता है। देव गुरु बृहस्पति अपने मित्र सूर्य की राशि में और शुक्र के ही नक्षत्र में विराजमान हैं, जिसकी वजह से इन्हें शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का अच्छा लाभ मिल सकता है।

शनि का गोचर इन की राशि से दशम स्थान और लग्न से नवम भाव में हो रहा है और यह इनके लिए बहुत फ़ायदेमंद साबित हो सकता है। इनकी कुछ गुप्त योजनाएं भी इस समय में इनके बहुत काम आने वाली हैं। हालांकि शुक्र

और गुरु का संयोग इन्हें कुछ स्थानों पर उलटफेर का शिकार भी बना सकता है, लेकिन कुछ जगह इनका प्रदर्शन पहले से भी बेहतर रहेगा।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए एक बात तो तय है कि इनका प्रदर्शन दिल्ली के इन चुनावों में भी काफी अच्छा रहने की संभावना है। ग्रहों का गोचर भी इनके पक्ष में संभावना बना रहा है लेकिन देव गुरु बृहस्पति इन के अष्टम भाव के स्वामी भी हैं जो कि अचानक से परिवर्तन देने में सक्षम हैं। ऐसे में इनकी अपनी ही पार्टी के कुछ लोग इनके विरुद्ध जा सकते हैं, जो इनके लिए काफी बड़ा सिरदर्द साबित हो सकता है। अगर सीटों की बात की जाए तो ऐसी संभावना है कि इनकी सीटों संख्या में पिछली बार के मुकाबले भारी कमी देखने को मिलेगी और दिल्ली विधानसभा की कुल 70 सीटों में से इन्हें लगभग 40 से 45 सीटें मिल सकती हैं और इनकी चिर प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी भी पिछले चुनाव के मुकाबले अच्छा प्रदर्शन करेगी और इन्हे पूरी टक्कर देगी। ऐसी संभावना है कि कुछ जोड़ तोड़ करके ये एक बार फिर से ये सरकार बनाने में ये कामयाब हो जाएं लेकिन रास्ता बहुत मुश्किल है।

एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन

देने के लिए सम्पर्क करें

9810881743, 9560670006

Lab Certified Gemstones
Genuine Gemstones at best price

'प्रेम और रोमांस रिपोर्ट' करेगी प्रेम से जुड़ी हर समस्या का समाधान



आयुषी
चतुर्वेदी



वैलेंटाइन का हफ्ता शुरू हो चुका है। इस मौके पर हम आपके लिए एक खास रिपोर्ट लेकर आये हैं, जिसमें आपको प्यार से जुड़े सभी सवालों के जवाब अवश्य मिल जायेंगे। प्यार हर इंसान के जीवन की जरूरत है। हर कोई चाहता है कि उसका कोई लवमेट हो जिससे अपने दिल की बातें साझा की जा सकें। हालांकि कई लोग ऐसे भी होते हैं, जिन्हें चाहकर भी अपना सच्चा प्यार नहीं मिल पाता। कई बार अपने प्यार का इज़हार ना कर पाना और कई बार इंकार का डर हमें प्यार की राह में आगे बढ़ने से रोक देता है, लेकिन सोचिये कितना अच्छा हो अगर हमें ये सब पहले से ही पता चल जाये कि हमें किस वक्त अपने प्यार का इज़हार करने पर मनचाहा जवाब मिल सकता है, या इस बात का जवाब की हमारी कुंडली के अनुसार हमें प्यार मिलेगा या नहीं, मिलेगा तो कब मिलेगा?

तो अगर आपके मन में भी इस तरह के सवाल चल रहे हैं और आपको भी इनका जवाब चाहिए तो एस्ट्रोसेज आपकी इस समस्या का हल लेकर आया है। इस हल का

नाम है वैलेंटाइन प्रेम और रोमांस रिपोर्ट। वैलेंटाइन प्रेम और रोमांस रिपोर्ट के जरिए आपको अपने प्रेम से जुड़े सवालों के जवाब जानने के लिए सिर्फ अपना नाम, जन्म-तिथि, जन्म स्थान, और जन्म के समय जैसे विवरण देने की ज़रूरत है।

अब आइये आपको बता देते हैं कि आखिर प्रेम और रोमांस रिपोर्ट में आपको किस-किस बात की जानकारी मिल सकती है।

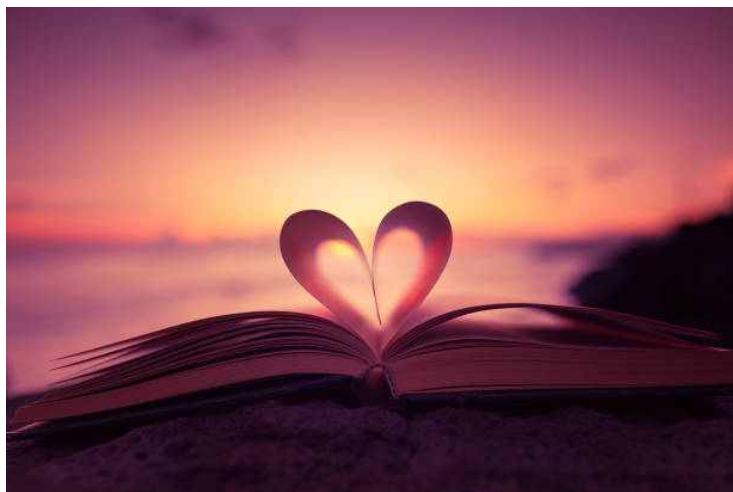
वैलेंटाइन हफ्ते के दौरान प्रेम प्रस्ताव के लिए उपयुक्त दिन और मुहूर्त

- वैलेंटाइन हफ्ते और वैलेंटाइन वर्ष की भविष्यवाणी
- शुक्रगोचर का आपके प्रेम जीवन पर असर
- आपकी कुंडली में प्रेम व विवाह भाव का विश्लेषण
- वैदिक ज्योतिष, अंक ज्योतिष और लाल किताब के माध्यम से प्रेमजीवन का विश्लेषण
- प्रेम जीवन को सफल बनाने के लिए कुछ ज्योतिषीय उपाय

जैसा कि हमने शुरूआत में ही कहा कि प्यार का महीना शुरू हो चुका है, ऐसे में वैलेंटाइन प्रेम और रोमांस रिपोर्ट में भला वैलेंटाइन डे का ही जिक्र ना हो ये तो हो ही नहीं सकता, इस रिपोर्ट में एक बेहद ही स्थास फीचर हम आपके लिए ये लेकर आये हैं,

जिसमें आपको ये बताया जायेगा कि प्यार के हफ्ते के किस दिन, किस समय अपने पार्टनर को प्रोपोज़ करना आपके लिए शुभ रहेगा। इसके अलावा रोज डे लेकर वैलेंटाइन डे तक हर दिन क्या खास सावधानी बरतना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

शुक्र की स्थिति का आपके प्रेम जीवन पर असर : जैसा की ये बात सभी जानते हैं कि शुक्र प्रेम का कारक ग्रह माना जाता है, इसलिये आपका प्रेम जीवन कैसा रहेगा इसके लिये कुंडली में शुक्र की स्थिति को जानना बहुत जरुरी है। हमारी इस खास वैलेंटाइन प्रेम और रोमांस रिपोर्ट में आपकी कुंडली में मौजूद शुक्र की स्थिति के अनुसार ये रिपोर्ट प्रेम भविष्यवाणी करती है।



इस रिपोर्ट में आपको इस बात की भी जानकारी मिलेगी कि वैलेंटाइन का ये हफ्ता आपके लिए कैसा जाने वाला है? प्रेम और रोमांस रिपोर्ट में आपको इस वर्ष के वैलेंटाइन डे से लेकर वर्ष 2021 के वैलेंटाइन डे की भविष्यवाणी भी दी जा रही है। इस रिपोर्ट में आपके और आपके पार्टनर के बीच सामंजस्य समेत कई मापदंडों पर प्रेम प्रतिशत की भी जानकारी मिलती है।

आपकी कुंडली में प्रेम भाव : हमारी कुंडली का पांचवा भाव प्रेम का भाव कहलाता है। हमारी इस खास रिपोर्ट में आपको इस बात की भी जानकारी दी जाती है कि कहीं आपके पांचवें भाव में कोई ऐसा ग्रह तो नहीं बैठा है जो आपके जीवन में प्रेम के रास्ते में बाधा बन रहा है।

आपकी कुंडली में विवाह भाव : प्यार की बात हो रही है तो जायज़ है बात शादी की भी ज़रूर होगी। ऐसे में एस्ट्रोसेज की इस खास प्रेम और रोमांस रिपोर्ट में आपको इस बात की जानकारी भी मिलती है कि आपकी कुंडली में विवाह का योग है भी या नहीं? और है तो कहीं उसमें कोई बाधा तो नहीं आएगी?

आपका व्यक्तित्व : इस खास रिपोर्ट में आपको आपके व्यक्तित्व के बारे में जानकारी मिलेगी। प्यार को लेकर आपका रवैया कैसा रहने वाला है। आपको किस उम्र में प्यार मिलेगा, इस बात की जानकारी इस रिपोर्ट में मिलेगी।

आपकी चंद्र राशि अनुसार आपके गुण और दोष : हर इंसान की एक चंद्र-राशि होती है जो उस इंसान के गुण-दोष इत्यादि के बारे में पता चलता है। इस प्रेम और रोमांस रिपोर्ट के द्वारा आप ये भी जान सकते हैं कि आपके कौन से गुण और कौन से दोष आपके प्रेम के रास्ते में आ रहे हैं और फिर उचित कदम उठाकर अपने प्यार की राह सुगम बना सकते हैं।

3 फरवरी को शुक्र का गोचर हुआ है और ये बात तो सभी को पता है कि शुक्र गोचर का प्रेम जीवन पर सीधा असर पड़ता है। ऐसे में ये गोचर आपके प्रेम जीवन पर कैसा असर डालेगा इस बात की भी जानकारी आपको इस

प्रेम और रोमांस रिपोर्ट

रिपोर्ट में मिल रही है।

आपके जीवनसाथी का व्यक्तित्व : सभी के मन में अपने जीवनसाथी को लेकर कई तरह के सवाल होते हैं कि आखिर वो कैसा होगा? वो हमारे प्यार के लायक होगा भी की नहीं, इत्यादि। इसलिए आपकी इसी दुविधा को समझते हुए एस्ट्रोसेज की इस खास रिपोर्ट में आपको इस सवाल का जवाब भी बेहद ही आसानी से मिल जाता है।

इसके अलावा आपको इस रिपोर्ट में कुछ और बेहद ही खास बातों की जानकारी प्रदान की जा रही है, जैसे, आपके प्रेम जीवन का अंक ज्योतिषीय आकलन, जिसमें अंक ज्योतिष के अनुसार आपके प्रेम जीवन की भविष्यवाणी मौजूद है, आपके प्रेम जीवन के लिये अनुकूल और प्रतिकूल बिंदु।

...और अंत में इस रिपोर्ट में हम आपकी कुंडली के सभी पहलुओं पर गौर करने के बाद आपको उन सुझावों के बारे

में भी जानकारी दे रहे हैं जिन्हें अपनाकर आप अपने प्रेम जीवन को और बेहतर और खूबसूरत बना सकते हैं। तो देर किस बात की है, महज कुछ जानकारियाँ देकर आप भी अभी प्राप्त करें अपनी प्रेम और रोमांस रिपोर्ट और अपने वैलेंटाइन डे को खूबसूरत और यादगार बनाएं।

प्रेम और रोमांस रिपोर्ट से संतुष्ट सोनाली कहती है कि, “अबतक मैं ज्योतिष शब्द सुनती थी तो मुझे लगता था कि ये बड़ा जटिल क्षेत्र है जिसमें हमें हमारे भविष्य के बारे में जानकारी मिलती है, लेकिन जब मैंने प्रेम और रोमांस रिपोर्ट के बारे में सुना और उसका इस्तेमाल किया तो अपने प्रेम जीवन को लेकर मुझे कई ऐसी बातें पता चली जिनसे मैं अबतक अनजान थी। इस रिपोर्ट के लिए मैं एस्ट्रोसेज का तहे-दिल से शुक्रिया करती हूँ।”

आप निम्नलिखित लिंक पर आकर लव रिपोर्ट खरीद सकते हैं। यहाँ [क्लिक करें](#)



AstroSage
World's No. 1 Astrology Portal & App



प्रेम और रोमांस रिपोर्ट

प्रेम के इम्तिहान में पास या फेल ?

50% OFF [अभी खरीदें >](#)



मंगल का धनु राशि में गोचर (8 फ़रवरी, 2020)

मंगल का धनु राशि में गोचर



मंगल ग्रह को नव ग्रहों में विशेष दर्जा प्राप्त है क्योंकि इसे नव ग्रह मंडल में सेनापति का पद दिया गया है, इसके पीछे मुख्य वजह यही है कि मंगल एक अत्यंत शक्तिशाली और ऊर्जा प्रदान करने वाला ग्रह है। मंगल की ऊर्जा से ही हम अपने जीवन को गति देते हैं और हमारे लिए अच्छा मंगल हमें सभी प्रकार की चुनौतियों से लड़ने में मदद देता है, जिससे हम जीवन में सफलता अर्जित करते हैं।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह की विशेष स्थितियाँ मांगलिक दोष बनाती हैं, जो विवाह के लिए अनुकूल नहीं माना जाता है, लेकिन यही मंगल योगकारक होने पर व्यक्ति को शीघ्र ही प्रभावशाली और लक्ष्मीवान बना देता है। कुंडली में मंगल की उत्तम स्थिति व्यक्ति को कार्यक्षेत्र में सिरमौर बनाती है और व्यक्ति अपने काम में काफी ऊँचाइयां प्राप्त करता है। मंगल की कृपा से ही व्यक्ति के अंदर नेतृत्व शक्ति का विकास होता है।

हिंदू पंचांग के अनुसार मंगल ग्रह को दक्षिण दिशा का स्वामी भी माना गया है। यह एक अग्नि तत्व प्रधान लाल ग्रह है तथा मेष और वृश्चिक मंगल की स्वामित्व वाली राशियां हैं। कुंडली में मंगल की अच्छी स्थिति व्यक्ति को

उत्तम स्वास्थ्य, गठीला बदन, आत्मविश्वास और चुनौतियों से लड़ने वाला बनाती है। ऐसा व्यक्ति कितनी ही बुरी स्थिति हो, हार नहीं मानता। शरीर में रक्त और रक्तचाप पर भी मंगल का नियंत्रण होता है।

गोचर काल का समय

सभी लोगों की जीवन ऊर्जा प्रदान करने वाला मंगल ग्रह 8 फरवरी, शनिवार को प्रातः 02:45 बजे (7 फरवरी की मध्यरात्रि के बाद) धनु राशि में प्रवेश करेगा। यह मंगल के मित्र बृहस्पति की राशि है और अग्नि तत्व की राशि है। इस प्रकार एक अग्नि तत्व प्रधान ग्रह का प्रवेश अग्नि तत्व प्रधान राशि में होगा। तो आइये जानते हैं कि मंगल के धनु राशि में गोचर का सभी राशि के जातकों पर किस प्रकार का असर पड़ने वाला है:

मेष राशि

मंगल आपकी राशि का स्वामी होने के साथ-साथ आपकी कुंडली में अष्टम भाव का स्वामी भी है और अपने इस गोचर की अवधि में वह आपके नवम भाव में प्रवेश करेगा। इस गोचर के परिणाम स्वरूप आपको

मिले जुले परिणाम हासिल होंगे। जहां एक ओर आप अपने आत्मविश्वास के कारण कई योजनाओं को सफलता का अमलीजामा पहनाने में सफल रहेंगे और उनसे आपको अच्छा आर्थिक लाभ भी होगा, वहीं आपके पिताजी के लिए यह गोचर अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। उनका स्वास्थ्य इस दौरान खराब हो सकता है, इसलिए आप को उन पर विशेष ध्यान देना होगा।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मेष राशि



मिथुन राशि

मंगल देव का गोचर आपकी राशि से सातवें भाव में होगा। यह आपकी राशि के लिए छठे और ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं। इनके गोचर के प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त होगी और आप कुछ नई योजनाओं पर भी काम करेंगे, जो भविष्य में आपके मार्ग को बेहतर बनाने का प्रयास करेंगी। आपकी आमदनी में बढ़ोतारी होने की पूरी संभावना रहेगी। वहीं दूसरी ओर, जो लोग नौकरी करते हैं, उन्हें इस दौरान अच्छे नतीजे मिलेंगे और पदोन्नति के योग भी बनेंगे। इसके विपरीत, आपके दांपत्य जीवन के लिए यह गोचर अनुकूल नहीं कहा जा सकता क्योंकि सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से जीवन साथी के व्यवहार में बदलाव...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मिथुन राशि

वृषभ राशि

वृषभ राशि के जातकों के लिए मंगल देव आपके सातवें और बारहवें भाव के स्वामी होकर आपके अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। इस प्रकार गोचर का यह प्रभाव आपके स्वास्थ्य के लिहाज से अधिक अनुकूल नहीं कहा जा सकता और आपको अपने शरीर पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा। उच्च रक्तचाप या अनियमित रक्तचाप, चोट लगना, दुर्घटना या किसी प्रकार का ऑपरेशन इस समय में हो सकता है, इसलिए विशेष ध्यान दें। वाहन चलाते समय भी सावधानी बरतें। इस दौरान आपको धन हानि होने की भी संभावना बन सकती है। हालांकि कुछ लोगों को अवांछित तरीकों से धन लाभ भी होगा। इस दौरान कुछ अनचाही यात्राओं पर जाने के योग बनेंगे, जिनसे आपको बचना चाहिए, क्योंकि...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - वृषभ राशि

कर्क राशि

आपकी राशि के लिए मंगल केंद्र और त्रिकोण भाव अर्थात् दसवें भाव और पाँचवें भाव का स्वामी है, इसलिए योगकारक की भूमिका निभाता है और अपने गोचर के इस काल में आपके छठे भाव में प्रवेश करेगा, जिसकी वजह से आपको अपने पुराने किसी क्रण या लोन को चुकाने में सफलता मिलेगी और आप राहत की सांस लेंगे। खर्चों में हल्की-फुल्की बढ़ोतारी होगी, लेकिन वे आवश्यक भी होंगे, इसलिए आपको कोई बोझ महसूस नहीं होगा। आप अपने विरोधियों पर भारी पड़ेंगे और वे चाह कर भी आपके सामने सर नहीं उठा पाएंगे। नौकरी में आपको जबरदस्त नतीजे मिलेंगे। आपके हक में फैसले आएंगे। कोर्ट कचहरी के मामलों में भी आपको सफलता मिलेगी और...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कर्क राशि

सिंह राशि

आपकी राशि के लिए मंगल देव का गोचर आपके पांचवें भाव में होगा। मंगल आप के चौथे भाव और नवें भाव अर्थात् केंद्र और त्रिकोण भाव के स्वामी होकर योगकारक ग्रह हैं। उनका यह गोचर आप के लिए काफी

अनुकूल रहने वाला है। इस दौरान कार्यक्षेत्र में बदलाव आ सकता है। जिस नौकरी को बदलने की कोशिश करें थे, उसे बदलने में सफलता मिलेगी और नई नौकरी बेहतर लाभ के साथ आपको मिलेगी। यदि आप व्यापार करते हैं तो उसमें भी आप को समुचित लाभ की प्राप्ति होगी। यदि आप शादीशुदा हैं तो आपको संतान को लेकर कुछ समस्याएं हो सकती हैं। संतान का स्वास्थ्य कमज़ोर रहेगा।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [सिंह राशि](#)



तुला राशि

आपकी राशि के लिए मंगल देव दूसरे और सातवें भाव के स्वामी हो कर मारक ग्रह भी कहलाते हैं और अपने गोचर की इस अवधि में वे आप के तीसरे भाव में प्रवेश करेंगे। आम तौर पर तीसरे भाव में मंगल का गोचर अनुकूल परिणाम देने वाला माना जाता है। इस गोचर के प्रभाव से आपके साहस और पराक्रम में बढ़ोत्तरी होगी और चुनौतियों को स्वीकार करके उनका सामना करने की प्रवृत्ति आप में जागेगी, जिससे आपको सफलता मिलेगी। आप अपने निजी प्रयासों से जीवन में सफलता की सीढ़ियां चढ़ेंगे, जिससे आपका मान-सम्मान भी बढ़ेगा और आपको कार्यक्षेत्र में भी बेहतर नतीजे प्राप्त होंगे।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [तुला राशि](#)

कन्या राशि

कन्या राशि के लोगों के लिए मंगल तीसरे और आठवें भाव का स्वामी होता है और धनु राशि में गोचर के चलते आपके चौथे भाव में प्रवेश करेगा। इस गोचर के परिणाम स्वरूप आपके परिवार में माहौल बदलेगा और लोगों के बीच तालमेल का अभाव देखने को मिल सकता है। आपके माता-पिता का स्वास्थ्य भी पीड़ित हो सकता है, जिसकी वजह से आपको थोड़ी चिंताएं होंगी, लेकिन कार्य क्षेत्र के अनुकूल परिणाम मिलने से मन प्रफुल्लित भी होगा। आप अपने काम को काफी ईमानदारी से करेंगे और जल्दी काम निपटा लेंगे, जिससे आपकी कार्यकुशलता दिखाई देगी। आप के वरिष्ठ अधिकारियों से भी आपके संबंध अच्छे बनेंगे।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [कन्या राशि](#)



वृश्चिक राशि

मंगल ग्रह आपकी राशि का स्वामी होने के साथ-साथ आप के छठे भाव का स्वामी भी है और अपने गोचर की इस अवधि में वह आपके दूसरे भाव में प्रवेश करने वाला है। इस गोचर के प्रभाव से आपकी वाणी में बदलाव आएगा। आप कुछ कटु वचन भी बोल सकते हैं, जिसका असर आपके संबंधों पर पड़ सकता है। परिवार के लोगों में आपका सम्मान कम हो सकता है और आपके अपने आप के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं, इसलिए इससे बचने का आपको प्रयास करना चाहिए। हालांकि धन के मामले में यह समय अनुकूल रहेगा। वाद विवाद में आपको सफलता मिलेगी और आर्थिक तौर पर लाभ भी होगा। आप अपने कुटुंब के लोगों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [वृश्चिक राशि](#)

धनु राशि

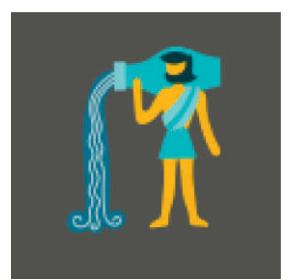
आपकी राशि के लिए मंगल ग्रह पांचवे भाव तथा बारहवें भाव का स्वामी है और अपने गोचर की स्थिति में आपकी ही राशि में प्रवेश करेगा, जिसकी वजह से इस गोचर का सर्वाधिक प्रभाव आप पर पड़ेगा। इस गोचर के प्रभाव से आपकी पर्सनैलिटी में बदलाव आएँगे। आप अधिक आत्मविश्वास से अपने कामों को संपादित करेंगे, जिसकी वजह से आपको जबरदस्त सफलता मिलेगी, लेकिन आप अति आत्मविश्वास का शिकार भी हो सकते हैं। आपके स्वभाव में कड़वापन और गुस्सा बढ़ सकता है, जिसका असर आपके काम के साथ-साथ आपके दांपत्य जीवन पर भी पड़ सकता है।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - धनु राशि



कुंभ राशि

आपकी राशि के लिए मंगल देव आपके तीसरे और दसवें भाव के स्वामी हैं और अपने धनु राशि में प्रवास के दौरान वह आपके ग्यारहवें भाव में प्रवेश करेंगे। चूंकि ये आपके कर्म भाव के स्वामी भी हैं, इसलिए यह गोचर आपके लिए काफी महत्वपूर्ण फल लेकर आ रहा है। एकादश भाव में मंगल की स्थिति को काफी श्रेष्ठ माना जाता है, जिसकी वजह से आपको कार्यों में सफलता मिलेगी। सरकार और राज्य पक्ष से अच्छे संबंध बनेंगे, जिससे आपके संपर्कों में बढ़ोतरी होगी और आपको अच्छा धन लाभ मिलेगा। आपके मान सम्मान में बढ़ोतरी होगी। रसूखदार लोगों से मेल मुलाकात संभव होगी।

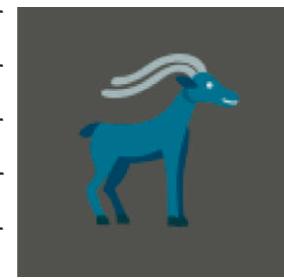


विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कुंभ राशि

मकर राशि

आपकी राशि के लिए मंगल चौथे भाव के साथ-साथ ग्यारहवें भाव का स्वामी भी है और आपकी राशि के लिए बाधक भी बनता है। अपने गोचर की इस अवधि में वह आपके बारहवें भाव में प्रवेश करेगा। इस गोचर के परिणाम स्वरूप आपके खर्चों में अचानक से बढ़ोतरी होने की संभावना बनेगी। इतना ही नहीं, परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसकी वजह से भी आपको धन खर्च करना पड़ सकता है। इस मंगल की स्थिति से आपके भाई बहनों को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और उन्हें आपके साथ की आवश्यकता होगी। हालांकि आप अपने कोर्ट कचहरी के मामलों में सफलता अर्जित करेंगे, लेकिन उस पर भी आपको धन बहाना पड़ेगा।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मकर राशि



मीन राशि

आपकी राशि के लिए मंगल दूसरे और नवें भाव का स्वामी है और अपने गोचर की इस अवधि में वह आपके दसवें भाव में गोचर करेंगे। इस गोचर का जबरदस्त लाभ आपको मिलेगा और कुछ लोगों को स्थानांतरण भी मिलेगा। इस स्थानांतरण के बाद जिस नई जगह पर आप जायेंगे, वह काफी उर्वरक और लाभदायक साबित होगी। इस दौरान आपको पदोन्नति और तनाख्वाह में वृद्धि की सौगत मिल सकती है। आप के अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी, जिससे आपकी छवि भी मजबूत होगी। हालांकि इस दौरान आपको अपने कार्यक्षेत्र में किसी भी प्रकार के अति आत्मविश्वास और कंट्रोवर्सी का हिस्सा बनने से बचना होगा। इसके विपरीत, आपके पारिवारिक जीवन में तनावपूर्ण स्थितियां बनेंगी।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मीन राशि

कभी श्री राम के ससुराल धूम आइए



लीशा
चौहान



जनकपुर माता सीता का जन्म स्थान है। जनक की पुत्री देवी सीता का विवाह भगवान राम के साथ इसी शहर में हुआ था। राम-जानकी का विवाह मार्गशीर्ष माह के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि के दिन हुआ था। इस दिन को श्रीराम पंचमी के दिन के रूप में मनाया जाता है। वहीं अयोध्या में भगवान राम और माता सीता के विवाह का त्योहार धूम-धाम से मनाया जाता है। भगवान राम और माता सीता का विवाह जनकपुर में हुआ था। वर्तमान में यह नेपाल में स्थित है। यहां सभी हर साल भगवान राम-जानकी के विवाह का उत्सव धूम-धाम से मनाते हैं। यहां भारत और नेपाल के अलावा अन्य देशों से भी लोग दर्शन के लिए आते हैं। हर साल भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या से बारात जनकपुर के लिए खाना होती है। तो आइए जानते हैं माता सीता की जन्मभूमि और भगवान राम के ससुराल जनकपुर और आस-पास के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों के बारें में।

जानकी मंदिर-राम-सीता का विवाह स्थल
पौराणिक कहानियों के अनुसार जनकपुरी में राम-सीता

का विवाह हुआ था। जिसे बाद में जानकी मंदिर बना दिया गया। जानकी मंदिर देवी सीता को समर्पित है। इस मंदिर को जनकपुरधाम के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर को मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ की रानी ने 1911 में बनवाया था। इसे बनने में करीब 16 साल का समय लगा था। कहते हैं कि विवाह से पहले माता सीता इसी जगह रहा करती थीं।

राम मंदिर-1700 साल पुराना है यह मंदिर

राम मंदिर को 1700 साल पहले गोरखा जनरल अमर सिंह ने बनवाया था। अन्य मंदिरों की तरह इस मंदिर को भी पैगोड़ा शैली में बनाया गया है। यहां राम नवमी और दशहरे पर भारी संख्या में भक्तों की भीड़ होती है। राम मंदिर यहां के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है।

राम सीता विवाह मंडप

इसी स्थान पर भगवान राम और माता सीता का विवाह संपन्न हुआ था। इस मंडप में माता सीता की शादी के पारंपरिक तरीके को देखा जा सकता है। विवाह पंचमी तिथि के दिन हुआ था। यहां बने मंदिर में हजारों भक्त आकर माता सीता से आर्शीवाद लेते हैं। यह मंडप प्राचीन काल की वास्तु कला का बेहतरीन नमूना पेश करता है।



दोलखा भीमसेन मंदिर- बिना छत का मंदिर
 भीमसेन मंदिर भीमेश्वर के दोलखा बाजार में स्थित है। यह मंदिर मुख्य शहर जनकपुर से करीब 107 किमी की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर में मुख्य प्रतिमा भीम की है। पांडवों के पांच भाइयों में से भीम युधिष्ठिर से छोटे दूसरे नंबर के पांडव थे। मंदिर की खास बात है कि इस पर छत नहीं है। भीम की मूर्ति त्रिकोण आकार में है और यह पत्थर से बना है। मंदिर में तीन अलग-अलग देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं। यहां भीम के अलावा मां भागवती और भगवान शिव की प्रतिमा है।

धनुषा धाम-तीन टुकड़ों में बंट गया था भोलेनाथ का धनुष

धनुषा नेपाल का एक प्रमुख जिला है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान राम ने भोलेनाथ के धनुष

की डोरी खीचीं तो वह तीन टुकड़ों में बंट गया। धनुष का एक हिस्सा उड़कर स्वर्ग पहुंचा तो दूसरी हिस्सा पाताल में जा गिरा। जिसके ठीक ऊपर धनुष सागर है। बता दें धनुष सागर जनकपुर से 40 किमी की दूरी पर स्थित है। वहीं धनुष का तीसरा हिस्सा जनकपुर के पास जा गिरा। जिसे हम धनुषा धाम के नाम से जानते हैं।

रन्ना सागर मंदिर-भगवान राम और सीता को समर्पित

भगवान राम और माता सीता को समर्पित है यह मंदिर। प्राचीन स्थल लुम्बिनी में स्थित है यह विशाल मंदिर। इस मंदिर का नाम रन्ना सागर रखा गया है क्योंकि यह चारों ओर से खूबसूरत बगीचे और एक पवित्र जलस्रोत रन्ना सागर से घिरा हुआ है। लुम्बिनी असल में गौतम बुद्ध का जन्म स्थल है। यह स्थान बौद्ध धर्म का प्रमुख धार्मिक स्थल



AstroSage
World's No. 1 Astrology Portal & App

ज्योतिषी से प्रश्न पूछें

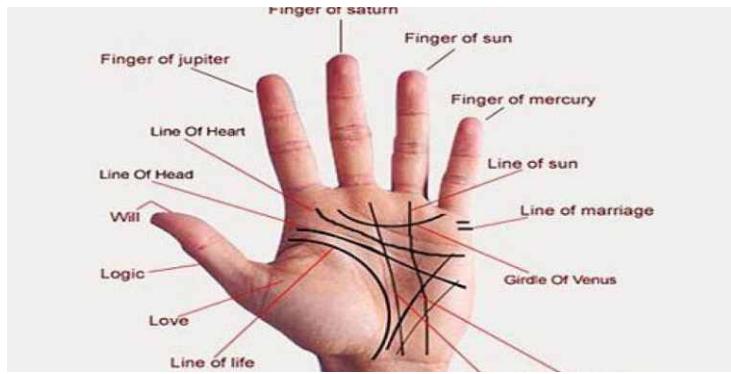
- के.पी. सिस्टम
- नाड़ी ज्योतिष
- लाल किताब
- ताजिक ज्योतिष

अभी खरीदें »

संपर्क करें

+91-7827224358, Email:- sales@ojassoft.com
 +91-9354263856 www.astrosage.com

विवाह रेखा का महत्व



हाथ में विवाह रेखा हमारे वैवाहिक जीवन को दर्शाती है। यह सही है कि जोड़ियां आसमान में बनती हैं लेकिन यह सपना नीचे धरती पर साकार होता है। विवाह एक पवित्र बंधन है, जो दो लोगों के बीच आपसी लगाव और स्नेह को दर्शाता है। हस्त रेखा शास्त्र में विवाह रेखा का बड़ा महत्व है, क्योंकि हर व्यक्ति अपनी शादी और भावी जीवन साथी के बारे में जानने की जिज्ञासा रखता है।

हथेली पर उभरी विवाह रेखा में कई राज़ छुपे होते हैं। मसलन आपकी शादी कब होगी, लव मैरिज होगी या अरेंज मैरिज होगी, क्या आपकी किस्मत में दो शादियों का योग है? ये सभी ऐसी बातें हैं जो युवाओं की उत्सुकता को बढ़ाती है।

हाथ में विवाह रेखा कहां होती है?

इतना सब जानने के बाद अब सवाल उठता है कि हाथ में विवाह रेखा कहां होती है? दरअसल कनिष्ठिका उंगली के नीचे, हृदय रेखा के ऊपर तथा बुध पर्वत पर हथेली के बाहरी ओर से आने वाली रेखा को विवाह रेखा कहते हैं।

कैसे जानें किस उम्र में होगी शादी?

छोटी उंगली की रेखा और हृदय रेखा के बीच की दूरी की गणना करके, इस बात का पता लगाया जा सकता है कि व्यक्ति की शादी किस उम्र में होगी? इन दोनों रेखाओं के बीच की दूरी लगभग 50 वर्ष तक का बोध कराती है।

- यदि विवाह रेखा इस दूरी के मध्य में हो, तो इसका मतलब है कि आपकी शादी 25 वर्ष की आयु के आसपास होगी और यदि विवाह रेखा, हृदय रेखा के पास हो, तो आपकी शादी 25 वर्ष से पहले भी हो सकती है अतः ऐसी स्थिति में कम उम्र में विवाह के योग बनते हैं।

हस्त रेखा में सफल वैवाहिक जीवन के संकेत

- एक स्पष्ट विवाह रेखा जिसमें कोई टूट-फूट ना हो या कोई द्वीप उपस्थित हो, इसका मतलब है कि आपका वैवाहिक जीवन बहुत ही अच्छा रहने वाला है।
- यदि विवाह रेखा के आसपास कुछ छोटी रेखाएं हैं तो यह वैवाहिक जीवन में प्यार और रोमांस को दर्शाती है।
- यदि विवाह रेखा से फूटकर दो रेखाएं बनती हैं, तो यह विवाह में देरी या वैवाहिक जीवन में निराशा को दर्शाती है।
- यदि विवाह अंत में जाकर फूटती है और दो रेखाएं बनती हैं तो यह वैवाहिक जीवन में अलगाव को प्रकट करती है।

- यदि विवाहरेखा गर्डल ऑफ वीनस को क्रॉस करती है, तो इसका मतलब है कि आपका प्रियतम चिङ्गचिङ्ग होगा।

विवाह रेखा से संबंधित अन्य विचार

हथेली पर चार जगहों से विवाह रेखा को देखा और पढ़ा जा सकता है:

- बुध पर्वत पर विवाहरेखा लंबी, स्पष्ट और आसानी से पढ़ी जाने वाली होनी चाहिए। छोटी रेखाएं रिश्तों में कामुक विचार के प्रभाव को दर्शाती है। वह रेखा या रेखाएं जो हृदयरेखा के बराबर चलती हैं इन्हें संघरेखाएं कहा जाता है और ये विवाहरेखा के तौर पर ज्यादा प्रसिद्ध हैं।
- येरेखाएं जीवनरेखा से उदय होती हैं

- शुक्र पर्वत से गुजरती हैं
- चंद्र पर्वत से आने वाली रेखाएं और भाग्य रेखा का स्पर्श कर रही रेखाएं। इन रेखाओं को एक-दूसरे को काटना नहीं चाहिए।
- यदि उपरोक्त स्थितियां नहीं बनती हैं या मेल नहीं खाती हैं, तो यह नहीं कहा जा सकता है कि शादी नहीं होगी बल्कि यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रेखाओं का निर्माण भविष्य में हो सकता है।
- यदि हथेली पर मौजूद बहुत सी स्पष्ट रेखाएं शुक्र पर्वत से अलग-अलग दिशाओं में जा रही हैं। इसका मतलब है कि प्यार के मामले में व्यक्ति थोड़े अलग स्वभाव का होगा। इस बात की संभावना भी है कि उस व्यक्ति को प्यार में धोखा भी मिल सकता है।

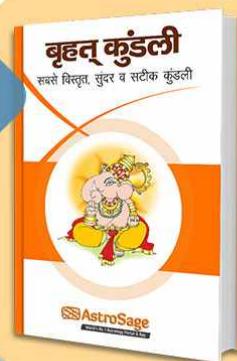


बृहत् कुण्डली

अब तक की सबसे विस्तृत कुण्डली

अभी खरीदें >

250+
पृष्ठ

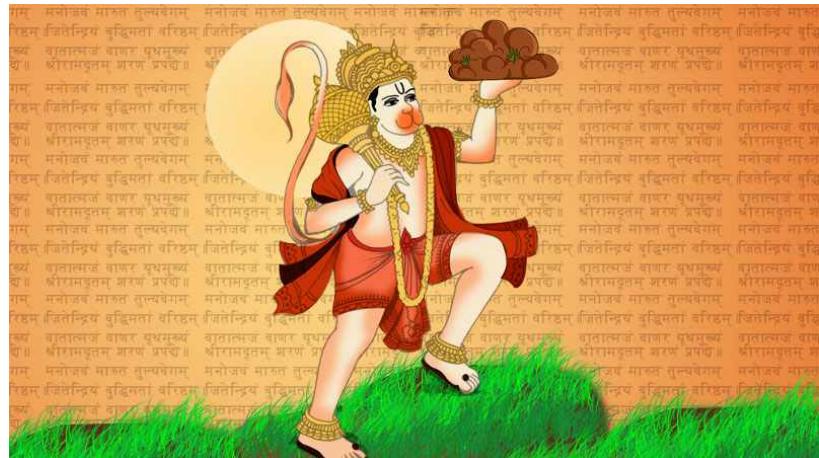


शुरुआती कीमत :- ₹ 999

बजरंग बली की 10 चमत्कारी बातें



एस्ट्रोगुरु
मृगांक



जैसे ही हमारे मन में श्री राम भक्त हनुमान का नाम आता है, हमारा मन भक्ति और श्रद्धा से भर जाता है। बजरंगबली कहे जाने वाले हनुमान जी अत्यंत ही शक्तिशाली और चमत्कारी देवता हैं और भक्तों की मुराद सुनकर तुरंत ही उनकी सहायता करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। संकटों का नाश करने के कारण उन्हें संकटमोचन भी कहा जाता है। आइए जानते हैं बजरंगबली से संबंधित 10 चमत्कारिक बातें।

ग्यारहवें रुद्र अवतार बजरंगबली

बजरंगबली भगवान शिव के ग्यारहवें रुद्र अवतार माने जाते हैं। यही वजह है कि उनके अंदर असीमित शक्तियाँ हैं। भगवान शिव ने भगवान विष्णु के मानव अवतार श्री राम के साथ समय व्यतीत करने और उनकी सहायता करने के लिए अपने एकादश रुद्र के अवतार में हनुमान जी के रूप में अंशावतार लिया। हनुमान जी असीमित शक्तिशाली हैं और अपने भक्तों पर सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं। जो कोई भी भगवान श्री राम का नाम लेता है, हनुमान

जी की सहज कृपा उन्हें प्राप्त हो जाती है।

**मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठ ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥**

जो मन जितने तीव्र और पवन जितने वेगवान हैं, जो जितेंद्रिय हैं और जिन्होंने अपनी इंद्रियों को वश में किया हुआ है, जो बुद्धिमान हैं, विद्या और बुद्धि में श्रेष्ठ हैं, जो पवन देव के पुत्र हैं और वानरों में श्रेष्ठ हैं। श्री राम जी के दूत (श्री बजरंगबली हनुमान जी) की मैं शरण लेता हूं।

**हनुमान चालीसा की चौपाई देखिए -
शंकर सुवन केसरी नंदन तेज प्रताप महा जग वंदन।**

अर्थात् भगवान शंकर के पुत्र केसरी नंदन अत्यंत तेजवान और प्रताप वाले, जिनका समस्त जग वंदन करता है। भगवान शिव के अवतार होने के साथ-साथ हनुमान जी पवन देव के पुत्र भी माने जाते हैं और वानरों के राजा केसरी के पुत्र होने से केसरी नंदन और अंजनी पुत्र अर्थात् अंजना माता के पुत्र भी हैं।

सूर्य देव के परम शिष्य बजरंगबली और शनि देव के मित्र भी

हनुमान जी ने विद्या अध्ययन के लिए भगवान सूर्य देव से प्रार्थना की तो भगवान सूर्य ने उनसे कहा कि मैं तो निरंतर

ही गतिमान रहता हूं तो तुम मुझसे कैसे विद्या ग्रहण कर पाओगे, तो हनुमान जी ने कहा कि मैं भी आपके साथ सदैव गतिमान रहकर शिक्षा ग्रहण कर लूँगा। इस पर सूर्य देव ने उनकी विनती को स्वीकार कर लिया और उन्हें अपने शिष्य के रूप में विद्या देना प्रारंभ किया। इस प्रकार सूर्य देव ने बजरंगबली को गुरु बनकर अनेक प्रकार की शिक्षायें प्रदान की।

**अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहम् दनुजवनकृशानुं
ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम् रघुपतिप्रियभक्तं
वातजातं नमामि ॥**



जिनका अतुलित बल है, जो सोने के पर्वत के समान अत्यंत कांतियुक्त शरीर वाले हैं, जो दैत्य रूपी वन को ध्वंस करने वाले हैं और ज्ञानी जनों में सबसे आगे हैं। जो समस्त गुणों के निधान हैं, वानरों के स्वामी हैं, भगवान श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त तथा पवन देव के पुत्र श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं।

भगवान सूर्य देव के पुत्र हैं शनि देव और इस कारण अपने गुरु के पुत्र शनिदेव से हनुमान जी की मित्रता भी है। यही वजह है कि शनिदेव हनुमान जी के भक्तों को कभी कोई क्षति नहीं पहुँचाते और हनुमान जी भी अपने प्रिय मित्र के

भक्तों की सदैव रक्षा करते हैं। जहां शनि देव कर्म का पाठ पढ़ाते हैं, वहाँ हनुमान जी भक्ति का मार्ग दिखाते हैं। कहा जाता है कि एक बार युद्ध में शनि देव को चोट आई जिसकी वजह से उन्हें काफी पीड़ा हो रही थी। उस पीड़ा से बचाने के लिए हनुमान जी ने उन्हें सरसों का तेल लगाया था। तभी से शनिदेव ने हनुमान जी को अपना मित्र विशेष रूप से माना और उनके भक्तों को कभी भी हानि ना पहुंचाने का वचन दिया था और कहा कि जो कोई भक्त शनि देव को सरसों का तेल छाड़ाएगा, शनिदेव उसपर सदैव कृपा करेंगे।

चारों जुग परताप तुम्हारा है प्रसिद्ध जगत उजियारा ।

इस प्रकार हनुमान जी का प्रताप चारों युगों और दसों दिशाओं में फैला हुआ है। ये बजरंगबली की महिमा थी कि उन्होंने स्वर्ण नगरी लंका को जला दिया था लेकिन उनके मित्र शनिदेव से वो सोने की लंका काली पड़ गयी थी।

विवाहित होकर भी ब्रह्मचारी हैं बजरंगबली

बजरंगबली को ब्रह्मचारी भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हनुमानजी विवाहित भी हैं और उनकी पत्नी भी हैं। इस संदर्भ में एक विशेष कथा है जिसके अनुसार जब बजरंगबली सूर्य देव से शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तो उन्होंने एक के बाद एक अनेक विद्याओं को शीघ्रता के साथ प्राप्त कर लिया लेकिन कुछ विद्या ऐसी थीं, जो केवल विवाहित होने के उपरांत ही सीखी जा सकती थीं। इस कारण से हनुमान जी को असुविधा हुई क्योंकि वे तो ब्रह्मचारी थे, तो उनके गुरु सूर्य देव ने इसका एक उपाय निकाला। सूर्य देव की अत्यंत तेजस्वी पुत्री थीं सुवर्चला।

सूर्य देव के कहने से हनुमान जी ने केवल शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से अपने गुरु सूर्य देव की पुत्री सुवर्चला से विवाह किया। इस विवाह का जिक्र पाराशर संहिता में भी दिया गया है, जिसके अनुसार सूर्य देव ने 9 दिव्य विद्याओं में से 5 विद्याओं का ज्ञान हनुमान जी को दे दिया था, लेकिन 4 विद्याओं के लिए हनुमान जी का विवाहित होना आवश्यक था। सुवर्चला परम तपस्वी और तेजस्वी थीं। सूर्य देव ने हनुमान जी से कहा था कि विवाह के उपरांत भी तुम सदा बाल ब्रह्मचारी ही रहोगे क्योंकि सुवर्चला तपस्या में लीन हो जाएगी और ऐसा ही हुआ। इस प्रकार हनुमान जी ने शेष विद्या भी अर्जित कर ली और फिर बाल ब्रह्मचारी भी बने रहे। भारत के तेलंगाना राज्य के खम्मम जिले में आज भी हनुमान जी की मूर्ति हैं जिसमें वे अपनी पत्नी सुवर्चला के साथ विराजमान हैं और यहां दर्शन करने से वैवाहिक जीवन में सुख की प्राप्ति होती है और समस्त प्रकार के कष्टों का अंत होता है।

अष्ट सिद्धि और नव निधियों के दाता हैं बजरंगबली

सूर्य देव से शिक्षा प्राप्त करके हनुमान जी अष्ट सिद्धि और नव निधियों के स्वामी बन चुके थे। अणिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व और वशित्व ये कुल आठ सिद्धियां हैं। अणिमा सिद्धि अपने शरीर को अणु जितना छोटा कर लेने की क्षमता प्रदान करती है, तो लघिमा शरीर को इतना हल्का कर सकती है कि आप हवा से भी तेज गति से उड़ सकते हैं। गरिमा सिद्धि प्राप्त करने के बाद शरीर का भार असीमित रूप से बढ़ाया जा सकता है और उसे कोई हिला नहीं सकता तथा प्राप्ति सिद्धि से आप किसी भी स्थान पर अपनी इच्छा अनुसार अदृश्य रूप से जहां जाना चाहें, वहां जा सकते हैं। प्राकाम्य सिद्धि आपको किसी के भी मन की बात को बहुत सरलता से

समझा सकती है और महिमा सिद्धि की सहायता से आप जब चाहें, अपने शरीर को असीमित रूप से विशाल बना सकते हैं और किसी भी सीमा तक उसका विस्तार कर सकते हैं। ईशित्व सिद्धि ईश्वर का रूप प्रदान करती है अर्थात् यह भगवान की एक उपाधि है, जिससे व्यक्ति ईश्वर स्वरूप हो जाता है और दुनिया पर आधिपत्य स्थापित कर सकता है, तो वहीं वशित्व सिद्धि के प्राप्त करने के बाद आप किसी को भी अपने वश में करके उसे अपना दास बना सकते हैं अथवा पराजित कर सकते हैं।

किरीट, केयूर, नुपूर, चक्र, रथ, मणि, भार्या, गज, और पादि नव निधियाँ हैं। कुबेर के पास भी नव निधियाँ थी, लेकिन वे इन निधियों को किसी को देने में असमर्थ थे, लेकिन माता सीता के आशीर्वाद से हनुमान जी ये सभी किसी को भी प्रदान कर सकते हैं। माता सीता ने भी उन्हें अष्ट सिद्धि और नव निधियाँ मानव मात्र के कल्याण हेतु प्रदान करने का आशीर्वाद दिया था। इस सन्दर्भ में देखिये यह चौपाईः

**अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता अस बर दीन जानकी
माता।**



दिव्यास्त्र और ब्रह्मास्त्र से भी अजेय हैं बजरंगबली

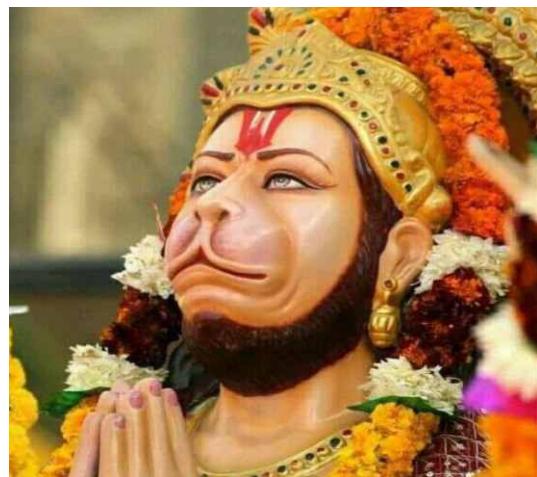
हनुमान जी इतने शक्तिशाली हैं कि किसी प्रकार का अस्त्र शस्त्र उनका कुछ नहीं बिगड़ सकता। एक बार जब हनुमान जी बालपन में अपनी लीला रचा रहे थे तो उन्होंने उगते हुए सूर्य को फल समझा और उसे खाने के लिए पवन वेग से उड़ते हुए सूर्य के समीप पहुँच गए। जब वे वहाँ पहुँचे ठीक उसी समय राहु सूर्य देव को ग्रसित करने आ रहा था, लेकिन हनुमान जी से डरकर वह भाग गया और इंद्र देव से बजरंगबली जी की शिकायत की। तब इंद्र देव ने हनुमानजी को रोका लेकिन वे बालक थे और नटखट भी इसलिए नहीं माने तो देवराज इंद्र ने उनकी ठोड़ी पर अपने वज्र का प्रहार किया, जिससे वह अचेत होकर धरती पर गिर पड़े। चूंकि वे वायु देव के पुत्र थे, इसलिए पवन देव ने समस्त संसार की प्राणवायु को रोक लिया और सभी त्राहिमाम करते हुए ब्रह्म देव के पास पहुँचे। उनकी बात सुन कर ब्रह्म देव ने हनुमान जी को पूर्णतः स्वस्थ कर दिया और सभी देवी देवताओं ने उन्हें अपने दिव्य अस्त्र और शस्त्र भेंट किये और अपनी दिव्य शक्तियां भी प्रदान कीं। इसके पश्चात् ब्रह्म देव ने उन्हें वरदान दिया कि कभी भी कोई ब्रह्मास्त्र भी उनका कुछ नहीं बिगड़ पाएगा। हनु का अर्थ होता है ठोड़ी, इसलिए इसी दिन से उन्हें हनुमान कहा जाने लगा।

जब हनुमान जी लंका पहुँचे तो मेघनाद ने उन पर परम शक्ति अर्थात् ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। उस समय यदि हनुमान जी चाहते तो उस अस्त्र से प्रभाव से बच सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। पढ़िए सुन्दर काण्ड की यह चौपाईः

ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह विचार।

जौं न ब्रह्मासर मानउँ महिमा मिटइ अपार॥

जब मेघनाद ने हनुमान जी पर परम शक्तिशाली ब्रह्मास्त्र का संधान किया, तब हनुमानजी ने मन में विचार किया कि यदि मैं इस ब्रह्मास्त्र को नहीं स्वीकार करता हूँ तो इसकी महिमा मिट जाएगी। इसलिए और उन्हें रावण की सभा में भी जाना था, इसलिए भी उन्होंने उस ब्रह्मास्त्र का प्रहार स्वयं पर लिया। इस प्रकार मेघनाद के ब्रह्मास्त्र को निष्फल भी कर दिया, जिसका प्रयोग वह युद्ध में कर सकता था।



श्री राम से भी युद्ध लड़े थे बजरंगबली

भगवान श्री राम जी के परम प्रिय भक्त कहे जाने वाले बजरंगबली का युद्ध स्वयं अपने प्रभु श्रीराम से भी हुआ था। इसके पीछे एक कहानी है जिसके अनुसार भगवान श्री रामचंद्र जी के गुरु महर्षि विश्वामित्र का अपमान राजा ययाति ने कर दिया था। इस वजह से गुरु विश्वामित्र ने भगवान श्रीराम को राजा ययाति को मृत्युदंड देने का आदेश दिया। भगवान श्रीराम से डरकर राजा ययाति ने हनुमान जी की माता अंजनी जी से अपने प्राणों की याचना की क्योंकि वे जानते थे कि हनुमान जी ही उनकी रक्षा कर सकते हैं। ऐसे में माता अंजना ने राजा ययाति को वचन दे दिया और हनुमान जी को उनकी रक्षा में तत्पर कर

दिया। जब हनुमान जी को यह पता चला कि उन्हें श्री राम से युद्ध करना है, तो वे भी असमंजस में पड़ गए क्योंकि वे अपने आरथ्या के विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकते थे। इसलिए बल और बुद्धि के निदान हनुमान जी ने शीघ्र ही इसकी युक्ति निकाली। ऐसे में भगवान श्री राम के अस्त्रों का जवाब ना देकर हनुमान जी केवल श्री राम नाम को जपते रहे। भगवान श्रीराम ने भी मजबूरी में अनेक अस्त्र-शस्त्र चलाए, लेकिन सब विफल रहे तब महर्षि विश्वामित्र ने इस स्थिति को देखते हुए श्री राम को उनके धर्म संकट से मुक्ति दी और उन्हें युद्ध रोकने का आदेश दिया। इस प्रकार राजा ययाति का जीवन भी बच गया और हनुमान जी ने भी अपने वचनों को पूरा किया। यहाँ से माना जाता है कि हनुमान जी के इस युद्ध से यह शिक्षा मिली कि प्रभु श्री राम से भी बड़ा राम का नाम होता है। इसलिए भगवान राम का स्मरण करने वाले को कभी भी कोई अस्त्र शस्त्र भी नहीं मार सकते।

चिरंजीवियों में से एक हैं बजरंगबली



इस पृथ्वी पर आज भी ऐसे महामानव जीवित हैं, जो अपने वचनों से अथवा कुछ विशेष कार्यों अथवा श्राप की वजह से अभी भी जीवित है और माना जाता है कि वर्तमान कलयुग के अंत तक वे इस पृथ्वी पर जीवित रहेंगे। इन्हे चिरंजीवी कहा जाता है और

बजरंगबली भी इन्हीं में से एक हैं:

अश्वत्थामा बलिव्यासो हनूमांश्च विभीषणः। कृपः

परशुरामश्च सप्तएतै चिरंजीविनः॥

सप्तैतान् संस्मरेण्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं
सोपि सर्वव्याधिविवर्जित ॥

जो कोई भी व्यक्ति उपरोक्त मंत्र का जाप करता है और इन चिरंजीवियों का स्मरण करता है, उन्हें दीर्घायु प्राप्त होती है। उनके जीवन से समस्याओं का अंत हो जाता है। हनुमान जी भी इन चिरंजीवियों में से एक हैं और त्रेता युग में वे श्री राम के साथ थे, तो द्वापर युग में श्री कृष्ण के साथ अर्जुन के रथ की ध्वजा पर विराजमान थे। उन्होंने ही भीम का घमंड चूर चूर किया था। श्री राम ने ही उनसे इस पृथ्वी पर रहकर धर्मात्माओं की रक्षा और सहायता करने के लिए कहा था।

एक पिता भी हैं बजरंगबली

हम सभी जानते हैं कि हनुमान जी परम तपस्वी हैं। वे महान शक्तिशाली और ब्रह्मचारी हैं लेकिन इसके अतिरिक्त एक पुत्र के पिता भी हैं। इस संदर्भ में भी एक विशेष कहानी है। उस कहानी के अनुसार रावण की आज्ञा से जब हनुमान जी की पूँछ में आग लगाई गई तो उन्होंने अपनी पूँछ की आग से पूरी लंका को जला कर भस्म कर दिया और स्वयं अपनी पूँछ की आग को बुझाने के लिए समुद्र में कूद गए। आग की गर्मी के कारण उन्हें पसीना आ रहा था, जिसकी वजह से उनके पसीने की कुछ बूँदें समुद्र में गिरीं और एक मछली के मुंह में आ गई, जिसने उन पसीने की बूँदों को भोजन समझकर ग्रहण कर लिया और उसके पेट में जाकर वह बूँद एक शरीर में बदल गई। कुछ समय बाद पाताल के राजा अहिरावण के सेवकों ने उस मछली को पकड़ लिया और जब वे उस मछली का पेट चीर रहे थे तो उसमें से एक जीव निकला, जिसे अहिरावण

के पास ले गए।

अहिरावण ने उसे पातालपुरी का रक्षक नियुक्त कर दिया। यही हनुमान जी का पुत्र मकरध्वज कहलाया। जब राम रावण युद्ध में अहिरावण श्री राम और लक्ष्मण जी का हरण कर उन्हें पाताल पुरी ले गया, तो उनकी रक्षा करने के लिए हनुमान जी भी पाताल नगरी पहुंच गए। वहां एक वानर को देखा तो आश्वर्यचकित होकर उन्होंने मकरध्वज से उसका परिचय पूछा और मकरध्वज ने कहा कि मैं हनुमान का पुत्र मकरध्वज हूं और पातालपुरी का रक्षक हूं। तब हनुमानजी क्रोधित हो गए और बोले यह तुम क्या कह रहे हो? मैं तो बाल ब्रह्मचारी हूं! तुम मेरे पुत्र कैसे हो सकते हो?

यह जानने के बाद की वे स्वयं हनुमान जी हैं, मकरध्वज उनके चरणों में गिर गया और उन्हें अपनी सारी कथा सुनाई। तब हनुमान जी ने स्वीकार किया कि वह उनका ही पुत्र है, लेकिन वह अपने प्रभु श्री राम और लक्ष्मण को लेने आए हैं, इसलिए मकरध्वज उनका रास्ता छोड़ दे, लेकिन मकरध्वज भी अपने कर्तव्य से नहीं हटा। उसने हनुमान जी से युद्ध करना प्रारंभ कर दिया। जब हनुमान जी के बार बार समझाने पर भी वह नहीं उठा तो हनुमान जी ने उसे अपनी पूँछ में बाँधकर पताल में प्रवेश किया और अहिरावण का वध करने के उपरांत श्री राम और लक्ष्मण को लेकर वापस चल दिए तथा राम जी के कहने पर मकरध्वज को बंधन मुक्त कर दिया और उसका राज्याभिषेक कर उसे पाताल का राजा घोषित कर दिया।

सुंदरकांड और बजरंगबली

हनुमान जी को सुंदरकांड सबसे अधिक प्रिय है क्योंकि इसमें उन्हें उनकी खोई हुई शक्ति का परिचय दिया गया है।

उन्हें उनकी शक्तियां दिलाई गई हैं और इस सुंदरकांड में ही हनुमान जी ने अपने प्रभु श्री राम और माता सीता को मिलाने के लिए मुख्य कार्य किए हैं। इसका वर्णन सुनकर हनुमान जी अत्यंत ही प्रसन्न हो जाते हैं और इसीलिए यह सुंदरकांड बहुत प्रभावशाली और शक्तिशाली माना जाता है। जब भी आपका कोई कार्य ना बन रहा हो या जीवन में आप अनेक कठिन समस्याओं से दुखी हों तो बजरंगबली की प्रतिमा या तस्वीर के समक्ष सुंदरकांड का पाठ करने से बजरंगबली की कृपा आप को सहज रूप से प्राप्त हो जाती है और वे आपकी रक्षा करते हैं।

कलयुग के जाग्रत् देवता हैं बजरंगबली

हनुमान जी को कलयुग का जाग्रत् देवता भी कहा जाता है और वर्तमान समय में

हनुमान जी शीघ्र अति शीघ्र प्रसन्न होकर अपने भक्तों को जीवन दान देते हैं और उनकी रक्षा करते हैं। भगवान् श्री राम का नाम जपने वाले की सदैव हनुमान जी रक्षा करते हैं। कलयुग के जाग्रत् देवता होने के कारण हनुमान जी शीघ्र ही फल प्रदान करने वाले देवता हैं। उनकी पूजा पवित्रता के साथ और श्रद्धा के साथ करनी चाहिए क्योंकि उग्र होने के कारण वे अपवित्रता से नाराज़ भी हो सकते हैं, इसलिए पूरे मन से और सात्त्विकता तथा पवित्रता के साथ हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए।



फरवरी 2020 मासिक राशिफल

मेष राशि

सारांश :- फरवरी का महीना आपके लिए कुछ नए बदलाव लेकर आएगा क्योंकि आपकी राशि के स्वामी ग्रह मंगल देव 8 फरवरी को आपके अष्टम भाव से निकलकर भाग्य स्थान की राशि धनु में प्रवेश कर जायेगे। इससे

जहाँ सुदूर यात्राओं के योग बनेंगे, वहीं दूसरी ओर अपने पिता से किसी बात को लेकर गरमा - गर्मी हो सकती है। संभव है की उनका स्वास्थ्य भी इस दौरान कुछ कमज़ोर रहे। लेकिन आपके भाग्य में वृद्धि होगी और लम्बे समय से अटके काम फिर से बनने लगेंगे।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मेष राशि



वृष राशि

सारांश :- वृषभ राशि में जन्म लेने से आप काफी मेहनती हैं और आपकी मेहनत ही आपके सभी सुखों की मूल वजह है क्योंकि आप अपने सुखों की प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक मेहनत करने के लिए तैयार रहते हैं।

आपकी यही दृढ़ इच्छाशक्ति आप को सबसे आगे रखती है। इस महीने की शुरुआत में 12 वे भाव का स्वामी मंगल सातवें भाव में रहने से जहाँ दांपत्य जीवन में जीवन साथी और बिज़नेस में साझीदार के साथ आपके संबंधों में कुछ खटास पैदा कर सकता है, वहीं दूसरी ओर आपको विदेश यात्रा की सौगात भी कह सकता है। आप अपने जीवन साथी या व्यापार के साथ ही अर्थात् साझीदार के साथ विदेश...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - वृष राशि

मिथुन राशि

सारांश :- अपनी मीठी मीठी बातों के लिए जाने जाने वाले मिथुन राशि के स्वामी हैं आप। अपनी बातों के माध्यम से आप लोगों का दिल जीतना जानते हैं और किसी भी महफिल की शान बन जाते हैं। अपनी

इसी खूबी का फायदा उठा कर आप अपने सभी काम करवा लेते हैं और जीवन में तरक्की हासिल करते हैं। इस महीने आपको अपनी वाक् चातुर्य दिखाने का मौका दिखाने का अवसर मिलेगा और उसके माध्यम से आप तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़ेंगे।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मिथुन राशि

कर्क राशि

सारांश :- कर्क राशि चंद्र देव के स्वामित्व की राशि होने के कारण मानसिक रूप से काफी शक्तिशाली राशि होती है। इनके मन की गति चंद्रमा की भाँति होती है, इसलिए जैसे जैसे चंद्रमा की कलाएं घटती



और बढ़ती जाती हैं, वैसे ही इन के मन की स्थिति भी बार बार परिवर्तित होती रहती है। कई बार एक साथ कई कामों को हाथ में ले लेते हैं और किसी को भी पूरा किए बिना बीच में ही छोड़ देते हैं। आप अपने परिवार के प्रति समर्पित होते हैं और अपनी जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हटते। लेकिन इसकी वजह से आपसे हमसे प्यार करते हैं उनके प्रति कुछ ज्यादा ही लगाव दिखाते हैं जिसकी वजह से कभी कभी सामने वाले...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कर्क राशि

सिंह राशि

सारांश :- सिंह राशि के लोग सूर्य देव के प्रभाव में होते हैं क्योंकि सिंह सूर्य देव की अपनी राशि है। सूरज को जगत की आत्मा और पिता कहा गया है। सूर्य देव आरोग्य के देवता है इसलिए आमतौर पर सिंह राशि के लोगों का स्वास्थ्य अनुकूल रहता है हालांकि कई बार इनका आलस्य इन्हें स्वास्थ्य समस्याओं के साथ-साथ अन्य परेशानियों में डाल देता है। सिंह राशि में जन्म लेने के कारण आपके अंदर जन्म जात कई गुण पाए जाते हैं जिनमें से लोगों का नेतृत्व करना और जीवन में सच्चाई का साथ देना और उसकी तह तक जाना आपकी खासियत होती हैं। हालांकि आपको जब तक अधिक जोर ना दिया जाए या आपके ऊपर समय-सीमा की तलवार ना हो तो आप किसी कार्य में आसानी से हाथ नहीं डालते।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [सिंह राशि](#)

कन्या राशि

सारांश :- कन्या राशि बुध ग्रह के स्वामित्व की राशि होने के कारण आप हास्य पसंद होते हैं और लोगों को प्रसन्न रखना आप के बाएँ हाथ का खेल है। आप अपने दैनिक जीवन में काफी व्यवहारिक होते हैं और जिस काम को करने में बड़े बड़े के पसीने आ जाए, ऐसे दिमागी कामों को आप चुटकी बजाते ही हल कर डालते हैं। मजबूत बुध जहां आपको हाजिर जवाब बनाता है, वहीं कमजोर बुध आपको त्वचा से संबंधित समस्याएं और वाणी दोष भी देने में सक्षम होता है। बुध त्रिदोष देने वाला होता है अर्थात् वात, पित्त और कफ तीनों पर समान रूप से बुध प्रभाव देता है।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [कन्या राशि](#)

तुला राशि

सारांश :- तुला राशि के लोगों में गजब का आकर्षण पाया जाता है जो इन्हें सभी का प्रिय बनाता है और इसकी एक वजह यह भी है कि ये जीवन में सामंजस्य बनाए रखना पसंद करते हैं। यह किसी भी महफिल की जान होते हैं और स्वयं को महत्व देते हैं। यह खूबसूरती पसंद करते हैं चाहे वह किसी व्यक्ति में हो और चाहे किसी वस्तु में। स्वयं के व्यक्तित्व को कैसे बढ़ाया बनाया जाता है और उसमें कैसे सुधार किया जाता है, यह बात कोई तुला राशि के लोगों से जाने। कई बार अच्छाइयाँ भी मजबूरियाँ बन जाती हैं और यही होता है तुला राशि के लोगों के साथ क्योंकि अक्सर यह जीवन में बैलेंस बनाने के चक्कर में महत्वपूर्ण पलों को खो देते हैं और इसकी वजह से उनके रिश्ते में कई बार दिक्कतें आ जाती हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [तुला राशि](#)

वृश्चिक राशि

सारांश :- आमतौर पर वृश्चिक राशि के जातक छुपे रुस्तम होते हैं, क्योंकि इनकी सहज भावनाओं को समझ पाना हर किसी के बस की बात नहीं। ये आपको अपने बारे में जितना बताएँगी, आप केवल उतना ही जान सकते हैं। इनका जीवन किसी रहस्यमयी कहानी के समान है, जिसे सुलझा पाने में हर कोई सफल नहीं हो सकता। ये जिसके मित्र होते हैं, उसका भरपूर साथ देते हैं, लेकिन जिस से शत्रुता करते हैं, तो उसे भी पूरे तौर पर निभाते हैं। यदि कोई इन्हें धोखा देतो, ये उससे बदला लेने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं और कभी-कभी दूसरों के प्रति ईर्ष्या...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [वृश्चिक राशि](#)

धनु राशि

सारांश :- धनु राशि के जातकों की विशेषता होती है, उनका एकाग्र चित्त ध्यान और उनकी स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा। वे किसी एक स्थान पर टिक कर रहना नहीं चाहते, बल्कि जीवन में उत्तरोत्तर वृद्धि करने के लिए खुला घूमना चाहते हैं। वे अक्सर बंधनों में बँधना पसंद नहीं करते और अपनी स्वतंत्र सोच रखते हैं और उसे सभी के समक्ष रखने में भी गौरव का अनुभव करते हैं। आप कभी-कभी स्वास्थ्य के प्रति नज़रअंदाज़ भी हो सकते हैं, जिसका आपको समय-समय पर खामियाजा भी भुगतना पड़ता है। इसके अतिरिक्त आपके अंदर ज्ञान की प्रतिभा आप को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होती है।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - धनु राशि

मकर राशि

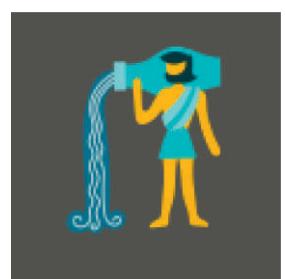
सारांश :- मकर राशि के लोग व्यावहारिकता अपने अंदर रखते हैं और किसी भी बात की तह तक जाना पसंद करते हैं। हालांकि आप कई बार आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपके जीवन में आने वाली कई संभावनाओं को आप ऐसे ही हाथ से निकल जाने देते हैं और बाद में आपको उसके लिए पछताना पड़ता है, लेकिन जब आप किसी लक्ष्य के प्रति एकनिष्ठ हो जाते हैं तो, आप पूरी तरह से उसमें डूब जाते हैं और उस काम को खत्म करके ही दम लेते हैं। आप की यही खूबी आपको आगे बढ़ाने में मददगार होती है। शनि देव की विशेष कृपा आप पर होने के कारण आप जीवन के कई मामलों में औरों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं और आपकी तरक्की धीरे-धीरे होने के बावजूद...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मकर राशि

कुंभ राशि

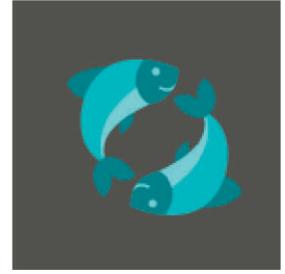
सारांश :- कुंभ राशि में जन्म लेने से आप एक गंभीर विचारधारा वाले व्यक्ति हैं जो जीवन में किसी भी काम को बहुत ही सोच विचार कर करते हैं और उसकी गहराई तक पड़ताल करते हैं। आपकी यह सोच शनिदेव की कृपा का फल है और इसी वजह से आप जीवन में थोड़ा देर से तरक्की करते हैं, लेकिन आपकी तरक्की हर तरह से मजबूत होती है और आपको कोई हिलाने का सामर्थ्य नहीं रख सकता। आप अपनी बात के पक्के होते हैं और एक अनुशासित व्यक्ति होते हैं जिसकी वजह से अपने विचारों को आसानी से नहीं बदलते। आप उम्र के मध्य भाग में अपने करियर में ऊँचाइयों को प्राप्त करते हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कुंभ राशि

मीन राशि

सारांश :- मीन राशि में जन्म लेने के कारण आप काफी भावुक हैं और कई बार दिमाग की जगह दिल का इस्तेमाल करते हैं जिसकी वजह से बाद में परेशानी उठाते हैं। आपकी राशि पर बृहस्पति देव की विशेष कृपा है, इस वजह से आप बुद्धिमान और ज्ञानी होते हैं और लोगों को जीवन में सही मार्ग पर लाने में अपनी ओर से प्रयास भी करते हैं, लेकिन आपका अत्यधिक भावुक होना आप की सबसे बड़ी कमज़ोरी है और इसी वजह से आप कई बार बड़े बड़े निर्णय लेने में भी परेशानी का अनुभव करते हैं। आप मानसिक तौर पर अधिक चिंतित रहते हैं क्योंकि आप हर समय कुछ ना कुछ सोचने की आदत रखते हैं और इस वजह से आप स्वयं को काफी हृदतक व्यस्त रखते हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मीन राशि

तरक्की और समृद्धि के लिए वास्तु उपाय



अगर लाख कोशिशें करने के बावजूद भी आपके घर में खुशियाँ नहीं आती या आपके घर में आया हुआ पैसा नहीं टिकता है, या आपके घर में कोई इंसान हर वक्त बीमार रहता है तो ऐसा माना जाता है कि आपके घर का वास्तु-शास्त्र ठीक नहीं है। इसी वजह से कहा जाता है कि कभी भी घर बनाने से पहले हमें वास्तु का ध्यान ज़रूर रखना चाहिए लेकिन मान लीजिए की किन्हीं कारणवश आपके घर का वास्तु सही नहीं है तो ऐसे में परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। हम यहाँ कुछ बेहद सरल तरीके लाए हैं, जिन्हे अपनाने से आप अपने घर में सुख, समृद्धि, और खुशियाँ वापस पा सकते हैं।

तरक्की और धन समृद्धि के लिए वास्तु शास्त्र के शानदार उपाय

कहते हैं कि अगर किसी घर का वास्तु खराब है तो उस घर में रहने वालों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जैसे घर के मुख्य द्वार से होकर लोग घर के अंदर आते हैं वैसे ही नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जाएं भी

घर में प्रवेश करती हैं और बाहर जाती हैं। यहाँ दिए गए कुछ बेहद सरल उपायों को अपना कर आप अपने घर की सकारात्मक ऊर्जा को हमेशा के लिए अपने घर में रख सकते हैं।

पहला उपाय: घर के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक बनाएँ

हिन्दू धर्म में स्वास्तिक को बहुत पावन और पवित्र माना जाता है। वास्तु-शास्त्र में भी स्वास्तिक की महत्ता बताई गयी है। ऐसे में कहा जाता है कि अगर घर के मुख्य द्वार पर सिन्दूर से स्वास्तिक बनाया जाये तो इससे घर में सुख समृद्धि हमेशा बनी रहती है और घर में किसी तरह की नेगेटिव ऊर्जा का प्रवाह नहीं होता है। यहाँ ध्यान रखने वाली बात है कि ये स्वास्तिक नौ अंगुल लंबा और नौ अंगुल चौड़ा होना चाहिए।

दूसरा उपाय: मुख्य द्वार पर तुलसी और केले के पेड़

अगर आपके घर में किसी भी तरह का कोई भी दोष मौजूद है तो आप अपने घर के मुख्य द्वार के एक तरफ तुलसी का पौधा और दूसरी तरफ केले का पेड़ लगा सकते हैं। ऐसा करने से ना ही सिर्फ आपको घर के वास्तु-दोष से छुटकारा मिलेगा बल्कि इससे घर में रहने वाले सदस्यों की तरक्की भी होगी। ये पेड़ घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह करते हैं।

तीसरा उपाय: अनार का पौधा लगाएँ

अगर आपने कहीं पर प्लॉट लिया है लेकिन आपका घर बनने में बहुत देरी हो रही है तो आप इस खाली प्लॉट में एक अनार का पौधा लगा दीजिये। इसे आपका घर जल्दी बनने लग जायेगा।

चौथा उपाय: घर से निकालें टूटे बर्तन और टूटी खाट

कई बार घर में कोई बर्तन टूट जाने के बाद भी हम उसे रखे रहते हैं। जबकि ऐसा करना बहुत गलत माना गया है। टूटे बर्तनों और टूटी खाट घर में रखने से दरिद्रता आती है। टूटे बर्तन में खाना परोसने से घर में खाने की कमी हो जाती है और इससे वास्तु दोष भी उत्पन्न होता है।



पांचवा उपाय: मकान की छत पर लगाएँ बड़ा गोल आईना

घर की छत पर एक बड़ा गोल आईना लगाने से भी घर के वास्तु-दोष से छुटकारा पाया जा सकता है। घर की छत पर आईना कुछ इस तरह से होना चाहिए कि उसमें पूरा घर नज़र आना चाहिए। वास्तु शास्त्र में आईने को उत्प्रेरक बताया गया है, जिसके द्वारा भवन में तरंगित ऊर्जा की सृष्टि सुखद अहसास कराती है।

छठा उपाय: रसोई के अग्निकोण में लगाएँ बल्ब

घर की रसोई का सीधा असर घर के वास्तु पर पड़ता है। ऐसे में घर बनाते समय और खासकर की रसोई बनाते

समय किचन के वास्तु का बहुत ध्यान रखना चाहिए लेकिन मान लीजिए कि किन्हीं कारणवश किचन का वास्तु शास्त्र सही नहीं है तो आप अग्निकोण में एक बल्ब लगा सकते हैं। हर सुबह-शाम इस बल्ब को जलाना मत भूलिए। ऐसा करने से ना सिर्फ घर का वास्तु ठीक होता है बल्कि इससे घर में सुख समृद्धि भी बनी रहती है।

सातवाँ उपाय: घर के द्वार पर टाँगें ये सामान

अपने घर से द्वार दोष या वेथ दोष दूर करने के लिए अपने घर के मुख्य द्वार पर शंख, सीप, समुद्री झाग, कौड़ी, लाल कपड़े में या मौली बांधकर लटका दें। ऐसा करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा रहती है और साथ ही घर में किसी की भी बुरी नज़र भी नहीं पड़ती।

आठवाँ उपाय: दीपक जलाएं और शंख बजाएं

अपने घर के मंदिर में धी का दीपक जलाएं और घर में शंख की ध्वनि सुबह शाम ज़रूर बजाएं। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।

नौवाँ उपाय : बासे फूल हटा दें

घर के मंदिर में भगवान को चढ़ाएं गए फूल अगले ही दिन हटा दें। मंदिर में कभी भी बासे फूल नहीं रहना चाहिए। तुलसी, बेल पत्र, नागरवेली पान, कमलगद्वा और अन्य फूल बाबत शास्त्रों में इन्हें जलाभिषेक के बाद उपयोग में लेने का विधान बताया गया है।

फुलेरा दूज : बिना मुहूर्त पूरे दिन करें शुभ कार्य



हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष के दूसरे दिन (द्वितीय तिथि) को फुलेरा दूज का पर्व मनाया जाता है। इस साल यानि 2020 में यह त्योहार 25 फरवरी (मंगलवार) को मनाया जा रहा है। यह 24 फरवरी को 23:16:40 से शुरू होकर 25 फरवरी 25:41:36 तक रहेगा। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, यह दिन मार्च या फरवरी के महीने में मनाया जाता है। फुलेरा दूज का त्योहार बसंत पंचमी और होली के बीच फाल्गुन में मनाया जाता है। ज्योतिष जानकारों की मानें तो फुलेरा दूज पूरी तरह दोष मुक्त दिन है। इस दिन का हर पल शुभ माना जाता है। इसलिए इस दिन किसी शुभ काम को करने के लिए मुहूर्त देखने की जरूरत नहीं होती।

क्या है फुलेरा दूज

इसे एक शुभ और सर्वोच्च त्योहार माना जाता है। इस त्योहार को उत्तर भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। यह त्योहार भगवान् कृष्ण को

समर्पित है। शाब्दिक अर्थ में फुलेरा का मतलब होता है 'फूल' जो फूलों को दर्शाता है। माना जाता है कि भगवान् कृष्ण फूलों से खेलते हैं और फुलेरा दूज की शुभ पूर्व संध्या पर होली के त्योहार में भाग लेते हैं।

जानें फुलेरा दूज का महत्व

आकाशीय और ग्रह संबंधी भविष्यवाणियों के अनुसार, इस त्योहार को सबसे महत्वपूर्ण और शुभ दिनों में से एक माना जाता है। आइए जानते हैं क्या है फुलेरा दूज का महत्व-

- फुलेरा दूज मुख्य रूप से बसंत ऋतु से जुड़ा त्योहार है।
- वैवाहिक जीवन या प्रेम संबंधों में किसी भी परेशानी को दूर करने के लिए इससे अच्छा दिन कोई नहीं हो सकता है।
- फुलेरा दूज को साल का 'अबूझ मुहूर्त' भी माना जाता है क्योंकि यह दिन किसी भी हानिकारक प्रभाव और दोषों से प्रभावित नहीं होता। इस दिन आप विवाह, संपत्ति की खरीद आदि जैसे सभी तरह के शुभ कार्यों को करने के लिए इस दिन को सबसे पवित्र माना गया है। इस दिन आपको किसी शुभ मुहूर्त का इंतजार करने की जरूरत नहीं है, ना ही किसी पंडित से परामर्श लेने की जरूरत है।
- इस दिन मुख्य रूप से राधा-कृष्ण की पूजा की जाती है।
- अगर किसी की कुंडली में प्रेम का अभाव हो तो उन्हें

इस दिन राधा-कृष्ण की पूजा करनी चाहिए।

ज्योतिष के जानकारों की मानें तो किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए या किसी नए काम की शुरुआत के लिए इससे अच्छा दिन कोई हो ही नहीं सकता है। इस दिन जो भी भक्त प्रेम और श्रद्धा से राधा-कृष्ण की उपासना करते हैं उनके जीवन में भगवान् श्री कृष्ण प्रेम और खुशियाँ बरसाते हैं।

कैसे मनाते हैं फुलेरा दूज-

- इस विशेष दिन पर भक्त भगवान् कृष्ण की पूजा अर्चना करते हैं। यह पर्व उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भव्य उत्सव की तरह मनाया जाता है।
- भक्त इस दिन घरों और मंदिरों में देवता की मूर्तियों को सजाते हैं। राधा-कृष्ण की प्रतिमाओं को सुंदर फूलों से सजाते हैं।
- इस खास दिन पर अनुष्ठान सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसमें भगवान् श्री कृष्ण और राधा के साथ रंग-बिरंगे फूलों से होली खेलते हैं।
- मंदिरों को फूलों और रोशनी से सजाया जाता है और भगवान् कृष्ण-राधा की मूर्ति को सजाकर रंगीन मंडप में रखते हैं।
- भगवान् कृष्ण-राधा को सुंगध और अबीर-गुलाल भी अर्पित करते हैं।



- प्रसाद में सफेद मिठाई, पंचामृत और मिश्री चढ़ाएं।
- प्रसाद के बाद 'मधुराष्टक' का पाठ करें या 'राधा कृपा कटाक्ष' का पाठ करें, अगर आपको पाठ करना कठिन लगे तो बस 'राधेकृष्ण' का जाप कर सकते हैं।
- देवताओं के सम्मान में भजन-कीर्तन किया जाता है।
- पूजा खत्म करने के बाद श्रृंगार की चीजों का दान करें और प्रसाद ग्रहण कर लें।

कृष्ण भक्त इस दिन को बड़े उत्सव की तरह मनाते हैं। उनमें इस दिन को लेकर काफी उत्साह होता है। वे राधे-कृष्ण को गुलाल लगाते हैं, भोग लगाते हैं और भजन-कीर्तन करते हैं। फुलेरा दूज का दिन भगवान् कृष्ण के प्रेम को जीतने का दिन है। मानते हैं कि इस दिन भक्त कान्हा पर जितना प्रेम बरसाते हैं, उतना ही प्रेम कान्हा भी अपने भक्तों पर लुटाते हैं।

फुलेरा दूज मनाने के समय रखें इन बातों का ध्यान

- इस दिन पूजन करने के लिए शाम का समय सबसे उत्तम माना जाता है।
- पूजा के समय रंगीन और साफ कपड़े पहनें।
- अगर आप प्रेम संबंधी परेशानी के लिए पूजा कर रहे हैं तो गुलाबी कपड़े पहनें और अगर वैवाहिक जीवन में आरही परेशानियों को खत्म करने के लिए पूजा कर रहे हैं तो पीले रंग के कपड़े पहनें।

विभिन्न रोगों के ज्योतिषीय कारण और निवारण



एस्ट्रोगुरु
मृगांक



हृदय रोग

1. हृदय रोग के ज्योतिषीय कारण

- जन्म कुंडली में सूर्य का संबंध मंगल, शनि अथवा राहु केतु के अक्ष में होने पर
- सूर्य के पाप कर्तरी योग में होने पर
- सूर्य के नीच राशि में स्थित होने पर
- सूर्य के कुंडली के 6, 8 और 12वें भाव के स्वामियों से संबंध बनाने पर
- कुंडली में सिंह राशि के पीड़ित होने पर अथवा उस पर पाप ग्रहों का प्रभाव होने पर
- कुंडली के चतुर्थ और पंचम भाव के पीड़ित होने अथवा उन पर नैसर्गिक पाप ग्रहों अथवा त्रिक (6-8-12) भाव के स्वामी ग्रह का प्रभाव होने पर



- पंचम भाव के स्वामी ग्रह के पीड़ित होने पर
- चतुर्थ भाव के स्वामी ग्रह के पीड़ित होने पर
- उपरोक्त ग्रह स्थिति होने पर इन ग्रहों की दशा अंतर्दशा के दौरान हृदय रोग की संभावना रहेगी

2. हृदय रोग के ज्योतिषीय उपचार

- सूर्य को मजबूत बनाने के लिए प्रतिदिन सूर्य देव को तांबे के पात्र में अर्घ्य दें
- आदित्य हृदय स्त्रोत्र का नियमित पाठ करें
- कुंडली के चतुर्थ भाव और पंचम भाव के स्वामी ग्रह को जानकर उन को मजबूत करें
- सूर्य देव के बीज मंत्र का जाप करें
- रविवार के दिन बैल को गुड़ और गेहूं खिलाएं
- अपने इष्ट देव की पूजा अर्चना पूरे विधि विधान से करें
- श्रेतार्क वृक्ष लगाएँ और उसको जल्द से सिंचित करें
- श्री विष्णु सहस्रनाम स्त्रोत्र का पाठ करें अथवा भगवान विष्णु की उपासना करें

डायबिटीज़ (मधुमेह)

1. डायबिटीज़ रोग के ज्योतिषीय कारण

- बृहस्पति नीच राशि में छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित होने पर
- त्रिकोण भाव में स्थित बृहस्पति के वक्री और पीड़ित होने पर
- यदि बृहस्पति शनि की राशि में स्थित हो या शनि के नक्षत्र में स्थित हो और उस पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो तो

- राहु की अष्टमेरा से युति यदि अष्टम भाव या त्रिकोण भाव में होते
- त्रिक भाव का स्वामी अथवा कोई पाप ग्रह लग्न में स्थित हो तथा लग्ने, चंद्रमा, गुरु और शुक्र में से कोई दो ग्रह दुःस्थान में स्थित होकर अन्य प्रकार से अशुभ हो
- अष्टम भाव पर पाप प्रभाव हो तथा चंद्रमा गुरु और शुक्र में से कोई दो ग्रह अशुभ होने पर

2. डायबिटीज रोग के ज्योतिषीय उपचार

- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का जाप करें
- बृहस्पतिवा
र के दिन
ब्राह्मणों
को
यथाशक्ति
भोजन
कराएं
- भूरे रंग की
गाय को गुड़ तथा आटा खिलाएं
- ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः मंत्र का जाप करें
- बृहस्पतिवार का व्रत रखना भी लाभदायक रहेगा



- राहु का संबंध त्रिक भाव अथवा भाव के स्वामी ग्रह से होने पर
- कुंडली में चंद्रमा के अशुभ होने पर रक्त अथवा स्तन संबंधित कैंसर की संभावना बढ़ता है
- सूर्य का अशुभ स्थिति में होने पर उदर, सिर अथवा मलकोष में कैंसर दे सकता है
- कुंडली में मंगल का प्रबल अशुभ होने पर रक्त, गर्भाशय या मज्जा का कैंसर हो सकता है



- यदि कुंडली में बुध अशुभ प्रभाव दे रहा है तो मुंह अथवा नाक या नाभि का कैंसर दे सकता है
- गुरु के अशुभ होने की स्थिति में जिगर, लीवर, जांघ, कान अथवा जीभ का कैंसर हो सकता है
- शुक्र के अशुभ होने पर गले अथवा प्रजनन अंगों का कैंसर होने की संभावना रहती है
- शनि के अशुभ होने पर टांगों, दाँतों, अथवा हाथों का कैंसर हो सकता है

कैंसर (कर्क रोग)

1. कैंसर रोग के ज्योतिषीय कारण

- यदि छठे भाव का स्वामी लग्न, और राहु से युति करें तो कैंसर रोग होने की संभावना बढ़ जाती है
- शनि का संबंध लग्न अथवा अष्टम भाव से होने पर तथा मंगल का संबंध शनि से होने पर
- मंगल, गुरु और शनि की दृष्टि या युति विशेष रूप से उत्तरदायी होती है

2. कैंसर रोग के ज्योतिषीय उपचार

- महामृत्युंजय मंत्र का नियमित रूप से जाप करें अथवा भोजन करते समय और दवाई लेते समय 3 बार इस मंत्र का जाप अवश्य करें
- भगवान शिव का रुद्राभिषेक कराएं
- बृहस्पतिवार के दिन ब्राह्मण को केले का दान करें
- उपरोक्त ग्रहों के अनुसार उनका दान करें

औषधीय स्नान से पाएँ ग्रहों का आशीर्वाद



कमला
पाटेल



अगर कुण्डली में कोई ग्रह शत्रु राशि या नीच राशि में बैठकर आपको शारीरिक या मानसिक कष्ट दे रहा है तो ऐसी स्थिति में रत्न (नग) भूल से भी धारण नहीं करना चाहिए बल्कि उसके स्थान पर उस ग्रह से सम्बन्धित औषधि स्नान करना चाहिए और यह उस ग्रह से सम्बन्धित वार को करना चाहिए।

औषधि स्नान की विधि

जिस ग्रह से सम्बन्धित औषधि स्नान करना है उसके दिन से एक दिन पहले रात को उसकी औषधि को जल में भिगो दें। अगले दिन उस वार को जिससे सम्बन्धित ग्रह है उसी ग्रह के मंत्र से जल में अंगुली घुमाते हुये 108 बार मंत्र को बोल कर जल को अभिमन्त्रित करें। इसके उपरांत स्नान करना आरम्भ करें और इसी मंत्र का मानसिक जाप स्नान के समय भी करते रहें।

सूर्य ग्रह के लिए औषधि स्नान

सूर्य -अगर सूर्य ग्रह कुण्डली में शत्रु राशि या नीच अवस्था

में बैठकर आपको रोग व समस्या दे रहे हैं तो निम्न औषधि को शनिवार रात्रि में तांबे के बर्तन में भिगोकर रखें और रविवार की सुबह इस जल में निम्लिखित मंत्र बोलते हुए अनामिका अंगुली घुमाएं तो जल अभिमन्त्रित हो जाएगा। उसके उपरांत इसी जल को लगभग एक लीटर साफ जल में मिलाकर स्नान करें।

औषधि-बेल की जड़, लाल फूल, मुलहठी, केसर व देवदारु।

मंत्र- ॐ ह्रीं घणि सूर्याय नमः

चंद्र ग्रह के लिये औषधि स्नान

अगर जन्म कुण्डली में चंद्र ग्रह अशुभ प्रभाव डाल रहा है तो रविवार को चाँदी के बर्तन में औषधि को भिगोकर रख दें और सोमवार को औषधि से निम्लिखित मंत्र द्वारा अभिमन्त्रित करके स्नान करने पर ग्रह से सम्बन्धित रोगों व कष्टों का निवारण होता है।

औषधि- खिरनी की जड़, सिप्पी, सफेद चंदन और पंचगव्य। सभी सामग्री को उबालकर छान लें और ठंडा होने पर निम्लिखित मंत्र बोलते हुए 108 बार अंगुली घुमायें और स्नान करें:

मंत्र - ॐ सोम सोमाय नमः

मंगल ग्रह के लिए औषधि स्नान

सोमवार रात्रि में तांबे के पात्र में औषधि को भिंगो दें और मंगलवार की सुबह उबालकर थोड़ा ठंडा होने पर निम्लिखित मंत्र से अभिमंत्रित करके स्नान करें:

औषधि- अनंत मूल, देवदारु, लाल चंदन और गुड़हल के पुष्प।

मंत्र- ॐ अं अंगारकाय नमः

बुध ग्रह के लिए औषधि स्नान

अगर कुंडली मे बुध ग्रह शारीरिक व मानसिक कष्ट देने वाला हो तो मिट्टी के एक बर्तन में सभी सामग्री को मंगलवार की रात्रि में भिंगो दें और बुधवार को उस संपूर्ण सामग्री को निम्लिखित मंत्र से 108 बार अभिमन्त्रित करके तथा इसी मंत्र का मानसिक जाप करते हुये स्नान करें:

औषधि- विधारा की जड़ अच्छे से कूट कर, गाय का थोड़ा सा गोबर, कमल गट्टा, छोटा सा कोई हरा फल, शहद और थोड़े से चावल

मंत्र- ॐ बुं बुधाय नमः

बृहस्पति ग्रह के लिए औषधि स्नान

अगर कुंडली मे बृहस्पति ग्रह के कारण कष्ट हो रहा हो तो निम्न वस्तुओं को बुधवार की रात्रि में सोने या पीतल के बर्तन में भिंगोकर रख दें और बृहस्पतिवार की सुबह औषधि से भेरे जल को नीचे दिए गए मंत्र से अभिमंत्रित करके स्नान करें:

औषधि- हल्दी, चमेली, शहद, मुलेठी और गिलोय

मंत्र- ॐ बृं बृहस्पतये नमः

शुक्र ग्रह के लिए औषधि स्नान

अगर कुंडली मे शुक्र ग्रह शत्रु क्षेत्री या नीच अवस्था मे बैठकर कष्ट दे रहा है तो तो निम्न औषधि को गुरुवार की रात्रि में चाँदी के पात्र में भिंगो दें और शुक्रवार की सुबह निम्लिखित मंत्र अभिमंत्रित करने बाद स्नान करने पर लाभ होगा:

औषधि- इलायची, सफेद कमल, मेंसिंल और केसर

मंत्र- ॐ शुं शुक्राय नमः

शनि ग्रह के लिए औषधि स्नान

शनि ग्रह अगर कुंडली मे पीड़ा दे रहा है तो शुक्रवार की रात्रि में एक लोहे के बर्तन में निम्लिखित सामग्री को भिंगोकर रख दें। अगले दिन शनिवार की सुबह नीचे दिए गए मंत्र को बोलते हुए अंगुली जल में घुमाएं और इस अभिमंत्रित जल से स्नान करें:

औषधि- काली उड़द, काले तिल, लौंग और कोई भी सुगंध वाला फूल

मंत्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः

राहु ग्रह के लिए औषधि स्नान

अगर कुंडली मे राहु ग्रह शत्रु क्षेत्री या नीच अवस्था मे बैठके कष्ट दे रहा है तो निम्न औषधि व मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके

काम की बात

बुधवार की शाम या शनिवार की सुबह स्नान करने से ग्रह से सम्बंधित कष्टों से मुक्ति मिलती हैं। औषधि को भिगो कर रखने और स्नान के लिए लोहे का बर्तन उपयोग में लें:

औषधि- तिल, नागबेल, लोबान या कस्तूरी, तिल, मोती, गजमद, लोध्र फूल

मंत्र- ॐ रां राहवे नमः

केतु ग्रह के लिए औषधि स्नान

अगर कुंडली में केतु ग्रह अशुभ अवस्था में बैठकर कष्ट दे रहा है तो निम्नलिखित औषधि को उबालकर छान लें और

108 बार अभिमन्त्रित करके शनिवार या बुधवार को स्नान करने से केतु ग्रह से सम्बंधित कष्टों से निजात मिलती हैं व निम्नलिखित मंत्र से अभिमन्त्रित करके लाभ ले सकते हैं:

औषधि- लोबान, सरसों, देवदारु

मंत्र- ॐ केकेतवे नमः

विशेष सावधानी- उपरोक्त औषधि स्नान के बाद साबुन का प्रयोग ना करें, तभी आपको इसका समुचित लाभ प्राप्त होगा।

एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन

देने के लिए सम्पर्क करें

9810881743, 9560670006

कब बरसेगा पैसा छप्पर फाड़कर?

राज योग रिपोर्ट

अभी खरीदें



कीमत : ₹999 ₹299

खतरनाक है चांडाल योग

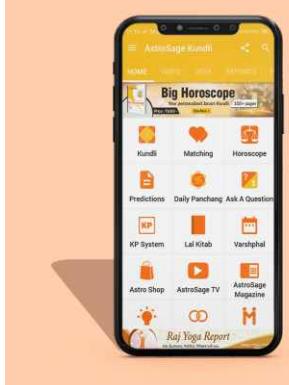


डॉ. सुनील
बरमोला



भारतीय ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जन्मकुंडली में अनेकों शुभ-अशुभ योग निर्मित रूप से मानव जीवन पर सदैव अपना प्रभाव बनाये रखते हैं और समायानुसार मानवता की स्थितियों को प्रभावित करते रहते हैं। बात करते हैं जन्मकुंडली में बन रहे चांडाल योग की। जन्मकुंडली में चांडाल योग राहु और गुरु के युक्त या दृष्टि संबंध से बनता है, जिसे हम गुरु-चांडाल योग के नाम से पुकारते हैं। गुरु ग्रहज्ञान, धर्म, सात्त्विकता का कारक है, तो दूसरी तरफ राहु सदैव व्यक्ति को भ्रम में डुबोये रखता है, व अनैतिक संबंध, अनैतिक कार्य, जुआ, सदृश, नशाखोरी, अवैध व्यापार का कारक है। इन दो ग्रहों के युक्त प्रभाव से जातक की कुंडली में बन रहे गुरु चांडाल योग व्यक्ति को प्रभावशील बनाये रखता है। राहु गुरु के प्रभाव को नष्ट करता है व उस जातक को अपने प्रभाव में जकड़ लेता है और ऐसा राहु हिंसक व्यवहार आदि प्रवृत्तियों को भी बढ़ावा देता है तथा अपने चरित्र पतन के बीज बो देता है और अपने चरित्र को भ्रष्ट कर देता है। गुरु चांडाल से जुड़ा हुआ व्यक्ति सदैव

अनैतिकता तथा अवैध क्रिया- कलापों में मग्न रहता है। चांडाल दोष के निर्माण में ब्रह्मस्ति को गुरु कहा गया है तथा राहु को चांडाल माना गया है। गुरु को चांडाल माने जाने वाले ग्रह से संबंध स्थापित होने से कुंडली में गुरु चांडाल योग का बनना माना जाता है। गुरु चांडाल योग जातक को बहुत अधिक भौतिकवादी बना देता है, जिसके चलते ऐसा जातक अपनी प्रत्येक इच्छा को पूरा करने के लिए अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है। जिसके लिए ऐसा जातक अधिकतर अनैतिक अथवा अवैध कार्यों को अपना लेता है। सामान्य भाषा में कहें तो यह योग शुभ नहीं माना जाता। यह चांडाल योग जिस भाव में होता है, उस भाव के शुभ फलों की कमी करता है पराई स्त्रियों में मन लगवाता है। यदि जन्मकुंडली के लग्न यानि प्रथम भाव, पंचम, सप्तम, नवम या दशम भाव का स्वामी गुरु ग्रह होकर चांडाल योग बनाता हो तो ऐसे व्यक्तियों को जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ता है और अपने भौतिक जीवन में अनेकों बार गलत निर्णयों से नुकसान उठाना पड़ता है। पद-प्रतिष्ठा को भी धक्का लगने की आशंका रहती है।





AstroSage Kundli

Download App Now

[GET IT ON Google Play](#)
[DOWNLOAD ON THE App Store](#)

ध्रुव एस्ट्रो सॉफ्टवेयर : ज्योतिषियों के लिए अनूठी सौगात



देश के नामचीन ज्योतिषी पंडित प्रकाश पांडे ने 2019 में करीब एक हजार लोगों की जन्मपत्री बनाई और देखी। इनमें से अधिकांश लोगों को ज्योतिष के शानदार ज्ञान की वजह से पंडित प्रकाश पांडे पर न केवल अगाध विश्वास है, बल्कि कई मामलों में वे उनके मार्गदर्शक भी रहते हैं। उनके पास नियमित आने वाले कुछ लोग तो कभी भी उनसे फोन कर ज्योतिषीय परामर्श ले लेते हैं, क्योंकि उनकी जन्मपत्री तो पंडित जी अपने लैपटॉप पर सुरक्षित रखते हैं। लेकिन, पिछले कई दिनों से पं. प्रकाश पांडे परेशान हैं, क्योंकि उनका लैपटॉप टूट गया और इस हादसे में खत्म हो गई करीब 10,000 से ज्यादा जन्मपत्रियां। प्रकाश पांडे इकलौते ऐसे ज्योतिषी नहीं हैं, जो इस तरह के हादसे का शिकार हुए हैं। ज्योतिष शिक्षक रमापति त्रिपाठी भी ऐसे ही लोगों में हैं। वह कहते हैं, “मैं जितनी कुंडलियां देखता हूं, उन कुंडलियों को देखने के बाद एक अलग फाइल में उस जन्मपत्री से संबंधित नोट्स

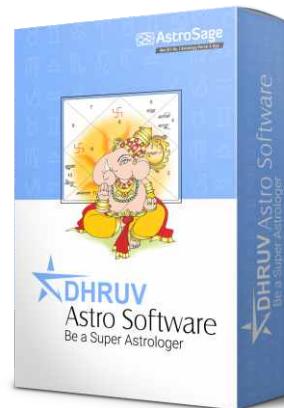
लिखता हूं। लेकिन, एक दिन अचानक मेरा कंप्यूटर खराब हो गया और मेरी कई साल की मेहनत बर्बाद हो गई।” ज्योतिष का गंभीरता से अध्ययन करने वाले देश के लाखों ज्योतिषियों और ज्योतिष के शिक्षक और छात्र कभी ना कभी इस मुश्किल से जूझते हैं, जब अचानक उनकी तैयार जन्मपत्रियां व नोट्स खो जाती हैं

या नष्ट हो जाती हैं। देश की नंबर एक ज्योतिषीय साइट एस्ट्रोसेज ने उनकी इसी समस्या का अब स्थायी हल निकाल दिया है।

जी हां, एस्ट्रोसेज का ‘ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर’ अलादीन के चिराग की तरह ज्योतिष के गंभीर प्रेमियों को समस्या मुक्त करेगा। आप सोच रहे होंगे कि आखिर यह ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर है क्या? तो पहले संक्षिप्त में इस प्लान की खासियत समझिए-

- ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर लेने के बाद आप 200 से अधिक पेज की कुंडली बना सकते हैं, जिसमें वैदिक ज्योतिष से लेकर लाल किताब और केपी सिस्टम से लेकर अंक ज्योतिष तक ज्योतिष की हर पद्धति के साथ जातक की जन्मसंबंधी गणनाएं दर्ज रहती हैं।

- अभी तक ज्यादातर सॉफ्टवेयर 50-100 पेज की कुंडली बनाते हैं, जिन्हें लेकर अकसर ज्योतिष प्रेमियों की शिकायत रहती है कि वो सूक्ष्म अध्ययन नहीं कर पाते।
- ये जन्मपत्री पूरी तरह रंगीन हैं। ले-आउट आकर्षक है। फॉन्ट बड़ा है। और हर अक्षर साफ-साफ पढ़ने लायक है। आकर्षक जन्मपत्री को उलटते-पलटते न केवल आप तेजी से हर आवश्यक गणना तक पहुंच सकते हैं बल्कि ग्राहक का मन भी प्रसन्न होता है क्योंकि उसे साफ साफ सब बातें समझ आती हैं।
- अभी तक किसी सॉफ्टवेयर में रंगीन कुंडली बनाने की सुविधा नहीं है।
- लैपटॉप टूटने, मोबाइल खराब होने और कंप्यूटर चोरी होने जैसी समस्याओं से पूरी तरह छुट्टी। क्योंकि ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेर लेने के बाद आप असीमित जन्मपत्रियां अपने मोबाइल-लैपटॉप पर सुरक्षित रखने के साथ 'क्लाउड' पर भी सुरक्षित रखते हैं। सरल शब्दों में कहें तो कंप्यूटर/मोबाइल चाहें टूटें या खराब हो, आपकी कुंडलियां जीवन भर आपके पास सुरक्षित रहेंगी। इतना ही नहीं, हर जन्मपत्री के साथ की गई आपकी टिप्पणी या नोट्स भी सुरक्षित रहेंगी।
- असीमित कुंडलियों को मोबाइल में सुरक्षित रखना संभव नहीं।
- ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर बनाया एस्ट्रोसेज ने है, लेकिन ब्रांडिंग आपकी होगी। इसका अर्थ यह कि ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर लेने के बाद यदि आप कुंडली बनाते या प्रिंट आउट लेते हैं, तो हर पृष्ठ के नीचे आपका नाम, फोन नंबर और संपर्क पता प्रमुखता से प्रकाशित होगा।
- आपसे जन्मपत्री संबंधी परामर्श करने वाला व्यक्ति यही समझेगा कि जन्मपत्री आपने अपने निजी सॉफ्टवेयर से बनाई है।
- मोबाइल से भी लैपटॉप से भी
- हर डेढ़ साल में लोग मोबाइल बदलते हैं, कुंडली व नोट्स की सुविधा
- अपने क्लाइंट को रत्न-रुद्राक्ष बताते हों तो वह गुणवत्ता की सामग्री 10% डिस्काउंट के साथ



दरअसल, एस्ट्रोसेज का ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर ज्योतिष शास्त्र के हर गंभीर अध्ययनशील व्यक्ति के लिए एक बड़ा तोहफा है। एक ज्योतिषी अपने जीवनकाल में हजारों-लाखों लोगों की जन्मपत्री का अध्ययन करता है। इन जन्मपत्रियों को देख-देखकर वो अपने अनुभव को विराट करता है। ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर उसी अनुभव को बेहतर बनाने में मदद करता है। क्योंकि

काम की बात

- ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेर लेने के बाद आप चाहें जितनी जन्मपत्री बनाएं, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए हार्डडिस्क या मोबाइल फोन स्टोरेज की चिंता की जरूरत नहीं रहती
- प्रोफेशनल ज्योतिषी अपने ग्राहकों को कभी भी किसी भी पल परामर्श देसकते हैं
- ज्योतिष के नए प्रेमियों को टिप्पणियां-नोट्स सुरक्षित

रहने से अध्ययन में बहुत मदद मिलती है

कैसे लें-

एस्ट्रोसेज का ध्रुव क्लाउड सॉफ्टवेयर लेना चुटकी बजाने जितना आसान है।

आप निम्नलिखित लिंक पर आकर ध्रुव एस्ट्रो सॉफ्टवेयर खरीद सकते हैं। यहाँ [क्लिक करें](#)



Pioneer in VR

India's First VR Gaming Company

[Visit Now >](#)



वैलेंटाइन्स डे को स्पेशल कैसे बनाएं



प्यार अपने आप में एक बेहद ही खास अहसास होता है। यूँ तो प्यार का इज़हार करने के लिए किसी खास दिन की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए लेकिन आज के मॉडर्न ज़माने में लोग प्यार का जश्न मनाने और प्यार का इज़हार करने के लिए भी एक खास दिन निर्धारित कर चुके हैं। इस दिन को वैलेंटाइन डे के नाम से जाना जाता है। आजकल के युवाओं में इस खास दिन को लेकर एक अलग ही क्रेज़ देखने को मिलता है।

किसी व्रत-त्यौहार की ही तरह युवा पूरी तरह से इस दिन के नशे में डूब चुके होते हैं। इस दिन को खास बनाने के लिए वो भी कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। ऐसे में युवाओं की इसी समस्या का समाधान हम अपने इस खास आर्टिकल में लेकर आये हैं जिसमें आप भी जान सकते हैं कि वैलेंटाइन का सप्ताह और वैलेंटाइन का दिन आपकी राशि के अनुसार आपके लिए कैसा रहने वाला है।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

मेष राशिफल

वैलेंटाइन का ये हफ्ता मेष जातकों के लिए काफी हसीन जाने वाला है। प्यार के इस हफ्ते में आप अपने पार्टनर के साथ कुछ यादगार लम्हे बिताने वाले हैं। प्यार के इस हफ्ते में आपको सलाह यही दी जाती है कि अगर आपको अपने दिल की बात इस प्यार के हफ्ते उठा सकते हैं।



शादीशुदा जातकों को थोड़ी सावधानी बरतने की ज़रूरत है वरना इस हफ्ते आपकी आपके पार्टनर से थोड़ी नोक-झोक हो सकती है, लेकिन ये हफ्ता प्यार का है तो आपको सलाह यही है कि जितना हो सके अपने मतभेद प्यार से सुलझालें।

वृषभ राशिफल

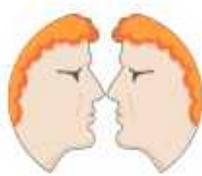
वृषभ राशि के जातक भी इस प्यार के सप्ताह का भरपूर फायदा उठा सकते हैं। इस सप्ताह आपको आपके पार्टनर से भरपूर प्यार मिलेगा और आप इस दौरान उनके साथ कुछ बिताने में सकते हैं। हफ्ते आपको सुझाव है कि आप अपने पार्टनर के साथ किसी रोमांटिक डेट, किसी मूवी डेट, आप अपने पार्टनर को कोई सरप्राइज भी दे सकते हैं। सिर्फ प्यार ही नहीं इस पूरे हफ्ते वृषभ राशि के



जातक अपने पार्टनर के साथ क्वालिटी टाइम भी बिताएंगे जो आपके रिश्ते को और ज्यादा मज़बूती देने का काम करेगा।

मिथुन राशिफल

प्यार के ये हफ्ता मिथुन जातकों के लिए कुछ चुनौतियाँ लेकर आने वाला है। जिन मिथुन जातकों का प्यार सच्चा है उनके लिए ये हफ्ता काफी अच्छा जाने की उम्मीद है। ये समय आपके और आपके पार्टनर के रिश्ते की सच्चाई साबित करने वाला



प्यार सच्चा है तो रिश्ते को और हालाँकि प्यार मिथुन जातकों के

हो सकता है जो अपने पार्टनर को धोखा दे रहे हैं। इसके अलावा इस सप्ताह शादीशुदा जातकों को सावधान रहने की सलाह दी जाती है वरना वाद-विवाद बहस का और फिर लड़ाई का रूप ले सकती है। सप्ताह प्यार का है तो प्यार से ही रहने की सलाह आपको दी जाती है।

कर्क राशिफल

प्यार का ये हफ्ता कर्क जातकों के लिए काफी सामान्य रहने वाला है। हालाँकि आप चाहें तो कुछ खास, कुछ रोमांटिक कर के पार्टनर के लिए ये ज़रूर सकते हैं।



कर्क राशि के की करें तो इस सावधानी बरतनी

होगी वरना आप दोनों के बीच कोई लड़ाई हो सकती है जो भविष्य में बड़ा रूप ले

साबित होगा। अगर

ये समय आपके मज़बूत बना देगा। का ये सप्ताह उन

लिए अशुभ साबित हो सकता है जो अपने पार्टनर को धोखा दे रहे हैं। इसके अलावा इस सप्ताह शादीशुदा जातकों को सावधान रहने की सलाह दी जाती है वरना वाद-विवाद बहस का और फिर लड़ाई का रूप ले सकती है। सप्ताह प्यार का है तो प्यार से ही रहने की सलाह आपको दी जाती है।

सकती है। ऐसे में सलाह यही दी जाती है कि अगर कोई लड़ाई भी होती है तो उसे प्यार से सुलझाने का प्रयास करें। इस दौरान अपने पार्टनर की मनोदशा समझने की कोशिश करें।

सिंह राशिफल

प्यार का ये हफ्ता सिंह राशि के जातकों के लिए काफी खुशियाँ लेकर आने वाला है। इस हफ्ते सिंह जातकों और उनके पार्टनर के बीच खुशियाँ, रोमांस, प्यार, नज़दीकी सब में बढ़ोतरी होने के प्रबल चांस हैं। कुछ सिंह जातक प्यार के हफ्ते का पार्टनर के साथ अगले पड़ाव पर विचार कर शादीशुदा जातकों को अत्यधिक सावधान रहने की ज़रूरत है क्योंकि इस हफ्ते आप दोनों में लड़ाई हो सकती है। जितना हो सके प्यार से अपने मतभेद दूर करें।



कन्या राशिफल

प्यार में पड़े कन्या राशि के जातक वैलेंटाइन वीक में थोड़ा संभल कर चलें यही सलाह दी जाती है क्योंकि घर के किसी अन्य सदस्य की स्थिति आने की पार्टनर और सामंजस्य बनाकर लिए हर दिन वैलेंटाइन शादीशुदा जातकों के लिहाज़ से देखें तो उनके लिए प्यार का ये हफ्ता काफी रोमांटिक और प्यार भरा रहने वाला है।



इस दौरान आप अपने पार्टनर को किसी अच्छी जगह घूमाने ले जा सकते हैं इससे आपका प्यार और परवान चढ़ सकता है।

तुला राशिफल

प्यार का ये हफ्ता तुला राशि के जातकों के लिए काफी अच्छा जाने की उम्मीद है। फिर बात करें प्यार में पड़े जातकों की या तुला जातकों की, ये आप सबके लिए यादगार जाने की दौरान तुला राशि पार्टनर के साथ यादगारपल बिताएंगे और खूब सारी यादें भी बनाएँगी। ये सप्ताह आपके लिए काफी रोमांटिक साबित होने वाला है। इस सप्ताह आपके प्यार में वृद्धि होगी।



राशि के शादीशुदा वैलेंटाइन वीक काफी अच्छा और उम्मीद है। इस के जातक अपने

पार्टनर के साथ यादगारपल बिताएंगे और खूब सारी यादें भी बनाएँगी। ये सप्ताह आपके लिए काफी रोमांटिक साबित होने वाला है। इस सप्ताह आपके प्यार में वृद्धि होगी।

वृश्चिक राशिफल

वृश्चिक राशि के जातक भी इस सप्ताह प्यार का आनंद पूरी तरह से ले सकेंगे। ये प्यार का हफ्ता आपके लिए काफी सारी खुशियाँ लेकर आने वाला है। इस पूरे हफ्ते आप और आपके पार्टनर प्यार में आपका प्यार के इस सप्ताह में और उनके प्रेमी परवान चढ़ेगा। कामना भी नहीं की होगी। इस हफ्ते कुछ वृश्चिक जातक अपने पार्टनर के साथ अपने संबंध को दूसरे पड़ाव पर भी ले जाने की बात छेड़ सकते हैं। इसके अलावा इस राशि के शादीशुदा जातक भी इस समय



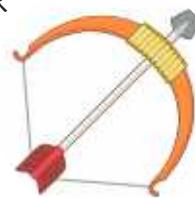
डूबे रहने वाले हैं जिससे काफी बढ़ेगा। प्यार वृश्चिक जातकों का प्यार इस कदर जिसकी आपने

इस हफ्ते कुछ वृश्चिक जातक अपने पार्टनर के साथ अपने संबंध को दूसरे पड़ाव पर भी ले जाने की बात छेड़ सकते हैं। इसके

अपने पार्टनर के साथ कुछ खास पल बिताएंगे जिससे उनके बीच का प्यार काफी बढ़ेगा।

धनु राशिफल

प्यार का ये खास हफ्ता धनु जातकों के लिए भी काफी खास रहने वाला है। इस दौरान प्यार में पड़े जातक प्रेम भरे सफल जीवन का भरपूर आनंद उठा सकेंगे। इस समय आप अपने पार्टनर के और ज्यादा करीब आएंगे। हालाँकि वहीं बात अगर शादीशुदा जातकों की करें तो उन्हें इस समय थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान अगर आपको आपके जीवन को रखना है तो ज्यादा मेहनत होने की बिलकुल ज़रूरत नहीं है आप इस दौरान अपने पार्टनर के साथ कहीं घूमने जाने का प्लान बना सकते हैं, उन्हें कुछ उपहार दे सकते हैं। हफ्ता प्यार का है तो प्यार से ही बात करने की कोशिश करें।



मकर राशिफल

प्यार का ये हफ्ता मकर राशि के जातकों के लिए काफी सुखद और हसीन जाने की उम्मीद है। इस हफ्ते का पूरा फायदा उठाते हुए आपको अपने पार्टनर के साथ प्यार भरी डेट पर बनाते हैं तो ये लिए काफी वहीं बात करें अगर इस राशि के विवाहित जातकों की तो प्यार का ये हफ्ता उनके लिए थोड़ा तनावपूर्ण रह



सकता है। आपके पार्टनर के साथ इस दौरान आपका थोड़ा तनाव हो सकता है। सलाह यही दी जाती है कि प्यार को अपने बीच में से कहीं घटने ना दें।

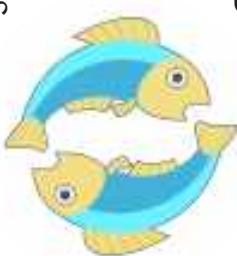
कुंभ राशिफल

कुंभ राशि के जातकों के लिए प्यार का ये सप्ताह अशांति भरा रहने वाला है। इस पूरे हफ्ते आपके और आपके पार्टनर के बीच लड़ाईयां होती रहेंगी। इसके अलावा इस हफ्ते आपके और गुस्से में भी सकती है, ऐसे जाती है कि दूर ना जाने दें। तो उसे खत्म करने की कोशिश करें। प्यार का ये हफ्ता आपको कई ऐसे मौके देगा जब आप अपने प्यार को वापिस पा सकेंगे। बस धैर्य से काम लें।



मीन राशिफल

प्यार का ये हफ्ता मीन राशि के जातकों के लिए हर लिहाज से काफी शानदार जाने वाला है। इस पूरे हफ्ते आप और आपके रहेंगे। इसके विवाहित समय सुख का प्यार के इस दोनों के बीच होगी। आप दोनों इस पूरे समय में एक-दूसरे के प्रति पूरी तरह समर्पित रहेंगे। यानी कि कुल मिलाकर आपके लिए ये समय काफी उपयुक्त रहने वाला है।



आपके पार्टनर के काफी वृद्धि हो में सलाह यही दी प्यार को अपने से लड़ाई हो भी रही है

पार्टनर प्यार में डूबे अलावा जातक भी इस अनुभव करेंगे। हफ्ते में आप आकर्षण में वृद्धि

खास टिप्प्य

वैलेंटाइन डे हर प्रेम करने वालों के लिए बहुत ही खास होता है इस दिन को प्यार का त्यौहार भी कहते हैं। कुछ लोग इस दिन अपने प्यार का इज़हार करते हैं तो वहाँ कुछ लोग अपने प्रेमी के साथ इस दिन को यादगार बनाने के लिए खास तैयारी करते हैं।

अगर आपके पास इस साल वैलेंटाइन डे पर कुछ अलग करने का आईडिया नहीं है तो इसमें हम आपकी मदद करेंगे। अगर इस साल आप यह दिन अपने साथी के राशि अनुसार मनाएंगे तो वाकई में आपका दिन यादगार बन जाएगा।

हम आपको यह बताएंगे कि आपके साथी के राशि अनुसार आपको वैलेंटाइन डे पर क्या करना चाहिए।

मेष

इस राशि के जातक बहुत ही आकर्षक और आदर्शवादी होते हैं। अगर आपका साथी मेष राशि का है तो आप इन्हे इस वैलेंटाइन डे पर किसी संगीत या फिर खेल के कार्यक्रम में ले जाएं।

वृषभ

इस राशि के जातक सौंदर्य और कला प्रेमी प्रेमी होते हैं। यही नहीं ये खाने के भी बहुत शौकीन होते हैं इसलिए आप इन्हें बाहर डिनर कराने किसी खास और उनकी पसंद की जगह पर ले जाएं।

मिथुन

मिथुन राशि वालों को सामाजिक प्रसंग में समय बिताने

में बहुत ही आनंद आता है। इस वैलेंटाइन डे पर आप अपने पार्टनर का वेलकम फूलों के साथ करें और उन्हें किसी ऐसे जगह ले जाएं जहाँ चारों तरफ नृत्य और गायन हो।

कर्क

इस राशि के जातक बहुत ही भावुक होते हैं और जब प्यार की बात हो तो इनके लिए भावनाएं सबसे महत्वपूर्ण होती हैं। ज़रूरी नहीं है कि आप इन्हे महंगे उपहार दें या फिर बाहर ले जाएं। आप साथ रहकर कुछ अच्छे पल बिताकर भी अपना दिन खास बना सकते हैं।

सिंह

इस राशि के जातक में अपने प्रति स्वतंत्रता की भावना रहती है और इन्हे घर के अंदर कैद रहना बिलकुल पसंद नहीं है। अगर आपका पार्टनर सिंह राशि का है तो आप उन्हें बाहर ज़रूर लें जाए। किसी ऐसी जगह जहाँ खास वैलेंटाइन डे के लिए कोई प्रोग्राम आयोजित किया गया हो साथ ही एक रोमांटिक डिनर आपके इस प्रेम के दिन को और भी खास बना देगा।

कन्या

इस राशि के लोग संकोची, शर्मीले और झिझकने वाले होते हैं। आप पहले ही सारी योजना बना लें। कन्या राशि वाले भीड़ पसंद नहीं करते हैं क्योंकि वे बेहतर होगा की आप अपने पार्टनर के साथ उनके पसंद की जगह पर डिनर करें। आपका यह अंदाज उन्हें ज़रूर भाएगा।

तुला

इनका स्वभाव खुशमिजाज होता है और ये व्यावहारिक भी होते हैं। इस राशि के जातक प्यार और रोमांस के मामले में बहुत ही मास्टर होते हैं। इन्हे कला और गायन का भी शौक होता है इसलिए आप इन्हें किसी कला प्रदर्शनी में ले जाए।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि वालों में दूसरों को आकर्षित करने की अच्छी क्षमता होती है लेकिन इन्हें इम्प्रेस करना बहुत ही कठिन होता है। इस राशि के लोग भावुक होने के साथ-साथ कामुक भी होते हैं। इनके लिए तोहफा बहुत सोच समझ कर खरीदें क्योंकि ये सिर्फ दिल से दिए हुए उपहार ही स्वीकार करते हैं। हो सके तो आप इन्हे कहीं बाहर ले जाएं जहाँ आप दोनों कुछ यादगार पल बिता सकें।

धनु

धनु राशि वालों को रोमांच काफी पसंद होता है। ये काफी खुले विचारों के होते हैं। किसी भी प्रकार की बाहरी गतिविधि इन्हें बहुत पसंद है।

मकर

इनका शाही स्वभाव व गंभीर व्यक्तित्व होता है। इन्हें यात्रा करना बेहद पसंद है। आप इन्हें लॉन्ग ड्राइव पर ले जा सकते हैं यही नहीं आप इन्हें अपने साथ शॉपिंग या फिर डिनर पर भी जा सकते हैं। आपका यह सादा अंदाज़ इन्हें ज़रूर भाएगा।

कुंभ

कुंभ राशि वाले लोग व्यवहारकुशल होते हैं। ये स्वंत्रता प्रिय भी होते हैं। इन्हे इम्प्रेस करना मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं। अपने प्यार के दिन को स्पेशल बनाने के लिए आप इनके साथ मिलकर योजना बनाए ताकि आपका यह दिन और भी यादगार बन जाए।

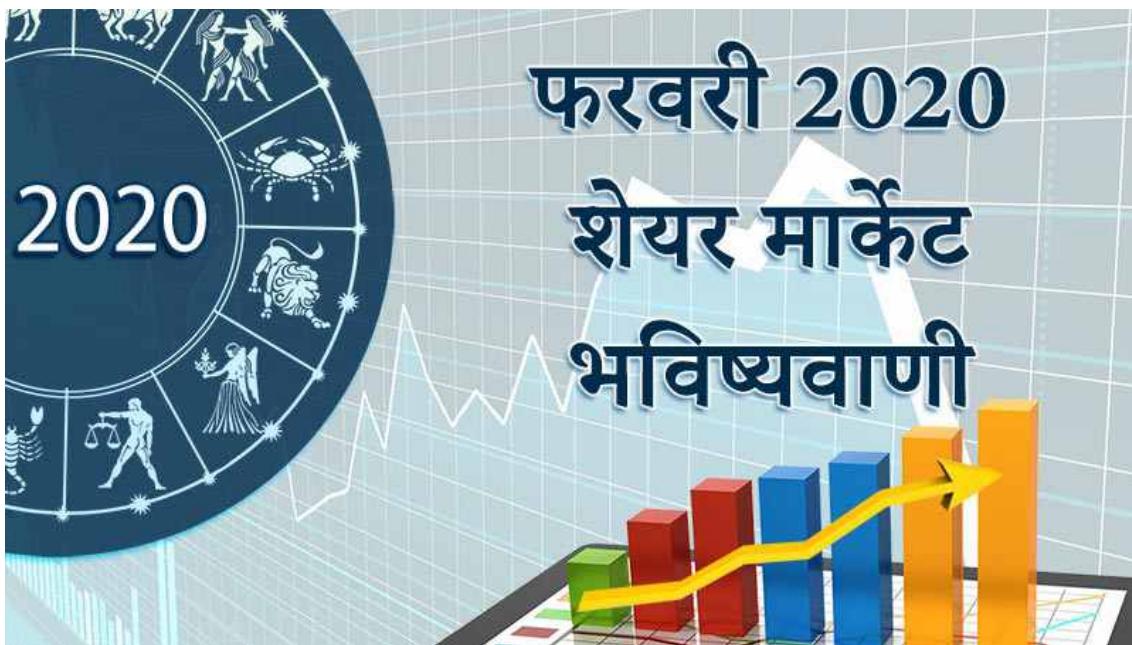
मीन

ये सौंदर्य और रोमांस की दुनिया में रहते हैं। साथ ही ये सादगी में विश्वास रखते हैं इसलिए आप इनके साथ ऐसी जगह पर समय बिताएं जहाँ सिर्फ आप दोनों हों या आप किसी रोमांटिक कैंडललाइट डिनर पर भी जा सकते हैं।

फरवरी में किस चाल चलेगा शेयर बाजार



आचार्य
राजीव
एस खट्टर



शेयर मार्केट भविष्यवाणी 2020 के अनुसार, महीने की शुरुआत में शनि ग्रह की सूर्य के साथ मकर राशि में युति बनेगी। बुध, शुक्र और नेपच्यून कुंभ राशि में रहेंगे। चंद्रमा मेष राशि में यूरेनस के साथ संयोग करेगा, जबकि बृहस्पति, केतु और प्लूटो धनु राशि में रहेंगे। मंगल वृश्चिक राशि में गोचर करेगा जबकि राहु मिथुन राशि में भ्रमण करता रहेगा।

शुक्र 3 तारीख को मीन राशि में प्रवेश करेगा और इस पर शनि की दृष्टि होगी, जिसके परिणामस्वरूप बाजार में अस्थायी गिरावट आ सकती है। लेकिन धीरे-धीरे, घरेलू सामान (सिम्फनी, ब्लू स्टार) के शेयरों में एक मुद्रास्फीति देखी जाएगी और आईटी और सॉफ्टवेयर (टीसीएस, इन्फोसिस) कंपनियों पर गौर किया जाएगा। कच्चे तेल की कीमतों और दरों में वृद्धि देखी जाएगी। व्यापारियों को किसी भी तरह के झांसे में नहीं आना चाहिये, क्योंकि मांग

बढ़ने की संभावना रहेगी। वैश्विक बाजार की स्थिति 12 फरवरी तक व्यापारियों और सटोरियों को बेचैन बनाए रखेगी।

स्टॉक मार्केट 2020 की भविष्यवाणी के अनुसार, 17 तारीख को बुध ग्रह वक्री गति करेगा। मंदी का माहौल सूचकांक को गिरा देगा। हालांकि, 22 तारीख को बाजार और सूचकांक में

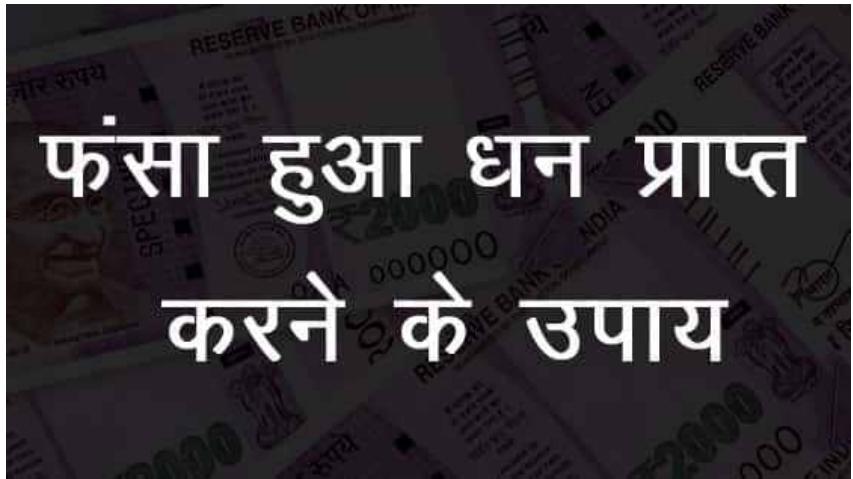
तेजी देखी जाएगी। फार्मा (सन, फाइजर, डॉ. रेडीज), मीडिया और कैपिटल गुड्स (हैवेल्स) स्टॉक मार्केट 2020 भविष्यवाणी के अनुसार मांग में रहेंगे। शुक्र मेष राशि में प्रवेश करेगा जहां बृहस्पति की दृष्टि भी उसपर होगी। एफएमसीजी, गेहूं, एडिबल्स, तेल, सरसों, ऊन और गुड़ के स्टॉक गिरने की संभावना है, जबकि सूचकांकों में तेजी का रुख रहेगा।

Innovation in
Career Counselling:

CogniAstro™
Right Counselling, Bright Career

[Know More](#)

फंसा हुआ धन प्राप्त करने के उपाय



हमारे जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित हो जाती हैं जिससे कि उधारी में हमारे पैसे डूबने, रुकने या फिर फंसने की नीबत आ जाती है। ऐसे में फंसा हुआ धन पाना मुश्किल हो जाता है और हम उसको लेकर परेशान होते हैं, हमारी रातों की नींद उड़ जाती है और दिन का चैन खो जाता है। पैसा फंसने पर आपके मन कई तरह के सवाल आते होंगे। जैसे- फंसा हुआ धन वापस कैसे लें?, फंसा धन पाने के क्या तरीके हैं? फंसा धन कैसे पाया जाए? पैसा वापस पाने के उपाय क्या हैं? रुका हुआ धन प्राप्ति के उपाय क्या है? इत्यादि। इसलिए फंसा हुआ पैसा निकालने के उपाय हमारे लिए बहुत ज़रुरी हैं। इसके साथ ही यदि किसी व्यक्ति ने आपसे पैसे उधार लिए हैं और वह उस उधारी को चुकाने के लिए आनाकानी कर रहा है तो आपके लिए इस लेख में उधारी वसूलने के उपाय दिए जा रहे हैं। इन उपाय को कर आप आसानी से अपना उधार दिया पैसा वापस पा सकेंगे। रुका हुआ पैसा निकालने के उपाय से संबंधित इस लेख में बहुत ही सरल उपाय बताए गए जा रहे हैं।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण

ज्योतिष शास्त्र में फंसा हुआ धन प्राप्त करने के उपाय के तहत विस्तृत उल्लेख है। परंतु इससे पहले हम आपको ज़रुरी बिंदुओं को बताना सही समझते हैं। यदि आपकी कुंडली में गुरु एवं शुक्र ग्रह मज्जबूत हैं तो आपके रुके हुए धन के वापस आने के योग हैं। इसके विपरीत यदि कुंडली में मंगल, शनि एवं राहु अशुभ हों तो आपको धन हानि होगी। कुंडली में

दशम भाव हमारे कर्म का और नवम भाव भाग्य का होता है। वहाँ ग्यारहवां भाव लाभ का और दूसरा भाव हमारे द्वारा कमाए गए धन का होता है। जन्म कुंडली में छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी कुंडली में हावी हों तो धन हानि, कर्ज और धन चोरी का सामना करना पड़ता है इसलिए किसी भी ज्योतिषीय उपाय को आजमाने से पूर्व किसी ज्योतिष के ज्ञानी को इन भावों को अवश्य दिखाएं।

धन वापस पाने के ज्योतिषीय उपाय

- कुंडली में शुक्र व गुरु को मज्जबूत करें
- कुंडली में द्वितीय, नवम, दशम एवं एकादश भाव एवं इनके भावेशों को मज्जबूत करें
- कुडली में शनि, राहु एवं मंगल यदि बुरे भाव में हैं तो उनकी शांति का उपाय करें
- पितृ दोष निवारण के उपाय करें
- पूर्ण विधि के साथ श्रीयंत्र को स्थापित करें

- नियमानुसार महालक्ष्मी यंत्र को स्थापित करें
- व्यापार वृद्धि यंत्र को स्थापित करें
- पूजा विधि के अनुसार श्री धन वर्षा यंत्र को स्थापित करें
- गणेश लक्ष्मी रुद्राक्ष (दो सातमुखी एवं एक आठ मुखी रुद्राक्ष) धारण करें
- कुबेर यंत्र की आराधना करें
- श्रीसूक्त का पाठ करें

फंसा हुआ धन प्राप्त करने का मंत्र

मंत्रों में शक्ति समाहित होती है। अतः फंसे हुए धन को पाने के लिए निम्न मंत्र को जपना चाहिए -

“ॐ क्रीं कृष्णाय नमः”

कृष्ण बीज मंत्र का जाप करने से फंसा हुआ धन वापस आता है।

अष्टदलोपरिवेष्टित लिंगं, सर्वसमुद्भवकारण लिंगं।
अष्टदरिद्रविनाशित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगं॥

अर्थ- आठों दलों में मान्य, एवं आठों प्रकार के दरिद्रता का नाश करने वाले सदाशिव लिंग सभी प्रकार के सृजन के परम कारण हैं- आप सदाशिव लिंग को प्रणाम।

“ॐ आदित्याय नमः”

इस मंत्र का जाप करने से पूर्व स्नान करें और तांबे के पात्र जल भरें और इसमें लाल मिर्च के 11 बीज डालें और फिर सूर्योदय को यह जल अर्पण करें और पैसे वापसी की प्रार्थना करें।

फेंगशुर्झ दृष्टि कोण के अनुसार फंसा हुआ धन पाने के उपाय

फेंगशुर्झ के अनुसार दक्षिण-पूर्व दिशा को धन का कोना माना जाता है। घर में इस दिशा में हरे-भरे पौधों को लगाना चाहिए। इस दिशा को हरा रखने से जीवन में धन का आगमन होता है। यह फंसा हुआ धन पाने का बेहद कारगर उपाय है।

वास्तु दृष्टिकोण रुक्ता हुआ धन वापस पाने के उपाय

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में उत्तरी दिशा में भगवान कुबेर का स्थान होता है। इसलिए इस दिशा में धन की तिजोरी होनी चाहिए। इसके अलावा इस दिशा में कुबेर यंत्र अथवा माँ लक्ष्मी व कुबेर देव की मूर्ति रखने से भी आपका रुक्ता हुआ धन वापस आएगा।

बेरोज़गारी से हैं परेशान, जानें समाधानः नौकरी पाने के उपाय

फंसा हुआ धन पाने के टोटके

- शनिवार को दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर हनुमान जी की प्रतिमा के आगे सरसों के तेल का दीया जलाएँ। उस दीये पर सरसों के कुछ दाने, 2 लौंग और एक कपूर डालें। अब तीन बार बजरंग बाण का पाठ करें। फिर हनुमान जी से रुका हुआ धन पाने की प्रार्थना करें। अब दीपक में से 2 चम्मच तेल निकालें और उसका काजल बनाएं। अब किसी मुलायम वस्त्र पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसको आपने धन दिया है। अब इस कपड़े की बत्ती बनाएं। अब आटे के दीपक में तिल का तेल

डाल कर इस बत्ती को पुनः हनुमान जी के सामने जलाएँ और दोबारा 5 बार बजरंग बाण का पाठ करें। फंसा हुआ धन आपको वापस मिल जाएगा।

- 2 राजा कौड़ी (यह किसी भी पूजा की दुकान पर मिल जाएगी) उस व्यक्ति के घर के सामने डाल दें जिसको आपने धन दिया है। इस टोटके से वह आपको आपके पैसे वापस कर देगा। यह फंसा हुआ धन पाने का आसान उपाय है।
- ऐसा माना जाता है कि पीली कौड़ी माँ लक्ष्मी जी का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए पाँच पीली कौड़ी पूजा के स्थान पर रख दें। इससे आपका फंसा हुआ धन वापस आने लगेगा।
- शुक्रवार के दिन कपूर जलाकर उसका काजल बना लें। अब एक भोजपत्र पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसको आपने पैसा दिया है। अब इस भोजपत्र पर सात बार थपकी देकर इसे अपनी तिजोरी में दबाकर रख लें। इस उपाय से आपका रुका हुआ धन वापस आने लगेगा।

- 11 लौंग, 11 साबुत नमक की डली को नीले कपड़े में बांध दें और उस व्यक्ति का ध्यान करते हुए रात्रि 10 बजे के आस-पास किसी चौराहे पर जाकर चुपचाप इसे रख कर आ जाए। ऐसा करने से दिया हुआ धन वापिस मिलने लगेगा। यह फंसा हुआ धन प्राप्ति का सरल उपाय है।
- मंगल एवं बुधवार को क्रङ्ग का लेनदेन न करें। शास्त्रों में ऐसा कहा जाता है कि मंगलवार को कभी क्रङ्ग नहीं लेना चाहिए। इस दिन क्रङ्ग लेने वाला व्यक्ति हमेशा क्रङ्ग के बोझ तले दबा रहता है। वहीं बुधवार के दिन कभी उधार नहीं देना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि इस दिन दी गई उधारी के वापस आने के योग कम होते हैं।
- हम आशा करते हैं कि फंसा हुआ धन प्राप्ति के उपाय के माध्यम से आपको आपका धन प्राप्त हो सके। एस्ट्रोसेज की ओर से आपको उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामनाएँ!





AstroSage Kundli

Download App Now

[GET IT ON
Google Play](#)
[DOWNLOAD ON THE
App Store](#)

एक रिपोर्ट बच्चों का करियर संवार सकती है

EUREKA



CogniAstro™
Right Counselling, Bright Career

Innovation in
Career Counselling

करियर का सही चुनाव हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण निर्णय होता है। लेकिन इस फैसले को लेना हमारे लिए आसान नहीं होता। इसलिए अक्सर हम अपने बच्चों के करियर और उनके भविष्य के लिए चिंतित रहते हैं। एक छात्र के लिए दसवीं के बाद की पढ़ाई उसके करियर की मजबूत नींव को रखने में अहम भूमिका अदा करती है। लेकिन अक्सर छात्र इसी पड़ाव में करियर को लेकर भ्रमित हो जाता है। इसलिए कोग्निएस्ट्रो ने ज्योतिष और मनोविज्ञान के आधार पर ऐसे सिस्टम को तैयार किया है

जिससे छात्रों की करियर से जुड़ी परेशानियाँ झट से दूर हो जाएंगी।

आंकड़ों के अनुसार देश में करीब 250 करियर क्षेत्र हैं लेकिन अधिकांश लोगों को बहुत कम की जानकारी होती है। इसलिए लगभग 70 फीसदी अपने-अपने क्षेत्र में काम करने वाले लोग अपनी जॉब से असंतुष्ट दिखाई देते हैं। वास्तव में यह एक बड़ी समस्या है। इसी समस्या को दूर करने के लिए कोग्निएस्ट्रो करियर परामर्श रिपोर्ट को बनाया गया है, जिसकी सहायता से छात्र अपने लिए सही करियर का चुनाव कर सकेंगे। कोग्निएस्ट्रो के साथ अपने बच्चे के भविष्य को बनाएं शानदार और करियर से जुड़ी सभी समस्याओं को कहें अलविदा।

कोग्निएस्ट्रो- करियर काउंसलिंग

का एक नया स्वरूप

कोग्निएस्ट्रो का उद्देश्य लोगों की सेवा कर उनके जीवन को आसान और बेहतर बनाना है। इसी क्रम में करियर काउंसलिंग रिपोर्ट के माध्यम से छात्र स्वयं के लिए या माता-पिता अपने बच्चों के लिए करियर का सही चुनाव कर उनके सुनहरे भविष्य के निर्माण में सफल रहेंगे। अगर आप पूरी ईमानदारी के साथ कोई कार्य करते हैं तो आपको उसमें आनंद आता है। यह न केवल आपकी उत्पादकता के लिए अच्छा होता है बल्कि आप अपने

बेहतरीन कार्य से समाज की प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और कोग्निएस्ट्रो अपनी करियर परामर्श रिपोर्ट के साथ इसी लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है।

करियर चयन से जुड़ा हुआ कोग्निएस्ट्रो का यह एक अनूठा प्रयोग है, जिसके तहत महान मनोविश्लेषक कार्ल यंग के शोध और ज्योतिष विज्ञान की सहायता से करियर परामर्श रिपोर्ट को तैयार किया गया है। यह रिपोर्ट व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन कर यह बताती है कि आप किस क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। यह रिपोर्ट मनोविज्ञान पर आधारित अन्य रिपोर्ट की अपेक्षा ज्यादा सटीक है। इस रिपोर्ट में है -

करियर से जुड़ी सभी समस्याओं का समाधान: अब आप अपने बच्चों के करियर को लेकर सारी चिंताओं को भूल जाएंगे। कोग्निएस्ट्रो रिपोर्ट में दिया गया परामर्श आपके बच्चे की कुंडली के आधार पर दिया जाता है, जिसमें उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण कर यह बताया जाता है उसके करियर के लिए कौन-सा विषय या स्ट्रीम उसके लिए सबसे बेहतर है। यह रिपोर्ट उनके सुनहरे भविष्य को बनाने में कारगर है।

सटीक करियर काउंसलिंग रिपोर्ट: करियर काउंसलिंग रिपोर्ट को कोग्निएस्ट्रो की रिसर्च टीम के द्वारा लैब में टेस्ट किया गया है जिससे यह प्रमाणित होता है कि यह रिपोर्ट अन्य साइक्लोजिकल टेस्ट की अपेक्षा 98 फीसदी अधिक सटीक है। इस रिपोर्ट में करियर से जुड़ी सभी समस्याओं का समाधान और बच्चों के व्यक्तित्व के आधार पर उनके बेहतर भविष्य को बनाने के लिए महत्वपूर्ण परामर्श निहित हैं।

एनालिटीकल साइक्लोजी: प्रसिद्ध मनोविश्लेषक कार्ल यंग के शोध पर आधारित कोग्निएस्ट्रो रिपोर्ट आपके व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन कर आपके सामने करियर के द्वे विकल्प देती है। इसमें व्यक्तित्व का मूल्यांकन रियासेक (RIASEC) मॉडल के आधार पर होता है।

पारम्परिक (CONVENTIONAL)

कलाकार (ARTISTIC)

खोजकर्ता (INVESTIGATIVE)

यथार्थवादी (REALISTIC)

सामाजिक (SOCIAL)

उद्यमी (ENTERPRISING)

- कोग्निएस्ट्रो = संज्ञानात्मक विज्ञान + ज्योतिष :** चूंकि जातक का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन उनकी कुंडली पर आधारित होगा इसलिए यह रिपोर्ट जीवन भर के लिए सटीक और वैध है। अगर उम्र या अनुभव के जरिये मनोवैज्ञानिक स्तर पर कोई परिवर्तन आया तो इसके बावजूद भी इस रिपोर्ट में कोई परिवर्तन नहीं आएगा।
- सभी वर्ग के लोगों के लिए उपलब्ध है यह रिपोर्ट:** अगर आप इस बात को लेकर चिंतित हैं कि दसवीं के बाद आपको कौन से विषय या स्ट्रीम का चुनाव करना है या अपने करियर को लेकर परेशान हैं, तो कोग्निएस्ट्रो करियर रिपोर्ट और व्यक्तित्व परामर्श के जरिये आपको आपके लिए सबसे उपयुक्त करियर औपशम के बारे में जानकारी मिल जाएगी।



- उलझन से निश्चितता की ओर:** मनोविज्ञान आधारित रिपोर्ट्स की तुलना में कोग्निएस्ट्रो कई मायने में बेहतर है क्योंकि यह आपके बच्चे के भविष्य को लेकर बताती है कि उन्हें किन विषयों का चुनाव करना चाहिए और कौन सी स्ट्रीम लेनी चाहिए। इस रिपोर्ट के जरिये आपको पता चलता है कि आपके बच्चे किन क्षेत्रों में सफलता हासिल कर सकते हैं। यह रिपोर्ट आपके दिलो-दिमाग से सारी उलझनों को दूर कर, आपके बच्चों के अनुकूल सही विषयों का चुनाव करने का बेहतर विकल्प प्रदान करती है।

1 कॉर्मस (वाणिज्य)

मुख्य विषय: अर्थशास्त्र, लेखा पद्धति एवं बिज़नेस स्टडीज
वैकल्पिक विषय: गणित, भौगोल, मनोविज्ञान, मल्टीमीडिया/एनिमेशन, मार्केटिंग/इंटरप्रॉरशिप, और शारीरिक शिक्षा

2 मानविकी (हायूमेनिटीज)

मुख्य विषय: प्राज्ञीति विज्ञान, इतिहास, भौगोल एवं अंग्रेजी
वैकल्पिक विषय: गणित, गृह विज्ञान, शारीरिक शिक्षा, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान

3 पीसीएम (नॉन-मैडिकल स्ट्रीम)

मुख्य विषय: भौतिक, रसायन एवं गणित
वैकल्पिक विषय: जैव प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान, शारीरिक शिक्षा और कंप्यूटर विज्ञान।

- सटीक मूल्यांकन:** कोग्निएस्ट्रो रिपोर्ट में आपके व्यक्तित्व का सटीक मूल्यांकन है। इस रिपोर्ट को पाने के लिए आपको केवल अपने जन्म की तारीख, समय,

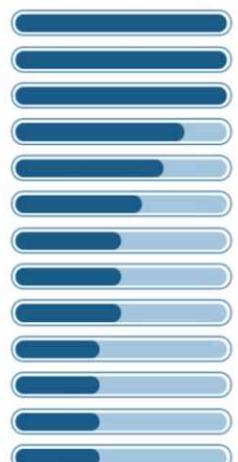
और जन्म का स्थान बताना होगा और आपको अपनी करियर और व्यक्तित्व परीक्षण रिपोर्ट जल्द ही प्राप्त हो जाएगी।

- छात्रों के लिए करियर और व्यक्तित्व परामर्श रिपोर्ट दसर्वां कक्षा तक:** अपने व्यक्तित्व मूल्यांकन के अलावा अपने बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्ट्रीम व विषय के साथ-साथ सही कॉलेज और करियर विकल्प चुनने का महत्वपूर्ण निर्णय भी आसानी ले सकते हैं।

खण्ड 3.2: विषय अनुशंसाएँ

यहाँ नीचे विषयों की रैंक अनुसार सूची दी गई है, जिसका चुनाव आप कर सकते हैं।

- | | |
|----|------------------------------------|
| 1 | अकाउंटेंटी |
| 2 | बिज़नेस स्टडीज |
| 3 | अर्थशास्त्र |
| 4 | मार्केटिंग/इंटरप्रॉरशिप |
| 5 | राजनीति विज्ञान |
| 6 | इतिहास |
| 7 | मल्टीमीडिया/एनिमेशन/ग्राफिक डिजाइन |
| 8 | भौतिक विज्ञान |
| 9 | समाजशास्त्र |
| 10 | कंप्यूटर साइंस |
| 11 | जैव विज्ञान |
| 12 | रसायन विज्ञान |
| 13 | भौगोल |



ये रिपोर्ट 10 वीं, 12 वीं के छात्रों के साथ प्रोफेशनल्स के लिए उपलब्ध है।

<https://buy.astrosage.com/service/cognitro-career-counseling->

**एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन
देने के लिए सम्पर्क करें**

9810881743, 9560670006



आयुषी
चतुर्वेदी

भोले की भक्ति का दिन महाशिवरात्रि

महादेव की कृपा
पाने के लिए
महाशिवरात्रि पर
अवश्य करें ये काम



भोले नाथ के भक्त साल भर इस खास दिन का इंतज़ार करते हैं जब वो अपनी श्रद्धा-भक्ति से भगवान शिव को प्रसन्न कर सके और बदले में सालभर शिवजी की कृपा प्राप्त कर सकें। इस दिन भगवान शिव के रुद्राभिषेक की भी प्रथा है। तो अपने इस खास आर्टिकल में हम आपको बताएँगे इस दिन रुद्राभिषेक का महत्व। तो आइये जानते हैं कि इस दिन भगवान शिव की भक्ति से कैसे आपको भी मिल सकता है उनका अनुपम वरदान।

हिन्दू धर्म में महाशिवरात्रि के त्यौहार को लेकर अनेकों तरह की पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इसी दिन भगवान शिव लिंग रूप में प्रकट हुए थे। यही वजह है जिसके चलते भगवान शिव के निराकार से साकार रूप में अवतरण की इस रात को महा-शिव *रात्रि* कहा जाता है। हर साल फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन महाशिवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है। हालाँकि वहीं अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार यह तारीख फरवरी और मार्च के महीने में आती है। इस वर्ष भी महाशिवरात्रि 21 फरवरी को मनाई जाएगी। इस दिन

रुद्राभिषेक का भी बहुत महत्व माना गया है। कहते हैं कि इस दिन भगवान शिव का रुद्राभिषेक करने से रोग, किसी भी तरह का कोई दुःख और तमाम कष्टों का नाश हो जाता है और मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव से सच्चे मन से जो भी माँगा जाता है वो उसे अवश्य ही पूरा करता है।

महाशिवरात्रि पूजन मुहूर्त

निशीथ काल पूजा मुहूर्त- 24:09:17 से 24:59:51 तक
अवधि: 0 घंटे 50 मिनट

महाशिवरात्रि पारणा मुहूर्त: 06:54:45 से 15:26:25 तक 22, फरवरी को

नोट: यह मुहूर्त नई दिल्ली के लिए है। जानें अपने शहर में पूजन का मुहूर्त और विस्तृत पूजा विधि - [महाशिवरात्रि 2020 के लिए आपके शहर में पूजन का मुहूर्त](#)

महाशिवरात्रि पर भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए ऐसे करें उनकी पूजा

भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न करने का एक बेहद सरल और सटीक उपाय बताया गया है और वो है भगवान शिव का रुद्राभिषेक। रुद्राभिषेक से भगवान शिव ना सिर्फ प्रसन्न होते हैं बल्कि इससे वो अपने भक्तों पर साल भर अपनी कृपा बनाये रखते हैं।

महाशिवरात्रि के दिन इस पूजन विधि से भगवान शिव की करें आराधना :

- महाशिवरात्रि की रात हो सके तो व्रत रखें और दिन में केवल फल और दूध ग्रहण करें।
- इस दिन भगवान शिव की पूजा के दौरान शिव पुराण
- का पाठ करें, महा-मृत्युंजय मन्त्र का जाप करें, और ‘ॐ नमः शिवाय’ मन्त्र का शांत मन से जाप करें। इसके अलावा इस रात में जागरण करना भी अत्यधिक फलदायी बताया गया है। तो अगर मुमकिन हो तो महाशिवरात्रि की रात जागरण अवश्य करें।
- इसके अलावा रात के चारों पहरों में भगवान शिव का अभिषेक और आराधना करें। हालांकि निशीथ काल में शिव पूजन का विशेष महत्व बताया जाता है।

महाशिवरात्रि का महत्व

जब माता पार्वती ने भगवान शंकर से पूछा कि, ऐसा कौन सा व्रत है जो भक्तों को सर्वोत्तम भक्ति और पुण्य प्रदान करने वाला होता है? तब भगवान शिव ने जवाब में महाशिवरात्रि के ही व्रत-उपवास का वर्णन किया था। माता पार्वती के सवाल के जवाब में भोलेनाथ ने बताया था कि जो कोई भी भक्त महाशिवरात्रि का व्रत करता है और इस दिन विधि-विधान से मेरी पूजा करता है, वो मेरी प्रसन्नता अवश्य प्राप्त कर लेता है। इस व्रत-पूजा के प्रभाव से इंसान के सभी दुःख-दर्द भी गायब हो जाते हैं।

इस दिन को आदि शक्ति के मिलन की रात्रि भी कहा जाता है, ऐसा इसलिए क्योंकि मान्यता के अनुसार इसी दिन भगवान शिव और आदि शक्ति का विवाह हुआ था। ऐसे महाशिवरात्रि के दिन को शिव और आदि शक्ति के मिलन की रात्रि भी कहा जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में महाशिवरात्रि का महत्व
हिंदू धर्म के अनुसार चतुर्दशी तिथि के स्वामी भगवान शिव हैं, यही वजह है कि हर महीने की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। इसके अलावा यहाँ ये भी जानना बेहद ज़रूरी है कि वैदिक ज्योतिष में चतुर्दशी तिथि को बेहद शुभ बताया गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन चंद्रमा सूर्य के सबसे समीप होता है। यह वह समय होता है जब जीव रूपी चंद्रमा का शिवरूपी सूर्य के साथ मिलन होता है। इसलिए इस दिन शिव पूजन से शुभ फल की प्राप्ति होती है। भगवान शिव काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से मुक्त करके परम सुख, शांति और ऐश्वर्य प्रदान करते हैं।



महाशिवरात्रि से जुड़ी पौराणिक कथा

महाशिवरात्रि से जुड़ी यूँ तो कई कथाएं प्रचलित हैं लेकिन इनमें से एक कथा जिसका ज़िक्र गरुड़ पुराण में भी किया गया है जिसके अनुसार, ‘एक बार की बात है जब एक निषादराज अपने कुत्ते के साथ शिकार खेलने गए थे। काफी देर भ्रमण करने के बाद भी उन्हें कोई शिकार नहीं मिला। काफी देर हो चुकी थी ऐसे में थकान महसूस होने के बाद भूखा-प्यासा निषादराज एक तालाब के किनारे गया जहाँ एक बिल्व वृक्ष था जिसके नीचे एक शिवलिंग

मौजूद था। यहाँ पहुंचकर उसने कुछ बिल्व-पत्र तोड़े, जो शिवलिंग पर भी गिर गए। इसके बाद जब उसने अपने पैरों को साफ़ करने के लिए उनपर तालाब का जल छिड़का, तो पानी की कुछ बून्दें शिवलिंग पर भी जा गिरीं। ऐसा करते समय उसका एक तीर नीचे गिर गया; जिसे उठाने के लिए वह शिव लिंग के सामने नीचे को झुका। इस तरह शिवरात्रि के दिन शिव-पूजन की पूरी प्रक्रिया उसने अनजाने में ही पूरी कर ली। इसके बाद जब निषादराज की मृत्यु के बाद यमदूत उसे लेने आए, तब तो

शिव के गणों ने उनकी रक्षा करते हुए यमराज को हटा दिया।

ऐसे में आप खुद ही सोचिये कि जब अनजाने में महाशिवरात्रि की पूजा का भगवान शंकर इतना अद्भुत फल देते हैं, तो समझ-बूझ कर और पूरी विधि-विधान से की गयी महादेव का पूजन कितना अधिक फलदायी होगी।

Lab Certified Gemstones

Genuine Gemstones at best price

EUREKA



Innovation in
Career Counselling:

CognAstroTM
Right Counselling, Bright Career

Know More

अंक ज्योतिष से जानें लकी मोबाइल नंबर



एस्ट्रोगुरु
मृगांक



जीवन में भाग्य का साथ मिलना बेहद जरूरी है। क्योंकि यदि भाग्य साथ नहीं तो कितनी भी मेहनत कर ली जाए उसका मन चाहा परिणाम प्राप्त नहीं हो सकता। जिस प्रकार हमारे नाम का महत्व होता है उसी प्रकार जीवन में अंकों का भी महत्व होता है। इसलिए ज़रूरी है कि आपका मोबाइल नंबर ऐसा नंबर हो जो आपके जीवन के अंकों से मेल खाता हो और आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध हो।

इस लेख के माध्यम से हम आपको बताएंगे कि अंक ज्योतिष के द्वारा विभिन्न अंकों का आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है और उनका आपके जीवन में क्या महत्व है, जिसके आधार पर आप अपना लकी मोबाइल नंबर जान सकते हैं।

कौन सा नंबर मेरे लिए भाग्यशाली होगा

जब भी आप मोबाइल कनेक्शन लेते हैं तो नंबर लेते समय इस बात का ध्यान रखें कि मोबाइल का नंबर जिन-जिन अंकों से मिलकर बना है उनका आपके जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता है। इसके लिए आपको अपनी जन्मतिथि के अनुसार अपने मूलांक और भाग्यांक से मिलता हुआ अथवा उनके लिए शुभ और भाग्यशाली अंक का मोबाइल नंबर उपयोग करना चाहिए।

मूलांक और भाग्यांक क्या हैं

लकी मोबाइल नंबर के बारे में जानने से पहले हमारे लिए जानना आवश्यक है कि मूलांक (Root Number) और भाग्यांक (Destiny Number) क्या है? इसको हम एक उदाहरण के द्वारा आसानी से समझ सकते हैं:

किसी की जन्म की तारीख के अंकों का योग मूलांक और पूरी जन्म तिथि के अंकों का योग भाग्यांक कहलाता है। कुल योग को तब तक जोड़ते जाते हैं जब तक कि उत्तर 1 से 9 के बीच में ना आ जाए।

उदाहरण के लिए यदि किसी की जन्म तिथि 22 अप्रैल 1983 है तो:

उसका मूलांक होगा $2+2 = 4$ और

उसका भाग्यांक होगा $2+2+4+1+9+8+3 = 29 = 2 + 9 = 11 = 1 + 1 = 2$

अर्थात् 22 अप्रैल 1983 को जन्मे हुए व्यक्ति का मूलांक 4 और भाग्यांक 2 होगा। क्योंकि यहां भाग्य अंक अर्थात् भाग्य का अंक दो है अतः व्यक्ति के जीवन में 2 अंक बहुत महत्वपूर्ण होगा क्योंकि इसी से उसके भाग्य की उन्नति होगी।

कैसे जानें अपना लकी मोबाइल नंबर

अब जिस प्रकार आपने अपना भाग्य अंक ज्ञात किया है उसी प्रकार अपने मोबाइल के अंकों के योग को तब तक जोड़ते जाएं जब तक कुल अंक 1 से 9 के बीच में ना प्राप्त हो जाए।

जैसे- यदि किसी व्यक्ति का मोबाइल नंबर 9810098100 है तो इस मोबाइल नंबर के अंकों का कुल योग होगा $9+8+1+0+0+9+8+1+0+0=36 = 3+6 = 9$

अर्थात् इस मोबाइल नंबर का योगांक अथवा शुभांक 9 हुआ। वैसे तो 9 अंक सबसे शुभ माना जाता है लेकिन विशेष रूप से यह अंक उन लोगों के लिए अधिक शुभ होगा जिनका भाग्यांक 9 हो अथवा 9 से मित्रता रखने वाला हो।

मोबाइल नंबर लेते समय ध्यान रखने योग्य बातें

जब भी आप कोई नया मोबाइल कनेक्शन लेने जाएं तो कुछ बातों का अवश्य ध्यान रखें जैसे कि मोबाइल के अंक यदि आरोही अर्थात् बढ़ते हुए क्रम में होंगे तो आप के

जीवन में उन्नति प्राप्त होगी इसके विपरीत यदि मोबाइल के अंक अवरोही अर्थात् घटते हुए क्रम में होंगे तो जीवन में परेशानियां और कष्ट आ सकते हैं।

यदि आपके मोबाइल में 8 का अंक बार बार आता है तो यह अनलकी नंबर होता है। इसके कारण आपके जीवन में परेशानियां बढ़ सकती हैं और आपको विभिन्न प्रकार की समस्याओं और आलोचनाओं का शिकार होना पड़ सकता है। हालांकि 8 अंक वालों के लिए यह शुभ होता है। इसके विपरीत यदि आपके मोबाइल में 9 का अंक आता है तो यह अत्यधिक शुभ अंक होता है। इसके कारण आपके ज्ञान में वृद्धि होती है तथा आपको पसंद से प्राप्त होती है। आप धनवान बनते हैं और आपका भाग्य आपका साथ देता है। इसलिए मोबाइल लेते समय इस बात का ध्यान रखें कि आपके मोबाइल नंबर की संख्या में 8 का अंक कम से कम हो और 9 का अंक अधिक से अधिक।



भाग्यांक से जानें अपना लकी मोबाइल नंबर

ऊपर हमने बताया कि आप कैसे अपना भाग्यांक जान सकते हैं। अब हम आपको बताएँगे कि आपको अपने

भाग्य अंक के अनुसार कौन-कौन से योगांक अथवा शुभांक वाला मोबाइल नंबर लेना चाहिए और कौन सा अंक नहीं लेना चाहिए। इसके साथ ही आप निम्नलिखित विवरण से यह भी जान सकते हैं कि आपको अपना मोबाइल किस तिथि को और किस दिन लेना ज्यादा शुभ रहेगा और किस दिन नहीं:

यदि आपका भाग्यांक 1 है तो आपके लिए

- शुभ महीने जनवरी, मार्च, मई, जुलाई और अक्टूबर हैं
- शुभ दिन रविवार और गुरुवार हैं तथा
- शुभ तारीखें 1, 10, 19 और 28 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने फरवरी और नवंबर
- अशुभ दिन सोमवार और शनिवार तथा
- अशुभ तारीखें 2, 9, 11 और 13 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 2 है तो आपके लिए

- शुभ महीने फरवरी, अप्रैल, अगस्त और नवंबर
- शुभ दिन तथा सोमवार और बुधवार
- शुभ तारीखें 2, 4, 8, 11, 16, 20 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने जनवरी, मई, और जून
- अशुभ दिन गुरुवार और शनिवार तथा
- अशुभ तारीखें 1, 3, 7 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 3 है तो आपके लिए

- शुभ महीने मार्च, मई, जुलाई, जून, सितंबर और दिसंबर
- शुभ दिन मंगलवार और शुक्रवार तथा
- शुभ तारीखें 3, 6, 9, 12, 15 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने जनवरी, फरवरी
- अशुभ दिन सोमवार और शनिवार तथा
- अशुभ तारीखें 1, 8, 14 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 4 है तो आपके लिए

- शुभ महीने फरवरी, अप्रैल और अगस्त
- शुभ दिन सोमवार और बुधवार तथा
- शुभ तारीखें 2, 4, 8, 13, 16 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने जनवरी, मार्च, सितंबर
- अशुभ दिन मंगलवार और शुक्रवार तथा
- अशुभ तारीखें 1, 15, 21 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 5 है तो आपके लिए

- शुभ महीने जनवरी, मार्च, मई और जुलाई
- शुभ दिन बुधवार, बृहस्पतिवार और शनिवार तथा
- शुभ तारीखें 5, 10, 14, 19 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने अगस्त, सितंबर
- अशुभ दिन सोमवार और मंगलवार तथा
- अशुभ तारीखें 1, 11, 18 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 6 है तो आपके लिए

- शुभ महीने जून और सितंबर
- शुभ दिन मंगलवार और शुक्रवार तथा
- शुभ तारीखें 6, 9, 15, 18 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने जनवरी, मार्च और मई
- अशुभ दिन सोमवार और बुधवार तथा
- अशुभ तारीखें 1, 2, 5 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 7 है तो आपके लिए

- शुभ महीने मार्च, जुलाई और दिसंबर
- शुभ दिन बुधवार और शनिवार तथा
- शुभ तारीखें 1, 7, 8, 11 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने फरवरी, सितंबर और नवंबर

- अशुभ दिन गुरुवार और शुक्रवार तथा
- अशुभ तारीखें 5, 15, 25 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 8 है तो आपके लिए

- शुभ महीने जनवरी, फरवरी, अप्रैल और अगस्त
- शुभ दिन सोमवार और बुधवार तथा
- शुभ तारीखें 4, 8, 16, 17, 26 हैं।
- आपके लिए अशुभ महीने मार्च, सितंबर
- अशुभ दिन शुक्रवार, शनिवार तथा
- अशुभ तारीखें 1, 3, 11 हैं।

यदि आपका भाग्यांक 9 है तो आपके लिए

- शुभ महीने मार्च, जून तथा सितंबर
- शुभ दिन मंगलवार और शुक्रवार तथा
- शुभ तारीखें 9, 15, 18 हैं।
- अशुभ महीने जुलाई, अगस्त
- अशुभ दिन सोमवार, गुरुवार तथा
- अशुभ तारीखें 1, 4, 21 हैं।

कार्यक्षेत्र के अनुसार लकी नंबर का चयन

यदि आप अपने कार्य क्षेत्र के अनुसार भी लकी नंबर का चुनाव करना चाहते हैं तो नीचे दिए हुए विवरण को ध्यान से पढ़ें और जानें कि किस व्यवसाय के लिए कौन सा अंक आपका लकी नंबर होगा:

- यदि आप प्रशासनिक अधिकारी अथवा राजनेता हैं तो आपके लिए लकी नंबर होगा 1, 2, 3 तथा 9 और अनलकी नंबर होगा 6 और 8
- यदि आप मीडिया के क्षेत्र से जुड़े हैं अथवा सेल्समैन हैं या सर्विस इंडस्ट्री से जुड़े हैं तो आपके लिए लकी नंबर

होंगे 2, 1, 5 तथा अनलकी नंबर होंगे 4, 7

- यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से संबंधित हैं अथवा किसी धार्मिक कार्य अथवा समाज सेवा में संलिप्त हैं तो आपके लिए लकी नंबर होंगे 3, 6, 9 तथा अनलकी नंबर होंगे 2, 5, 7
- यदि आप मध्यस्थता का कार्य करते हैं अथवा सरकारी विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं अथवा कमीशन एजेंट हैं तो आपके लिए लकी नंबर होंगे 4, 5, 6 और अनलकी नंबर होंगे 1, 2, 3
- यदि आप ऐसे व्यापारी हैं जो खाद्य पदार्थों का कार्य करते हैं अथवा किसी स्थान पर आप लिपिक हैं तो आपके लिए लकी नंबर होगा 1, 5, 6 और अनलकी नंबर होगा 2
- यदि आप अभिनय के क्षेत्र से जुड़े हैं अथवा जौहरी हैं अथवा होटल व्यवसाय का कार्य करते हैं तो आपके लिए लकी नंबर होंगे 5, 6, 8 तथा अनलकी नंबर होंगे 1, 2
- यदि आप किसी सरकारी विभाग में तृतीय श्रेणी के कर्मचारी हैं अथवा आप मैकेनिक हैं तो आपके लिए लकी नंबर होंगे 7, 9 तथा अनलकी नंबर वन 5, 6
- यदि आप पशुओं का व्यापार करते हैं अतः पशु पालते हैं या तर्कशास्त्री हैं अथवा ठेकेदारी का कार्य करते हैं तो आपके लिए लकी नंबर होंगे 5, 6, 8 तथा अनलकी नंबर होंगे 1, 2, 9
- यदि आप किसी TV चैनल में कार्य करते हैं अथवा सुरक्षा एजेंसियों में हैं या फिर चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े हैं तो आपके लिए लकी नंबर होंगे 9, 7 तथा अनलकी नंबर होंगे 5, 6
- इस प्रकार आप अंक शास्त्र के द्वारा अपना लकी मोबाइल नंबर जान सकते हैं और उस नंबर को प्राप्त करने के बाद अपने जीवन में तरक्की के द्वारा खोल सकते हैं।

सपनों का अर्थ, स्वप्न विचार और स्वप्न फल



सपनों का मतलब, सपनों का अर्थ जानना स्वप्न ज्ञान कहलाता है। सपनों का अनोखा संसार होता है। सपने लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ये हमारी भावनाओं और विचारों पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। हमारे जीवन में सपनों का बड़ा महत्व है लेकिन क्या कभी आपने सोचा है कि हम सपने क्यों देखते हैं, सपनों का मतलब क्या है? हमारे जीवन से इन सपनों का क्या लेनादेना है, क्या सपने किसी महत्वपूर्ण घटना का पूर्वाभास है? ऐसा माना जाता है कि सपनों में बहुत शक्ति होती है, इसलिए हमारे जीवन में इनका महत्व बढ़ जाता है। इसके अलावा सपनों पर केवल और केवल हमारा अधिकार होता है। इसको कोई भी बाहरी शक्ति नियंत्रित नहीं कर सकती है। महान् यूनानी निबंधकार प्लूटार्क ने कहा था, “जागते हुए लोग एक ही संसार में जीते हैं परंतु जब सोता हुआ व्यक्ति सपने देखता है तो वह केवल अपनी दुनिया में होता है।”

ऐसा कहा जाता है कि अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम

लिंकन ने हत्या से पूर्व सपने में अपनी हत्या होते हुए देखी थी। इस सपने के बारे में उन्होंने अपनी पत्नी मैरी टोड और अपने क्रीबी मित्रों को बताया था। इसके कुछ दिनों बाद लिंकन की हत्या कर दी गई। यह घटना सपने के सच होने का प्रमाण है। हमारे कुछ सपनों का बहुत बड़ा असर हमारे जीवन पर पड़ता है। सपनों का विश्लेषण आपके विचारों और अचेतन मन तक पहुँचने का एक माध्यम है। स्वप्न में आप जो भी देखते हैं उसके द्वारा आपके भूत, वर्तमान एवं भविष्य का पता लगाया जा सकता है। हालाँकि इसके लिए सपने की सही और सटीक व्याख्या होनी जरूरी है। यदि कोई सपना आपको अक्सर डराता रहता है तो आपके लिए यही सलाह है कि आप इस सपने का वास्तविक अर्थ जानने का प्रयास करें। अब आपके मन में यह सवाल आ रहा होगा कि सपने का अर्थ कैसे जानें। तो इसकी चिंता बिल्कुल न करें। एस्ट्रोसेज पर आपकी इस समस्या का समाधान होगा। एस्ट्रोसेज पर उपलब्ध स्वप्न शब्दकोष के माध्यम से आप अपने सभी सपनों का अर्थ जान सकते हैं।

स्वप्न अध्ययन एक प्राचीन कला है। इस कला के माध्यम से मनुष्यों के सपनों की व्याख्या की जाती है और सपने में देखी गई घटना के आधार पर ही उसकी व्याख्या संभव है। स्वप्न विज्ञान के द्वारा हम आपके सभी तरह के सपनों की व्याख्या एवं उसका गहराई से विश्लेषण करते हैं। उसके बाद आपको बताते हैं कि आपका सपना आपको क्या संकेत दे रहा है। स्वप्न विश्लेषण के लिए एक योग्य स्वप्न

विश्लेषक की आवश्यकता होती है। क्योंकि इसका सटीक और सही विश्लेषण किया जाना चाहिए।

स्वप्न विचार

स्वप्न फल, स्वप्न विचार, सपनों का सच या स्वप्न रहस्य क्या होता है? ये सवाल हमेशा से लोगों की रुचि के विषय रहे हैं।



हम सपने क्यों देखते हैं,

क्या सभी स्वप्न सच होते हैं, क्या सपने किसी बात के प्रतीक होते हैं? या फिर स्वप्न हमारी रोजमर्रा की जिंदगी की इच्छा, सोच और भय की तस्वीर मात्र है। अच्छे सपने और बुरे सपनों का मतलब क्या होता है? सपने में सांप देखना, सपने में बंदर देखना, ये ऐसी बातें हैं जो स्वप्न के रहस्य को लेकर मानव समुदाय की उत्सुकता को बढ़ाते हैं। हमारे मन में सपनों को लेकर इस तरह के तमाम सवाल हैं और इसका एक ही जवाब है, हाँ हर स्वप्न का एक अर्थ होता है लेकिन यह हमेशा सच हो ऐसा जरूरी नहीं है। नींद के दौरान आने वाले सपने कोई साधारण घटना नहीं बल्कि ये हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रतीक हैं। सपनों के इस संसार को जानने और समझने के लिए एस्ट्रोसेज ने एक पहल की है। हमारे इस लेख की मदद से आपको स्वप्न फल, स्वप्न विचार या सपनों के सच को समझने का अवसर मिलेगा कि, आखिर कैसे सपने आपके जीवन को प्रभावित करते हैं। इस कड़ी में हम आपके लिए लेकर आये हैं संपूर्ण स्वप्न विचार। हमने प्रयास किया है कि जहां तक हो सके आपको हर सपने का सही अर्थ बताया जाये। तो आईये चलते हैं सपनों के इस अनोखे संसार में और जानने की कोशिश करते हैं कि, स्वप्न फल से जुड़े अर्थ और अवधारणा आपके जीवन के लिए

कितनी उपयोगी हो सकती हैं?

हम सब के जीवन में सपनों का बड़ा महत्व होता है। क्योंकि हर आदमी जीवन में कुछ करने का और कुछ बनने का सपना देखता है इसलिए मानव जीवन में स्वप्न का महत्व और बढ़ जाता है। सपनों का अपना एक संसार होता है, इनमें कई स्वप्न कुछ संकेत देते हैं हालांकि इसका अर्थ जानने के लिए स्वप्न विचार की सही व्याख्या बेहद जरूरी है। इस लेख में हम आपके लिए लेकर आये हैं “ड्रीम्स डिक्षनरी” यानि सपनों की शब्दावली। इस डिक्षनरी की मदद से आप जान सकेंगे सपनों के सही अर्थ। ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य के जीवन कई अच्छे और बुरे अनुभव व इच्छाएं उसके अवचेतन मन में संग्रहित होती रहती हैं। चेतन अवस्था में आदमी जो भी सोचता है वह बातें उसके अवचेतन मन में घूमती रहती हैं। नींद के समय ये सभी इच्छाएं, अनुभव और भय स्वप्न के रूप में हमारे सामने आते हैं। सपने किसी बात के प्रतीक होते हैं और इनका अर्थ बहुत व्यापक होता है। अगर वास्तविक जीवन में स्वप्न फल या स्वप्न विचार की व्याख्या की जाये, तो हमें कई समस्याओं का समाधान मिल सकता है।

इसी कड़ी में एस्ट्रोसेज ने ड्रीम्स डिक्षनरी के माध्यम से आपको आपके सपने का सही अर्थ बताने और उसकी सटीक व्याख्या करने की कोशिश की है। इसमें आप पाएंगे विभिन्न प्रकार के स्वप्न और उनके अर्थ।

स्वप्न फल

क्या आप जानते हैं हम जो सपने देखते हैं उनमें से कुछ ऐसे सपने होते हैं जो हमें मालामाल बना सकते हैं। नींद में सपने आना कोई अकारण नहीं होता है। ये हमारे जीवन में किसी न किसी बात का संकेत अवश्य करते हैं। दरअसल,



सपनों में कई प्रकार के रहस्य छुपे होते हैं और इन रहस्यों का अपना इतिहास है। इस बात के कई उदाहरण मिलते हैं कि उनके जीवन में बड़ी घटना से

पहले उन्हें स्वप्न के माध्यम से इसका आभास हुआ था इसलिए हम यहाँ उन 30 सपनों की चर्चा कर रहे हैं जो हमारे जीवन में धन-वैभव के आगमन का संकेत देते हैं।

- यदि आपने स्वप्न में किसी देवी/देवता को देखा है तो इसका यह मतलब हुआ कि आने वाले दिनों में आप एक सफल व्यक्ति बनेंगे और आपके जीवन में धन का आगमन होगा।
- किसी कन्या अथवा महिला को स्वप्न में नृत्य करते हुए देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- सपने में सारस पक्षी को देखना यह संकेत करता है कि आने वाले कुछ ही दिनों आपको धन प्राप्त होगा।
- कदम्ब वृक्ष को सपने में देखना भी धन आगमन का संकेत है।
- यदि आपने अपने सपने में आंबला और कमल का पुष्प देखा है तो आपका यह सपना बताता है कि आपको जल्द ही धन की प्राप्ति होगी।
- खुद को कान में बाली पहनते हुए सपने में देखना धन प्राप्ति के संकेत हैं।
- सपने में किसी किसान को खेती करते हुए देखना, इस बात का संकेत हैं कि आपको किसी अज्ञात स्रोत से धन की प्राप्ति होगी।
- यदि आपने सपने में जलते हुए दीपक को देखा है तो यह इस बात का संकेत है कि आने वाले कुछ ही दिनों में आपको धन प्राप्त होगा।
- सपने में स्वर्ण देखना धन प्राप्ति का योग है।

- सपने में खुद को अंगूठी पहनना धन आने का संकेत है।
- सपने में किसी महल को देखना अधिक धन पाने का संकेत है।
- सपने में गाय का दूध लेना, इस बात की ओर इशारा करता है कि आपको आने वाले दिनों में धन की प्राप्ति होगी।
- स्वप्न में किसी को गाय का दूध लेते हुए देखना भी धन पाने का संकेत है।
- सपने में सफेद घोड़े को देखना यह बताता है कि आने वाले समय में आपको धन प्राप्त होगा।
- सपने में किसी हाथी को देखना यह प्रदर्शित करता है कि आने वाले समय में आपको किसी स्रोत से धन प्राप्त होगा।
- स्वप्न में गाय को देखने से धन प्राप्ति होती है।
- सपने में गाय का दूध एवं घी देखना शुभ होता है। इससे देखने वाले को धन की प्राप्ति होती है।
- सफने में फलों से लदा हुआ वृक्ष देखना धन प्राप्ति का संकेत देता है।
- सपने में चूहों को देखना भविष्य में धन पाने का संकेत है।
- सपने में काले बिछू को देखना धन पाने का संकेत है।
- स्वप्न में फन उठाते हुए सांप को देखना भी धन आने का संकेत बताता है।
- सपने में सांप को उसके बिल के पास देखना धन मिलने का संकेत है।
- यदि आपने सपने में मृत पक्षी को देखा है तो यह भी आपको धन पाने का संकेत बताता है।
- यदि आपने सपने में तोता को देखा है तो इसका यह संकेत है कि आने वाले दिनों में आपको धन प्राप्त होगा।
- सपने में नेवला देखना भी शुभ माना जाता है। ऐसा

कहा जाता है कि यदि कोई सपने में नेवला देखता है तो उसे जल्द ही भविष्य में हीरे जबाहरात मिलते हैं।

- सपने में मधुमक्खी का छत्ता देखना भविष्य में धन पाने की ओर इशारा करता है।
- सपने में सफेद चीटी को को देखना धन प्राप्ति का संकेत है।
- यदि आपने सपने में आम का बगीचा देखा है तो जल्द

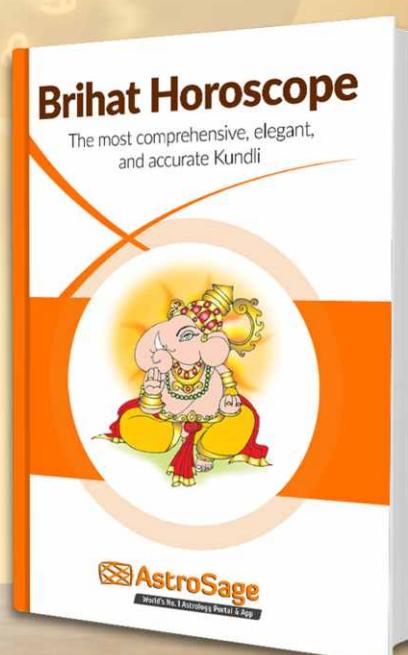
आप अमीर बनेंगे और अचानक आपको धन प्राप्त होगा।

- यदि आप सपने में खुद को किसी पेड़ पर चढ़ते हुए देखते हैं तो आपको भविष्य जल्द ही धन प्राप्त होगा।
- सपने में खुद को किसी पहाड़ पर चढ़ना भी धन पाने का संकेत है।

Know when your Destiny will shine!

Brihat Horoscope

Buy Now >



Price @Just ₹ 999/-

जानें शिव तांडव स्तोत्रम् के महत्व और उसके अर्थ के बारे में



शिव तांडव स्तोत्रम् का हिन्दू धर्म में बेहद प्रभावशाली महत्व है, जिस प्रकार से देवों के देव महादेव को देवताओं में सबसे ऊँचा दर्जा प्राप्त है, उसी प्रकार से उनके इस स्तोत्र को भी विशेष माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि शिव ताण्डव स्तोत्र का जाप कर शिवजी को जल्द प्रसन्न किया जा सकता है और उनसे मनचाहा वरदान प्राप्त किया जा सकता है। आज इस लेख के जरिये हम आपको शिव तांडव स्तोत्र की उत्पत्ति, उसके महत्व और उससे मिलने वाले लाभों के बारे में विस्तार से बताने जा रहे हैं। आइए जानते हैं शिव जी के इस प्रमुख स्तोत्र से जुड़ी प्रमुख

जानकारियों के बारे में।

कैसे हुई शिव तांडव स्तोत्रम् की उत्पत्ति?

इस संसार में शिव जी के परम भक्तों में जिनका नाम सबसे पहले लिया जाता है वो हैं लंकाधिपति रावण। जी हाँ, रावण को शिव जी के परम् भक्त थे और उसी ने एक बार भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए शिव तांडव स्तोत्र का जाप किया था। हिन्दू पौराणिक कथा के अनुसार जब रावण समस्त धरती और देव लोक पर अपना आधिपत्य कर लिया था उसके मन में कैलाश पर्वत को हरने का भी विचार आया। अपनी शक्तियों के गुरुर में चूर रावण जब कैलाश पर्वत को उठाकर जाने लगा तो उसी वक्त शिव जी ने अपने अंगूठे के प्रयोग से कैलाश पर्वत को दबा दिया जिस वजह से रावण उसे हिला भी नहीं सका। इसके बाद उसने शिव जी को प्रसन्न करने के लिए उनकी सुति की जिसे शिव तांडव स्तोत्र के नाम से भी जाना जाता है।

तांडव का क्या अर्थ है

शिव तांडव स्तोत्र के बारे में संपूर्ण जानकारी प्राप्त करने से पहले ये जानना भी बेहद आवश्यक है कि आखिर तांडव किसे कहते हैं। दरअसल तांडव एक ऐसा शब्द है जिसका वास्तविक अर्थ होता है पूरी शक्ति के साथ कूदना या उछलना। तांडव के दौरान व्यक्ति को अपनी पूरी शक्ति और ऊर्जा के साथ उछलना होता है। ऐसा करने से मन शक्तिशाली होता है और दिमाग मजबूत। हिन्दू धर्म के अनुसार तांडव केवल पुरुष वर्ग ही कर सकते हैं।

शिव तांडव स्तोत्र और उसका अर्थ

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेवलम्ब्यलम्बिता
भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमद्धुमद्धुमन्निनादवद्धुमर्वयं चकारचण्डताण्डवं तनोतु
नः शिवो शिवम् ॥

अर्थ: जिस शिव की घनी, वनरूपी जटा से गंगा प्रवाहित होकर उनके कंठ तक जाती है। वह जिनके गले में सांप की मालाएं हैं और वह शिव जो डम-डम डमरु बजा कर प्रचंड रूप से तांडव करते हैं, वह शिव हमारा कल्याण करें।

जटाकटाहसंभ्रमन्निलिंपनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरी
विराजमानमूर्धनि।
धगद्धुगद्धुगज्ज्वललाटपटुपावके किशोरचंद्रशेखरे
रतिः प्रतिक्षणं ममं ॥

अर्थ: वह शिव जिनकी जटाओं में अत्यंत वेग के साथ विलासिता पूर्वक भ्रमण करते हुए गंगा जी की लहरें सिर पर लहरा रही है, जिनके सर पर आग की प्रचंड ज्वाला धधक-धधक कर जल रही है, ऐसे किशोर चन्द्रमा से विभूषित शिव में हर क्षण मेरा अनुराग बढ़ता रहे।

धराधरेंद्रनदिनी विलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्विगतंसंति प्रमोद
मानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धुर्धरापदि क्वचिद्विगम्बरे
मनोविनोदमेतु वस्तुनि ॥

अर्थ: वह शिव जो माता पर्वत राज की बेटी माता पार्वती के विलासमय और रमणीय कटाक्ष/तानों से परम् आनंदित रहते हैं, जिनके शीश पर संपूर्ण सृष्टि और वहां रहने वाले जीव निवास करते हैं, जिनके कृपा भर से सभी

भक्तों की परेशानियां दूर हो जाती हैं, वह जिनकी दिशाएं ही वस्त्र हैं उनकी साधना से मेरा मन हमेशा आनंदित रहे।

जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभा
कदंबकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदांधसिंधुरस्फुरत्वगुतरीयमेदुरे मनोविनोदद्वृतं
बिंभर्तुभूतभर्तरि ॥

अर्थ: मैं उस शिव की भक्ति से हमेशा ही आनंदमय रहूँ जो सभी जीवों के एक मात्र रक्षक और आधार हैं, वह जिनकी जटाओं में लिपटे साँपों की मणियों का पीला रंग सभी दिशाओं को केसर प्रकाश की भाँति प्रकाशित करता है और वह जिनको हिरन की चाल सुशोभित है।

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेषर प्रसूनधूलिधोरणी
विधसराग्रीपीठभूः।
भुजंगराजमालयानिबद्धजाटजूटकः श्रियैचिरायजायतां
चकोरबंधुशेषरः॥

अर्थ: वह शिव जिन्हें इंद्र देव सहित अन्य देव गण भी अपने शीश पर शोभित फूल अर्पित करते हैं और जिनकी जटाओं में लाल सांप विराजित है वह शिव हमें आजीवन स्थायी रहने के लिए संपदा प्रदान करें।

ललाटचत्वरज्ज्वलद्धनंजयस्फुलिङ्गभा
निपीतपंचसायकंनमन्निलिंपनायकम्।
सुधामृखलेखया विराजमानशेषरं महाकपालिसंपदे
शिरोजटालमस्तुनः॥

अर्थ: वह शिव जिन्होंने इंद्र के अहंकार को चूर किया और कामदेव को सर पर सुशोभित अग्नि से भस्म किया, जो समस्त देवताओं द्वारा भी पूज्य हैं और जिनके मस्तक पर

स्वयं चन्द्रमा और गंगा भी विराजित है, आप मुझे सिद्धि प्रदान करें।

और यक्ष के नाशक हैं और मृत्यु को भी अपने वश में करने वाले हैं, हम उस शिव का मनन करते हैं।

करालभालपट्टिकाथगद्धगद्धगज्जलद्धनंजया

धरीकृतप्रचंडपञ्चसायके।

धराधरेंद्रनदिनीकुचागचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनी

त्रिलोचनेरतिर्मम्॥

अर्थः वह शिव जिन्होंने अपने शीश पर शोभित अग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया। वो शिव माता पार्वती के समकक्ष प्रकृति का सृजन करने में चतुर हैं, उस शिव के प्रति मेरा अटल प्रेम हो।

अखर्वसर्वमंगला कलाकदम्बमंजरी रसप्रवाह माधुरी

विजृंभणा मधुव्रतम्।

स्मरातंकं पुरातंकं भावतंकं मखातंकं गजातंकांधकातंकं
तमतंकातंकं भजे॥

अर्थः वह शिव जो कल्याणकारी, अविनाशी और समस्त सभी प्रकार के रसों का आस्वादन करते हैं, जिन्होंने कामदेव को भस्म किया, त्रिपुरासुर, गजासुर और अंधकासुर का संहार किया, दक्ष और यक्ष का नाश किया और जो खुद यमराज के लिए भी यम हैं, हम उस शिव का मनन करते हैं।



नवीनमेघमंडलीनिरुद्धुर्धरस्फुरत्कुक्षुनिशीथनोतमः

प्रबद्धबद्धकन्धरः।

निलिम्पनिर्झरीथरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः कलानिधानबधुरः

श्रियं जगद्धुरंधरः॥

अर्थः वह शिव जिनका अमावस्या की रात की तरह काली गर्दन है जो नए मेघों की घटाओं से परिपूर्ण है, जिन्होंने हिरण छाल धारण किया है, गंगा और चन्द्रमा जिनकी शीश पर शोभित है और जिन्होंने समस्त संसार का बोझ उठा रखा है, वह शिव हमें जीवन में हर प्रकार से संपन्न रखें।

प्रफुल्लनीलपंकजप्रपञ्चकालिमप्रभा विडंबि कंठकंध

रालुचि प्रबंधकंधरम्।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं

गजच्छिदांधकच्छिदं तमतंकच्छिदं भजे॥

अर्थः वह शिव जिनका कंठ और कंधा खिले हुए कमल से सुशोभित है, जिन्होंने कामदेव और त्रिपुरासुर का नाश किया, वह जो संसार के सभी दुखों को हरने वाले हैं, दक्ष

जयत्वदभविभ्रमद्वजंगमस्फुरद्धगद्धिनिर्गमत्कराल
भाल हव्यवाट्।

थिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदंगतुंगमंगलध्वनिक्रमप्रवर्तितः
प्रचण्ड ताण्डवः शिवः॥

अर्थः अत्यधिक वेग के साथ धूम साँपों के फुफकार से

से गर्दन में बढ़ रही प्रचंड ज्वाला के बीच मंगलकारी मृदंग की धीम-धीम ध्वनि के साथ तांडव में मग्न शिव सभी तरह से शोभित हो रहे हैं।

दृष्टिचित्रतल्पयोर्भुजंगमौक्तिकमस्तजोर्गरिष्ठरञ्जलोष्योः
सुहृष्टिपक्षपक्षयोः।
तृणारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः
कदा सदाशिवं भजे॥

अर्थः कड़े पत्थर और कोमल विस्तार, सांप और मोतियों की माला, मूल्यवान रत्न और मिट्टी के टुकड़े, दुश्मन और दोस्त, राजा और प्रजा, तिनके और कमल पर समान दृष्टि रखने शिव की हम आराधना करते हैं।

कदा निलिंपनिर्झरी निकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः
सदा शिरःस्थमंजलिं वहन्।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति
मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥

अर्थः हमें कब माँ गंगा के कछार कुंज में निवास के साथ निष्कपट होकर, सिर पर अंजलि धारण कर चंचल आँखें और ललाट वाले शिव के मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपार सुख की प्राप्ति होगी।

निलिम्प नाथनागरी कदम्ब मौलमल्लिका-
निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनींमहनिशं परिश्रय परं पदं
तदंगजत्विषां चयः॥

अर्थः सभी देवांगनाओं के सिर में गूथें हुए फूलों की मालाओं से झड़ने वाले सुगंधित खुशबू से मनोहरित, विशेष शोभा के धाम शिव जी के समस्त अंगों की सुंदरता

परमानन्द के समान हमारे मन की प्रसन्नता को हमेशा बढ़ाती रहे।

प्रचण्ड वाडवानल प्रभाशुभप्रचारणी महाष्टसिद्धिकामिनी
जनावहृत जल्पना।
विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः शिवेति
मन्त्रभूषगो जगज्जयाय जायताम् ॥

अर्थः प्रचंड बड़वानल के समान सभी पापों का नाश करने में, स्त्री स्वरूप अणिमादिक आठ महा सिद्धियां और चंचल आँखों वाली देवकन्याओं से शिव जी के विवाह के समय गायी गयी मंगलध्वनि सब मन्त्रों में श्रेष्ठ शिव मंत्र से परिपूर्ण, हम सांसारिक दुखों का नाश कर विजय प्राप्त करें।

इमं हि नित्यमेव मुक्तमुक्तमोत्तम स्तवं पठन्मरन्
ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति संततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथागतिं विमोहनं हि
देहनां सुशंकरस्य चिंतनम् ॥

अर्थः इस सबसे उपयुक्त शिव तांडव स्तोत्रम का नियमित पाठ करने या मात्र सुनने से जीव पवित्र होकर सर्वश्रेष्ठ गुरु शिव में समा जाता है और सभी प्रकार के भ्रमों से मुक्ति पा सकता है।

पूजावसानसमये दशवक्रत्रगीतं यः शम्भूपूजनपरम् पठति
प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेंद्रतुरंगयुक्तां लक्ष्मी सदैवसुमुखीं
प्रददाति शम्भुः॥

अर्थः प्रत्येक सुबह शिव जी की पूजा के बाद रावण द्वारा रचित शिव तांडव स्तोत्र का गुणगान करने से लक्ष्मी माता

स्थिर रहती हैं और भक्तों को रथ, हाथी और घोड़े जैसे संपदा की प्राप्ति होती है।

इति रावणकृतं शिव ताण्डव स्तोत्रं संपूर्णम्

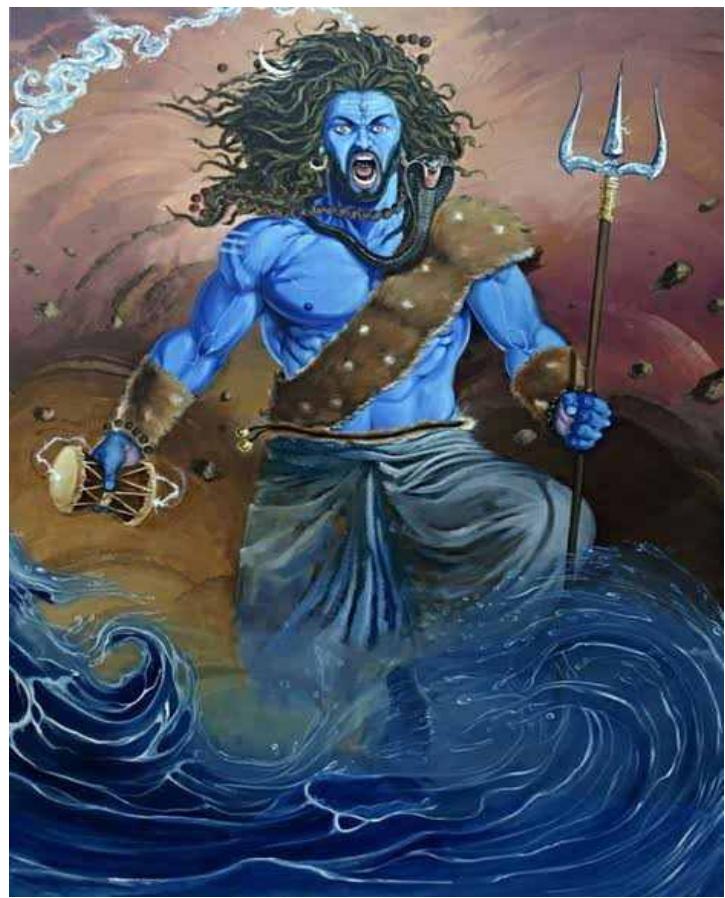
अर्थः इस प्रकार से रावण कृत्य शिव तांडव स्तोत्र पूर्ण होती है।

शिव तांडव स्तोत्र से मिलने वाले प्रमुख लाभ

- यदि आप किसी प्रकार के स्वास्थ्य संबंधी समस्या से ग्रसित हों तो ऐसे में आपके लिए शिव तांडव स्तोत्र का जाप करना विशेष फलदायी साबित हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधी समस्या का समाधान ना मिलने पर नियमित रूप से शिव तांडव स्तोत्र का जाप जरूर करें।
- शिव तांडव स्तोत्र का नियमित पाठ आपको मुख्य रूप से तांत्रिक शक्तियों और शत्रुओं के वार से बचा सकता है। श्रद्धा भाव के साथ इस स्तोत्र का जाप कर आप इन शक्तियों से मुक्ति पा सकते हैं।
- यदि आप जीवन के किसी क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्ति का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं तो, ऐसे में आपके लिए शिव तांडव स्तोत्र का पाठ करना फायदेमंद साबित हो सकता है। शिव जी की आराधना करते हुए प्रतिदिन इस स्तोत्र का जाप करना आपको जीवन में अपार सफलता दिला सकता है।
- शिव तांडव स्तोत्र का नियमित जाप आपको आपकी कुंडली में मौजूद किसी ग्रह के दुष्प्रभाव से भी राहत दिला सकता है। शनि, मंगल या राहु-केतु की बुरी दृष्टि होने पर शिव तांडव स्तोत्र का जाप अत्यंत फलदायी साबित हो सकता है।

शिव तांडव स्तोत्र को जाप करने की संपूर्ण विधि

- शिव तांडव स्तोत्र का जाप प्रदोष काल में करना विशेष महत्व रखता है।
- स्तोत्र का पाठ करने से पहले शिव जी की विधि पूर्वक पूजा अर्चना कर लेनी चाहिए।
- शिव जी को धूप दीप दिखाने के साथ ही उन्हें प्रसाद चढ़ाएं और पूजा संपन्न होने के बाद स्तोत्र का जाप करें।
- शिव तांडव स्तोत्र का पाठ हमेशा गाकर करना चाहिए।
- इस स्तोत्र का पाठ यदि गाकर और तांडव नृत्य के साथ किया जाए तो उसे सर्वोत्तम माना जाता है।
- स्तोत्र पाठ के बाद शिव जी का मनन करें और श्रद्धा पूर्वक उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।



शनि का स्वास्थ्य कनेक्शन

एस.एन.
राव



अभी हाल में 24 जनवरी को शनि देव अपनी स्वराशि मकर में गए हैं। शनि का यह गोचर बहुत महत्वपूर्ण है और इसका व्यापक प्रभाव होना सुनिश्चित है। यूँ तो शनि की साड़ेसाती का नाम लोगों को डराने के लिए काफी है। दरअसल, शनि ग्रह अपने आप में डर का पर्याय बन चुका है। हालांकि, ऐसा कर्तव्य नहीं है। लेकिन, आज शनि के गुण-दोष की चर्चा नहीं बल्कि जातक की कुंडली में शनि के असर की है। शनि कुंडली के अलग अलग भावों में बैठकर स्वास्थ्य पर अलग अलग असर दिखाता है। मसलन-

शनि मेष राशि में हो या पहले भाव में बैठा हो, तो सिरदर्द, कफ, बहरापन, अवसाद, मस्तिष्क में खून की कमी, दाँतों से जुड़ी परेशानियाँ, चिड़चिड़ापन, बेहोशी और यकृत से जुड़े रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में जातक को नियमित तौर पर दाँत मांजने चाहिए, प्रचुर मात्रा में विटामिन लेना चाहिए, दीर्घ और लययुक्त श्वास-प्रश्वास का अभ्यास करना चाहिए।

यदि शनि वृषभ राशि में स्थित हो या दूसरे भाव में बैठा हो, तो जातक को अपच, मियादी बुखार, खाँसी, गले में संक्रमण, टॉन्सिल में मवाद, दाँतों की सड़न और कब्ज़ आदि बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है। इन समस्याओं से बचने के लिए पर्याप्त, पौष्टिक और समय पर भोजन लेने की आदत डालनी चाहिए।

अगर शनि मिथुन राशि या तीसरे भाव में स्थित हो, तो गले की सूजन, दमा, कन्धे का दर्द, साइटिका और नितम्ब से जुड़ी बीमारियाँ होने की संभावना अधिक होती है। इसका ज्यादा असर कंधों, फेफड़ों, हाथों, अंगुलियों, श्वसन और तन्त्रिका-तन्त्र पर पड़ता है। नियमित तौर पर योग लाभदायक सिद्ध होगा।

यदि शनि कर्क राशि में स्थित हो या चौथे भाव में बैठा हो, तो जातक प्रायः पाचन-तंत्र की समस्या से ग्रसित रहता है। उसे पायरिया, अपच, गैस, उल्टी, विटामिन-सी की कमी और पथरी आदि से संबंधित व्याधियाँ होने की संभावना ज्यादा रहती है।

यदि शनि सिंह राशि में स्थित हो या पाँचवें भाव में बैठा हो, तो जातक को हृदय-विकार, पीठ से संबंधित समस्याओं, रीढ़ की हड्डी और मांसपेशियों का कड़ापन आदि विकारों की संभावना बढ़ जाती है। खास तौर पर दिल, पीठ, कमर, रीढ़ और तन्तुओं पर अधिक प्रभाव पड़ता है। अगर इनमें से जुड़ा कोई भी लक्षण आपके

नज़र आए तो तुरन्त किसी अच्छे चिकित्सक से सलाह लें।

अगर शनि कन्या राशि या छठे भाव में हो, तो जातक को आंत की कमज़ोरी और अपेंडिसाइटिस आदि की समस्या हो सकती है। ऐसे में छोटी आंत, पाचन तंत्र, पेट व तंत्रिकाओं पर सबसे ज्यादा असर पड़ता है। इन जातकों के लिए अल्पाहार और आंतरिक मांसपेशियों के लिए हल्की कसरत फ़ायदेमंद साबित होती है।

यदि शनि तुला राशि या सातवें भाव में हो, तो गुर्दे की पथरी, मूत्राशय की गड़बड़ी, कुपोषण, सरदर्द और सूजन की समस्या जातक को परेशान कर सकती है। जातकों को त्वचा, वृक्क, निचले पेट और कमर का खास ध्यान रखना चाहिए। इन बीमारियों की रोकथाम के लिए पहले से ही प्रयास किए जाने चाहिए।

अगर शनि वृश्चिक राशि या आठवें भाव में स्थित हो, तो जातक को मासिक धर्म, कब्ज़, शुक्राणुओं की कमी, नाक के रोग और गले का संक्रमण आदि की परेशानी हो सकती है। इनमें से किसी भी बीमारी का लक्षण उभरते ही तुरन्त अच्छे डॉक्टर से इलाज कराएँ और बतायी गयी दवाइयाँ नियमित तौर पर लेने में ज़रा भी कोताही न बरतें।

यदि शनि धनु राशि या नौवें भाव में हो, तो जातक

को साइटिका, जोड़ों के दर्द, क्षय रोग, दमा और कमर के नीचे के रोगों से जूझना पड़ सकता है। ऐसे जातक पर्याप्त आराम लें और शारीरिक गतिविधियों को नियमित तौर पर करते रहें।

अगर शनि मकर राशि या दसवें भाव में हो, तो जातक गठिया, खाज, त्वचा के रोग, पीलिया, अजीर्ण और पथरी आदि का शिकार हो सकता है। ऐसे में घुटनों, हड्डियों, दाँतों, बालों और शरीर के दाँए हिस्से पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। ऐसे जातकों के लिए नियमित व्यायाम आवश्यक है।

यदि शनि कुम्भ राशि या ज्यारहवें भाव में हो, तो कमज़ोर टखनों, मोच, हड्डियों के टेढ़ेपन, हृदय-रोग व धमनियों में अवरोध आदि की शिकायत हो सकती है। हर रोज़ घूमना-फिरना, सुबह की सैर, हल्की कसरत और सक्रियता बनाए रखना लाभदायक साबित होगा।

अगर शनि मीन राशि या बारहवें भाव में हो, तो जातक को क्षय रोग, नासूर, गठिया, मांसपेशियों का कड़ापन और अत्यधिक सूजन आदि की परेशानी हो सकती है। ऐसे में पैर, रक्त-कोशिकाएँ, घुटने वगैरह पर सबसे ज्यादा असर पड़ता है। ऐसे जातकों को हमेशा अपने पैर गर्म रखने चाहिए।



Lab Certified Gemstones
Genuine Gemstones at best price

ग्रहों के आईने में बैंक नौकरी

**एस.एन.
राव**



जन्म-कुण्डली का विश्लेषण कर बैंकिंग क्षेत्र में नौकरी की संभावना का पता लगाया जा सकता है। बैंक / लिपिक सेवा वाणिज्य के अन्तर्गत आते हैं। वाणिज्य और वित्त का कारक बुध है। गुरु ज्ञान और तरक्की का कारक है, शुक्र धन के प्रबंधन / नकदी / अर्थ का कारक है और शनि ऋण / बॉण्ड / जनता के लेन-देन / खरीद-फ्रोड़ का कारक है। इन ग्रहों का कुछ खास भावों में होना उस व्यक्ति के वित्त-क्षेत्र में काम करने को इंगित करता है।

जिन जातकों के लग्न में वृषभ, सिंह, कन्या, वृश्चिक और धनु राशि हो, उनके इस पेशे में क्रामयाब होने की संभावना ज्यादा रहती है। कोई बैंकिंग क्षेत्र में प्रवेश कर सकेगा और अधिकारी या लिपिक के तौर पर सफल हो सकेगा या नहीं, ये जानने के लिए कुछ ज्योतिषीय योगों

पर विचार करते हैं।

चौथे, पाँचवे या दसवें भाव में बुध और गुरु की स्थिति बैंकिंग / वित्त / वाणिज्य के क्षेत्र से जुड़े पेशे को दर्शाती है। चौथे भाव को शिक्षा के लिए, पाँचवें को लोगों से संपर्क और लेन-देन के लिए, नौवें भाव को उच्च शिक्षा के लिए, छठे भाव को नौकरी के लिए और दसवें भाव को सरकारी क्षेत्र या सरकारी कंपनी में करियर के लिए देखा जाता है। अगर ग्यारहवें भाव या उसके स्वामी पर गुरु और बुध व त्रिकोण में स्थित शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो जातक बैंकिंग क्षेत्र से धन अर्जित करता है।

अगर चौथे या नौवें भाव का स्वामी बुध या गुरु हो तथा दसवें भाव से दृष्टि-संबंध हो, तो यह बैंक में नौकरी की सम्भावना को मज़बूत करता है। साथ ही इसमें अगर सूर्य की सहभागिता भी हो, तो जातक बैंक में अधिकारी बन सकता है। सूर्य सरकार या प्रशासन को भी दर्शाता है। यदि सूर्य ऊपर बताए गए संयोजन के साथ दसवें या ग्यारहवें भाव में सिंह राशि में बैठा हो, तो जातक शीघ्र ही तरक्की करता है और सरकारी बैंक व रिज़र्व बैंक आदि में उच्च-अधिकारी का पद भी हासिल कर सकता है।

अगर बुध या गुरु चौथे, नौवें या दसवें भाव के स्वामी हों और लग्न को देख रहे हों, तो जातक वाणिज्य से संबंधित शिक्षा / पेशे से जुड़ा होता है। यदि शुक्र चौथे, नौवें या दसवें भाव का स्वामी हो और दसवें, ग्यारहवें भाव में स्थित हो या उसे देख रहा हो तथा उस पर बुध या बृहस्पति की

दृष्टि हो, तो ज्यादातर देखा गया है कि ऐसा जातक बैंक में नक्कद लेन-देन का काम संभालता है। यहाँ भी सूर्य की स्थिति कार्यक्षेत्र में उन्नति को तय करेगी। अगर चौथे, पाँचवें घर का स्वामी शनि हो और खुद दसवें, ग्यारहवें भाव में बैठा हो या देख रहा हो तथा उसके ऊपर बुध या बृहस्पति की दृष्टि हो, तो प्रायः जातक जनता की पूँजी के व्यवहार या लेन-देन से संबंधित काम करता है।



यदि लग्न धनु हो और इसपर किसी भी रूप में सूर्य, बुध या शुक्र की दृष्टि हो, तो ऐसे में उस व्यक्ति के बैंकिंग क्षेत्र में काम करने की प्रबल सम्भावना रहती है। इसके अलावा अगर लग्न धनु हो और शनि जन्म-कुण्डली में या तो दूसरे या नौवें भाव में स्थित हो व उसपर बृहस्पति या बुध की दृष्टि हो, तो जातक बैंक और उससे जुड़ी सेवाओं के ज़रिए धनार्जन करेगा। इसी तरह यदि लग्न में धनु राशि हो और गुरु दूसरे, ग्यारहवें भाव के स्वामी को देख रहा हो या स्वयं इन भावों में कहीं बैठा हो तथा शुक्र और बुध साथ में बैठे हों व शक्तिशाली हों, तो जातक को बैंकिंग क्षेत्र में निश्चित तौर पर सफलता मिलती है।

यदि लग्न कन्या है, बुध मिथुन राशि में है और गुरु के साथ

बैठा है तथा शुक्र शक्तिशाली है, तो जातक को इस क्षेत्र में क्रामयाबी हासिल होती है। इसी तरह कन्या लग्न की कुण्डली में अगर बुध और बृहस्पति की युति हो तथा उनपर शुक्र या चन्द्र की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति इस क्षेत्र में सफलता अर्जित करता है। अगर बुध और चन्द्र दोनों ही शक्तिशाली हैं और तो जातक इस क्षेत्र में आकर काफ़ी प्रगति करता है।

यदि लग्न वृषभ है और लग्न में बुध शनि के साथ बैठा है या लग्न को देख रहा है या फिर शनि द्वारा देखा जा रहा है और गुरु शक्तिशाली है, तो जातक बैंकिंग क्षेत्र में क्रामयाबी पाकर अधिकारी बनता है। अगर वृषभ, कन्या या धनु लग्न है और नौवें, दसवें या ग्यारहवें भावों में बुध, शुक्र और शनि के बीच संबंध है, तो जातक बैंक में काम करेगा।

इसी तरह अगर सूर्य, बुध और गुरु शक्तिशाली हों व दसवें भाव से संबंधित हों तो जातक अर्थशास्त्री बन सकता है।

अगर ग्रहों की शक्ति क्षीण है या वे तटस्थ राशि में बैठे हैं, तो यह औसत शिक्षा को दिखलाता है और बैंक से जुड़ी कलर्क वगैरह की नौकरी को इंगित करता है। यदि वे शत्रु राशियों में बैठे हैं या उनपर अशुभ दृष्टियाँ हैं, तो उन्हें नौकरी के दौरान बेहद समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

बुधादित्य योग वाणिज्य के क्षेत्र में दिलचस्पी को दर्शाता है। यह जातक को अर्थशास्त्री, बैंक अधिकारी, सांख्यिकीविद, एमबीए या सीए बनाता है। बुध सूर्य से जितना क्रीब हो और पीछे हो, वह उतना ही बेहतर परिणाम देता है।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)



पुर्नीत पाण्डे

ज्योतिष सीखें भाग-5

ज्योतिष में फलकथन का आधार मुख्यतः ग्रहों, राशियों और भावों का स्वभाव, कारकत्व एवं उनका आपसी संबंध है।

ग्रहों को ज्योतिष में जीव की तरह माना जाता है - राशियों एवं भावों को वह क्षेत्र मान जाता है, जहाँ ग्रह विचरण करते हैं। ग्रहों का ग्रहों से संबंध, राशियों से संबंध, भावों से संबंध आदि से फलकथन का निर्धारण होता है।

ज्योतिष में ग्रहों का एक जीव की तरह 'स्वभाव' होता है। इसके अलाव ग्रहों का 'कारकत्व' भी होता है। राशियों का केवल 'स्वभाव' एवं भावों का केवल 'कारकत्व' होता है।

स्वभाव और कारकत्व में फर्क समझना बहुत जरूरी है।

सरल शब्दों में 'स्वभाव' 'कैसे' का जबाब देता है और 'कारकत्व' 'क्या' का जबाब देता है। इसे एक उदाहरण से समझते हैं। माना की सूर्य ग्रह मंगल की मेष राशि में दशम भाव में स्थित है। ऐसी स्थिति में सूर्य क्या परिणाम देगा?

नीचे भाव के कारकत्व की सूची दी है, जिससे पता चलता है कि दशम भाव व्यवसाय एवं व्यापार का कारक है। अतः सूर्य क्या देगा, इसका उत्तर मिला कि सूर्य 'व्यवसाय' देगा। वह व्यापार या व्यवसाय कैसा होगा - सूर्य के स्वाभाव और मेष राशि के स्वाभाव जैसा। सूर्य एक आक्रामक ग्रह है और मंगल की मेष राशि भी आक्रामक राशि है अतः व्यवसाय आक्रामक हो सकता है। दूसरे शब्दों में जातक सेना या खेल के व्यवयाय में हो सकता है, जहाँ आक्रामकता की जरूरत होती है। इसी तरह ग्रह, राशि, एवं भावों के स्वाभाव एवं कारकत्व को मिलाकर फलकथन किया जाता है।

दुनिया की समस्त चल एवं अचल वस्तुएं ग्रह, राशि और भाव से निर्धारित होती हैं। चूँकि दुनिया की सभी चल एवं अचल

वस्तुओं के बारे मैं तो चर्चा नहीं की जा सकती, इसलिए सिर्फ मुख्य मुख्य कारकत्व के बारे में चर्चा करेंगे।

सबसे पहले हम भाव के बारे में जानते हैं। भाव के कारकत्व इस प्रकार हैं -

प्रथम भाव : प्रथम भाव से विचारणीय विषय हैं - जन्म, सिर, शरीर, अंग, आयु, रंग-रूप, कद, जाति आदि।

द्वितीय भाव: दूसरे भाव से विचारणीय विषय हैं - रूपया पैसा, धन, नेत्र, मुख, वाणी, आर्थिक स्थिति, कुटुंब, भोजन, जिह्वा, दांत, मृत्यु, नाक आदि।

तृतीय भाव : तृतीय भाव के अंतर्गत आने वाले विषय हैं - स्वयं से छोटे सहोदर, साहस, डर, कान, शक्ति, मानसिक संतुलन आदि।

चतुर्थ भाव : इस भाव के अंतर्गत प्रमुख विषय - सुख, विद्या, वाहन, हृदय, संपत्ति, गृह, माता, संबंधी गण, पशुधन और इमारतें।

पंचम भाव : पंचम भाव के विचारणीय विषय हैं - संतान, संतान सुख, बुद्धि कुशाग्रता, प्रशंसा योग्य कार्य, दान, मनोरंजन, जुआ आदि।

षष्ठ भाव : इस भाव से विचारणीय विषय हैं - रोग, शारीरिक

षष्ठ भाव : इस भाव से विचारणीय विषय हैं - रोग, शारीरिक वक्रता, शत्रु कष्ट, चिंता, चोट, मुकदमेबाजी, मामा, अवसाद आदि।

सप्तम भाव : विवाह, पल्नी, यौन सुख, यात्रा, मृत्यु, पार्टनर आदि विचारणीय विषय सप्तम भाव से संबंधित हैं।

अष्टम भाव : आयु, दुर्भाग्य, पापकर्म, कर्ज, शत्रुता, अकाल मृत्यु, कठिनाइयां, सन्ताप और पिछले जन्म के कर्मों के मुताबिक सुख व दुख, परलोक गमन आदि विचारणीय विषय आठवें भाव से संबंधित हैं।

नवम भाव : इस भाव से विचारणीय विषय हैं - पिता, भाग्य, गुरु, प्रशंसा, योग्य कार्य, धर्म, दानशीलता, पूर्वजन्मों का संचि पुण्य।

दशम भाव : दशम भाव से विचारणीय विषय हैं - उदरपालन, व्यवसाय, व्यापार, प्रतिष्ठा, श्रेणी, पद, प्रसिद्धि, अधिकार, प्रभुत्व, पैतृक व्यवसाय।

एकादश भाव : इस भाव से विचारणीय विषय हैं - लाभ, ज्येष्ठ भ्राता, मुनाफा, आभूषण, अभिलाषा पूर्ति, धन संपत्ति की प्राप्ति, व्यापार में लाभ आदि।

द्वादश भाव : इस भाव से संबंधित विचारणीय विषय हैं - व्यय, यातना, मोक्ष, दरिद्रता, शत्रुता के कार्य, दान, चोरी से हानि, बंधन, चोरों से संबंध, बारीं आंख, शय्यासुख, पैर आदि।

इस बार इतना ही। ग्रहों का स्वभाव/ कारकत्व व राशियों के स्वभाव की चर्चा हम अगले अंक में करेंगे।



AstroSage

World's No. 1 Astrology Portal & App



प्रेम और रोमांस रिपोर्ट

प्रेम के इम्तिहान में पास या फेल ?

50% OFF [अभी खरीदें >](#)



ज्योतिषी से प्रश्न पूछें



- के.पी. सिस्टम
- लाल किताब
- नाड़ी ज्योतिष
- ताजिक ज्योतिष

अभी पूछें »

स्पेशल कीमत:-

₹299/-

संपर्क करें

+91-7827224358 ,

+91-9354263856

Email:- sales@ojassoft.com

www.astrosage.com